सच्चा दीन

(बच्चों और बच्चियों के लिए दीनी तालीम का महत्वपूर्ण सेट)

भाग-4

(संशोधित संस्करण)

मुहम्मद यूसुफ़ इस्लाही

अनुवाद

नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

पुनरीक्षण

पाठ्य पुस्तक लेखन एवं सम्पादन समिति

कुछ बातें नए संस्करण के बारे में

'सच्चा दीन' इस्लामी-शिक्षाओं (इस्लामियात) पर मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स द्वारा प्रकाशित एक अत्यन्त उपयोगी और लोकप्रिय सेट है, जो कई भाषाओं में छप चुका है। बहुत दिनों से इस बात की ज़रूरत महसूस की जा रही थी कि इसमें छात्र-छात्राओं के लिए ज़रूरी अभ्यासों को भी शामिल किया जाए। आजकल पाठ्य पुस्तकों में हर पाठ के बाद पर्याप्त अभ्यास दिए जाते हैं, ताकि छात्र-छात्राओं को पाठ्य सामग्री अच्छी तरह समझ में आ जाए।

प्रस्तुत संस्करण में ज़रूरत के मुताबिक़ छात्र-छात्राओं और अध्यापकों की आसानी के लिए कठिन शब्दों के अर्थ भी किताब में दे दिए गए हैं।

पुनरीक्षण और अभ्यासों की तैयारी के क्रम में जहाँ ज़रूरत महसूस की गई वहाँ कुछ चीज़ें घटाई-बढ़ाई भी गई हैं, जिससे किताब की उपयोगिता और अधिक बढ़ गई है। पुनरीक्षण और अभ्यासों की तैयारी के काम में प्रिय मित्र श्री सैयद शाह हुसैन नेहरी ने विशेष दिलचस्पी ली। इसके अतिरिक्त विभाग के साथी सर्वश्री अबुल मुजाहिद 'ज़ाहिद', मुहम्मद जावेद इक़बाल, मिर्ज़ा निहाल हबीब बेग, शफ़ीक़ आलम नदवी और कामिल रज़ा ने भी सहयोग किया। भाई मुहम्मद अली इस्लाही साहब और डॉक्टर ताबिश मेहदी साहब के मशविरे भी इसमें शामिल रहे। संशोधित उर्दू संस्करण के अनुसार हिन्दी संस्करण के संशोधन और पुनरीक्षण का काम मुहम्मद इलियास हुसैन ने अंजाम दिया। प्रूफ़ आदि की दृष्टि से सैयद ख़ालिद निज़ामी और मुहम्मद शुऐब साहब ने इसे सजाया-सँवारा। हिन्दी का काम मौलाना नसीम ग़ाज़ी साहब की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इन सज्जनों के अलावा जिन महानुभावों ने भी किताब को इस चरण तक पहुँचाने में सहयोग दिया, हम उन सबके आभारी हैं। अल्लाह तआला सभी सज्जनों को अच्छा बदला प्रदान करे। आमीन!

किताब को बेहतर से बेहतर बनाने के लिए शिक्षकों, अभिभावकों और विद्वानों के बहुमूल्य विचारों और सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

01-01-2010

मुहम्मद अशफ़ाक़ अहमद
निगराँ (निरीक्षक)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

'अल्लाह के नाम से जो बेइन्तिहा मेहरबान और रहम फ़रमानेवाला है।'

भूमिका

मुसलमान बच्चों और बच्चियों के लिए इस्लामियात पर एक ऐसे सेट की ज़रूरत बहुत दिनों से महसूस हो रही थी, जिसकी मदद से आरंभिक कक्षाओं के बच्चों और बच्चियों को थोड़े वक़्त में अक़ीदों, इबादतों, रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सीरत, नबियों और बुज़ुर्गों के हालात, अख़लाक़ व आदतों और सामाजिक आदाब वग़ैरह के सिलसिले में ज़रूरी बातों से वाक़िफ़ कराया जा सके। कोशिश की गई है कि मज़ामीन का भार बढ़ाए बिना सादा और दिलनशीन अन्दाज़ में बच्चों की समझ के मुताबिक़ दीन के तमाम पहलुओं का सादा मगर ठीक-ठीक नक़्शा उनके दिमाग़ में बिठाया जा सके, ताकि शुरू ही से बच्चों में दीन की लगन और उनकी पैरवी का जज़्बा पैदा हो।

हमारे देश में तालीम और दरसियात का जो निज़ाम चल रहा है, उससे एक ही अक़ीदे और धर्म की तालीम दी जा रही है और उसके ज़रीए मुशरिकाना और ग़ैर-इस्लामी नज़रियात को फैलाया जा रहा है। इसी लिए इस्लामियात के इस सेट की और भी ज़्यादा ज़रूरत हो गई है और हक़ीक़त में इसी ज़रूरत को पूरा करने के लिए यह सेट तैयार भी किया गया है। इस सेट की ख़ुसूसियात ये हैं—

1. ज़बान बड़ी ही सादा और सरल है और अन्दाज़े-बयान बच्चों और बच्चियों की समझ के मुताबिक़ और दिल में उतरनेवाला है।
2. बच्चों की नफ़्सियात और उनकी दिलचस्पियों का पूरा-पूरा लिहाज़ रखा गया है।
3. हर किताब में दीन का पूरा ख़ाका पेश करने की कोशिश की गई है और दीन के हर पहलू के बारे में एक क्रम से ज़रूरी मालूमात दी गई हैं।
4. दीन का पूरा ख़ाका देने की कोशिश के बावजूद बहुत कम जगह में सिर्फ़ हल्की-फुल्की मालूमात देने को काफ़ी समझा गया है, ताकि बच्चे आसानी से कम वक़्त में दीन से वाक़िफ़ हो जाएँ।
5. मुख़तलिफ़ फ़िक़्ही मसलकों के आलिमों के मशविरे और नज़रसानी के बाद इसे

प्रकाशित किया जा रहा है, ताकि हर मसलक के बच्चे यक्साँ तौर पर फ़ायदा उठा सकें।

❻ जहाँ तक हो सका है, छोटे-मोटे इख़्तिलाफ़ात को नज़रअन्दाज़ करके बुनियादी और ऐसी बातें पेश की गई हैं, जिनपर सबका इत्तिफ़ाक़ है, ताकि बच्चों के दिमाग़ में उलझन न पैदा हो। हाँ, उस्तादों से दरख़ास्त की गई है कि वे इख़्तिलाफ़ी मसलों में जिनकी तरफ़ इशारे भी कर दिए गए हैं, बच्चों को उनके अपने मसलक के मुताबिक़ जानकारी दें और अमली तरबियत भी।

❼ मुशरिकाना अक़ीदे और ग़ैर-इस्लामी बातें, जो प्रचलित कोर्स की किताबों और स्कूलों की फ़िज़ा का लाज़मी हिस्सा बनती जा रही हैं उनके बारे में हक़ीक़ी बातें, बताने की कोशिश की गई है, ताकि बच्चों का दिमाग़ उनके बुरे असर से महफ़ूज़ रहे।

इस सेट को ज़्यादा फ़ायदेमन्द बनाने के लिए तमाम मशविरे शुक्रिया के साथ क़बूल किए जाएँगे। ख़ुदा करे हमारी यह छोटी-सी कोशिश नई नस्ल के लिए फ़ायदेमन्द साबित हो।

वमा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाह।

(तौफ़ीक़ अल्लाह ही के हाथ में है।)

15 जून 1961

मुहम्मद यूसुफ़ इस्लाही
रामपुर

विषय-सूची

क्या? **कहाँ?**

● कुछ बातें नए संस्करण के बारे में	:	मुहम्मद अशफ़ाक़ अहमद	3
● भूमिका	:	मुहम्मद यूसुफ़ इस्लाही	5
1. अलहम्दु-लिल्लाह (कविता)			11
2. नअ़त (कविता)			12
3. बुनियादी अक़ीदे			13
(1) ईमान बिल्लाह			16
(2) ईमान बिल-मलाइका			20
(3) ईमान बिल-कुतुब			25
(4) ईमान बिर्रिसालत			29
(5) ईमान बिल-आख़िरत			34
4. जुमे की नमाज़			39
5. ईदैन की नमाज़			44
6. जनाज़े की नमाज़			50
7. ज़कात			56
ज़कात किसे कहते हैं?			
ज़कात फ़र्ज़ होने की शर्तें			
निसाब			
जानवरों का निसाब—उश्र			
आधा उश्र			
ज़कात किन लोगों को दी जाए			
8. हज			63
हज कब फ़र्ज़ हुआ			
हज की फ़ज़ीलत			

हज की इस्तिलाहें
हज की क़िस्में
हज का तरीक़ा
9. क़ुरआन मजीद 69
जमा और तरतीब
तिलावत
10. क़ुरआन की फ़रियाद (कविता) 73
11. प्यारे रसूल (सल्ल०) क्या करते और क्या कहते थे? 74
12. प्यारे रसूल (सल्ल०) 79
मदीने को हिजरत
भाईचारा
लड़ाइयाँ
बद्र की लड़ाई
बद्र के बाद
उहुद की लड़ाई
यहूदी क़बीले
अहज़ाब की लड़ाई
ख़ैबर की फ़तह
मक्का की फ़तह
13. उम्मते-मुस्लिमा 87
14. हदीस शरीफ़ 90
सात अहम हदीसें
15. अगर हदीस न होती तो आज क्या करते? (कविता) 93
16. नबियों के हालात 94
हज़रत सुलैमान (अलैहि०)
हज़रत शुऐब (अलैहि०)
हज़रत यह्या (अलैहि०)

17. ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन 105
(1) हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰)
(2) हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰)
(3) हज़रत उस्मान ग़नी (रज़ि॰)
(4) हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ि॰)
18. चार इमाम 119
(1) इमाम अबू-हनीफ़ा (रह॰)
(2) इमाम मालिक (रह॰)
(3) इमाम शाफ़ई (रह॰)
(4) इमाम अहमद-बिन-हम्बल (रह॰)
19. अह्ले-हदीस 127
20. कुछ मशहूर मुहद्दिसीन 129
(1) इमाम बुख़ारी (रह॰)
(2) इमाम मुस्लिम (रह॰)
(3) अबू-दाऊद (रह॰)
(4) इमाम तिरमिज़ी (रह॰)
(5) इमाम नसई (रह॰)
(6) इमाम इब्ने-माजा (रह॰)
21. अल्लाह के प्यारे बन्दे 136
22. अच्छे अख़लाक़ 140
(1) सच्चाई
(2) शर्म व हया
(3) मुहब्बत और हमदर्दी
23. दुआ (कविता) 144

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

'अल्लाह के नाम से जो बेइन्तिहा मेहरबान और रहम फ़रमानेवाला है।'

अल्हम्दु-लिल्लाह

हमें 'इन्साँ' बनाया है ख़ुदा ने, हमें जीना सिखाया है ख़ुदा ने।
कहीं पानी, कहीं ग़ल्ले, कहीं फल, ज़मीं पर हुन लुटाया है ख़ुदा ने।
सुलाया प्यार से जब थक गए हम, हवा से थपथपाया है ख़ुदा ने।

हमारी नींद बिलकुल मौत-सी है,
सवेरे फिर जिलाया है ख़ुदा ने।

मुहब्बत से भरा माँ-बाप का दिल, हमारा घर बसाया है ख़ुदा ने।
महकते फूल, सूरज, चाँद, तारे, ज़माने को सजाया है ख़ुदा ने।
अगर फ़िरऔन का लश्कर डुबोया, तो मूसा को बचाया है ख़ुदा ने।

दिए हैं आदमी को अक़्ल के पर,
हवाओं में उड़ाया है ख़ुदा ने।

हैं उसके बस में तूफ़ानी समन्दर, जहाज़ों को चलाया है ख़ुदा ने।
मुहम्मद-सा नबी भेजा ज़मीं पर, हमें उनका बनाया है ख़ुदा ने।
चलेगा हम पे क्या शैताँ का जादू, हमें क़ुरआँ सिखाया है ख़ुदा ने।

वो राहें, जिन पे है रहमत का साया,
हमें उनपर चलाया है ख़ुदा ने।
बिना माँगे ये सब कुछ हमको देकर,
यक़ीनन आज़माया है ख़ुदा ने।

● **शम्स नवेद उस्मानी**

शब्दार्थ और टिप्पणी

हुन = धन-दौलत, शैताँ = शैतान, क़ुरआँ = क़ुरआन, रहमत = दया, कृपा

नअ़त

कुछ कुफ़्र ने फ़ितने फैलाए, कुछ जुल्म ने शोले भड़काए,
सीनों में अदावत जाग उठी, इनसान से इनसाँ टकराए।

पामाल किया, बरबाद किया, कमज़ोर को ताक़तवालों ने,
जब ज़ुल्मो-सितम हद से गुज़रे, तशरीफ़ मुहम्मद ले आए।

तहज़ीब की शमएँ-रौशन कीं, ऊँटों के चरानेवालों में,
काँटों को गुलों की क़िस्मत दी, ज़र्रों के मुक़द्दर चमकाए।

अल्लाह से रिश्ते को जोड़ा, बातिल के तिलिस्मों को तोड़ा,
खुद वक़्त के धारे को मोड़ा, तूफ़ाँ में सफ़ीने तैराए।

मज़लूमों की फ़रियाद सुनी, मजबूरों की ग़मख़ारी की,
ज़ख़्मों पे खुनुक मरहम रक्खे, बेचैन दिलों के काम आए।

औरत को हया की चादर दी, ग़ैरत का ग़ाज़ा भी बख़्शा,
शीशों में नज़ाकत पैदा की, किरदार के जौहर चमकाए।

तौहीद का धारा रुक न सका, इस्लाम का परचम झुक न सका,
कुफ़्फ़ार बहुत कुछ झुँझलाए, शैताँ ने हज़ारों बल खाए।

ऐ नामें-मुहम्मद सल्लि अला, 'माहिर' के लिए तू सब कुछ है,
होटों पे तबस्सुम भी आया, आँखों में भी आसूँ भर आए।

● **माहिरुल क़ादरी**

शब्दार्थ और टिप्पणी

अदावत = दुश्मनी, शत्रुता, पामाल = पैरों तले रौंदा हुआ, तिलिस्मों = जादू, माया,
सफ़ीने = कश्तियाँ, नावें, खुनुक = ठंडा, शीतल, परचम = झंडा

3

बुनियादी अक़ीदे

अल्लाह का शुक्र है कि हम मोमिन हैं। ईमान बहुत ही बड़ी दौलत है। ईमान देकर अल्लाह ने हमें दोनों जहान की इज़्ज़त बख़्शी है। यह उसका बहुत बड़ा एहसान है, वरना हम भी गुमराहों की तरह भटकते फिरते और अपना दीन और दुनिया दोनों तबाह कर लेते।

'मोमिन' का लफ़्ज़ कितना प्यारा है। मोमिन का अर्थ है ईमानवाला। ईमान सच्चे और पक्के यक़ीन को कहते हैं। जिसके पास ईमान है उसके पास सब कुछ है और जिसके पास ईमान नहीं उसके पास कुछ नहीं। ईमानवाले की हर एक इज़्ज़त करता है। हर एक के दिल में उसके लिए जगह होती है। अल्लाह को भी वही प्यारा है, जिसके अन्दर ईमान है। बेईमान शख़्स दुनिया में भी हक़ीर है और अल्लाह की नज़र में भी रुसवा और ज़लील है।

मुसलमान होने के लिए पाँच बातों पर ईमान लाना ज़रूरी है। इनपर ईमान लाए बिना न कोई इस्लाम की राह पर चल सकता है और न मुसलमान हो सकता है। हर मुसलमान को चाहिए कि वह इन बातों को सच्चे दिल से माने, इनपर यक़ीन रखे और ज़बान से इनका इक़रार करे। इनमें से किसी एक भी बात का इनकार करनेवाला मुसलमान नहीं हो सकता। अल्लाह का शुक्र है, मुझे अब ये पाँचों बातें ख़ूब याद हो गई हैं और कोशिश करता हूँ कि उन बातों पर कम से कम ऐसा यक़ीन हो जाए, जैसा इस बात का यक़ीन है कि आग में हाथ डाल दिया जाए तो जल जाएगा। उन पाँचों बातों पर पुख़्ता यक़ीन को 'अक़ीदा' कहते हैं। पाँच अक़ीदे ये हैं :

① **ईमान बिल्लाह :** यानी इस बात पर ईमान कि अल्लाह एक है और उस जैसा कोई दूसरा नहीं।

② **ईमान बिल-मलाइका :** यानी फ़रिश्तों पर ईमान कि वे अल्लाह की ऐसी फ़रमाँबरदार मख़लूक़ हैं जो नाफ़रमानी कर ही नहीं सकतीं।

③ **ईमान बिल-कुतुब :** यानी आसमानी किताबों पर ईमान। मुख़तलिफ़ ज़मानों में अल्लाह

तआला ने अपने रसूलों पर किताबें उतारीं जिनमें सच्ची तालीम थी, अल्लाह के अहकाम थे और उसकी मर्ज़ी का सही-सही इल्म था।

④ **ईमान बिर्रिसालत :** यानी रसूलों पर ईमान कि हर ज़माने और हर क़ौम में अल्लाह तआला ने अपने नेक और सच्चे बन्दों को अपना पैग़ाम देकर भेजा। वे ख़ुद भी अल्लाह की मर्ज़ी पर चले और दूसरों को भी चलाया।

⑤ **ईमान बिल-आख़िरत :** यानी इस बात पर ईमान कि मरने के बाद एक दिन अल्लाह तआला सबको ज़िन्दा करेगा, अपने पास बुलाएगा, पूरी ज़िन्दगी का हिसाब लेगा और नेकी-बदी की जाँच करेगा। नेक लोगों को जन्नत देगा और बुरे लोगों को जहन्नम में डाल देगा।

ये पाँचों बातें मैंने ख़ूब समझ कर याद कर ली हैं। अगले कुछ अध्यायों में मैं इनकी कुछ तफ़्सील सुनाऊँगा :

शब्दार्थ और टिप्पणी

मोमिन	=	ईमानवाला, आस्थावान
दोनों जहान	=	दुनिया और आख़िरत, लोक-परलोक
हक़ीर	=	तुच्छ
ज़लील	=	रुसवा, अपमानित
अक़ीदा	=	धारणा, पुख़्ता और पक्का यक़ीन, विश्वास
मख़लूक़	=	अल्लाह द्वारा बनाई गई चीज़ें, सृष्टि
मुख़्तलिफ़	=	विभिन्न, अलग-अलग
अहकाम	=	आदेश, हुक्म का बहुवचन

अभ्यास

(क) उत्तर दीजिए :

1. वह कौन-सी दौलत है जिसको पाने के बाद दोनों जहानों में इज़्ज़त मिलती है?
2. कौन दुनिया में भी हक़ीर और अल्लाह की नज़र में भी ज़लील है?
3. मुसलमान होने के लिए कितनी बातों पर ईमान लाना ज़रूरी है?
4. कौन अल्लाह का प्यारा बन्दा होता है?
5. ईमान की तारीफ़ (परिभाषा) क्या है?
6. ईमान बिल-आख़िरत से आप क्या समझते हैं?

(ख) उचित जोड़े लगाइए :

अ	ब
ईमान बिल-मलाइका	आख़िरत पर ईमान
ईमान बिल-कुतुब	रसूलों पर ईमान
ईमान बिर्रिसालत	ईमानवाला
मोमिन	किताबों पर ईमान
ईमान बिल-आख़िरत	फ़रिश्तों पर ईमान

1. ईमान बिल्लाह

(अल्लाह पर ईमान)

यह लंबी-चौड़ी ज़मीन जिसपर हम रहते-बसते हैं; यह नीला आसमान जिसमें हज़ारों-लाखों तारे जगमगाते हैं; यह रौशन सूरज, यह चमकता चाँद, ये ख़ुशनुमा बेल-बूटे, ये हरी-भरी खेतियाँ, इन सबको अल्लाह तआला ने पैदा किया है। अल्लाह तआला ने सब कुछ अपने हुक्म से पैदा किया है। वही पूरी दुनिया का सच्चा बादशाह है। राजा, प्रजा सब उसके ग़ुलाम हैं। अमीर-ग़रीब, छोटे-बड़े, सब उसके मुहताज हैं। वह सबका मालिक है, सबका हाकिम है और सब उसके हुक्म के बन्दे और ग़ुलाम हैं। पूरी दुनिया पर उसी की हुकूमत है। उसकी ख़ुदाई में कोई दूसरा शरीक नहीं। ज़मीन और आसमान में उसी का हुक्म चलता है। सूरज उसी के हुक्म से उगता और डूबता है। चाँद उसी के हुक्म से निकलता है। जंगल, पहाड़, दरिया सब उसी ने बनाए हैं। बादल उसी के हुक्म से उड़ते हैं और बरसते हैं।

अल्लाह एक है। उस जैसा कोई दूसरा नहीं। वह अकेला है, सब उसके मुहताज हैं, वह किसी का मुहताज नहीं। न उसके माँ-बाप हैं, न बेटा-बेटी और न बीवी, न उसका कोई ख़ानदान है और न बिरादरी। उसके बराबर का कोई नहीं। वह बेमिसाल है, आप से आप मौजूद है। उसको किसी ने पैदा नहीं किया। वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा। मौत और ज़िन्दगी उसी के इख़्तियार में है। वही मारता है, वही जिलाता है। वह ज़िन्दा रखे तो कोई मार नहीं सकता। वह मारना चाहे तो कोई ज़िन्दगी नहीं दे सकता। कोई आदमी जुर्म करे तो उसकी पकड़ से बच नहीं सकता और न कोई बचा सकता है। सारी मख़लूक़—जिन्न, फ़रिश्ते, इनसान, नबी, वली सब उसकी प्रजा और रैयत हैं, उसके बन्दे और ग़ुलाम हैं। उसकी बादशाहत में किसी को कोई दख़ल नहीं, सब बे-इख़्तियार हैं। वह जो चाहता है करता है, कोई उसको टोकनेवाला नहीं। वह न खाता है, न पीता है। न ऊँघता है, न सोता है और न थकता है। वह हर ढकी-छुपी चीज़ को जानता है। कोई चीज़ आसमान में हो या ज़मीन में, उससे छिपी नहीं। हर छोटी-बड़ी बात का उसको पूरा-पूरा इल्म है। ज़मीन और

आसमान में जो कुछ है, उसी का है। कोई चीज़ उसके क़ब्ज़े से बाहर नहीं। राहत और आराम भी वही देता है और दुख और दर्द भी उसी की तरफ़ से है। इज़्ज़त, ज़िल्लत, नफ़ा-नुक़सान सब उसी के हाथ में है। वह हर ऐब और बुराई से पाक है। उसकी ज़ात और सिफ़ात में कोई उसका शरीक नहीं। उसके कामों में उसका कोई साझी नहीं। वह अपने किसी काम में किसी का मुहताज नहीं। ग़रज़, जितनी अच्छाइयाँ हैं वे सब उसमें मौजूद हैं।

अल्लाह तआला पर ईमान लाकर हम हर एक की बन्दगी से आज़ाद हो जाते हैं। किसी बड़ी-से-बड़ी ताक़त के सामने हम सिर नहीं झुकाते। हम सिर्फ़ उसी का शुक्र अदा करते हैं। उसी की इबादत और बन्दगी करते हैं। उसी से दुआएँ माँगते हैं। आड़े वक़्त में उसी से फ़रियाद करते हैं। दुख और दर्द में उसी से मदद माँगते हैं। हमारा यक़ीन है कि उसके सिवा कोई बन्दगी के लायक़ नहीं। हम किसी से नहीं डरते। डरने के लायक़ सिर्फ़ उसी की ज़ात है। उसके सिवा किसी के पास कोई ताक़त नहीं। वह जिसको बचाना चाहे, सारी दुनिया मिलकर भी उसको कोई तकलीफ़ नहीं दे सकती और वह जिसको सज़ा देना चाहे, सारी दुनिया मिलकर भी उसे नहीं बचा सकती। हम उसी से मुहब्बत करते हैं, उसी से दिल लगाते हैं, उसी के हुक्मों पर चलते हैं, उसकी नाफ़रमानी से बचते हैं। जिन बातों से उसने रोका है, उनके क़रीब भी नहीं फटकते और जिन बातों का उसने हुक्म दिया है, उनको जी-जान से करते हैं। उसके सिवा किसी से मुरादें नहीं माँगते। ग़रज़ उसी से डरते हैं। हज़रत उमर (रज़ि॰) ने फ़रमाया, "जो अल्लाह से डरता है, हर चीज़ उससे डरती है।"

हम हमेशा सच बोलते हैं। हमें यक़ीन है कि हम आहिस्ता बोलें या ज़ोर से, अल्लाह तआला सब सुनता है। हम ज़बान से कहें या दिल में सोचें, अल्लाह तआला सब जानता है। अंधेरे-उजाले की कोई बात उससे छिपी हुई नहीं। हमें ख़ूब मालूम है कि हम कोई चीज़ अल्लाह तआला से छिपा नहीं सकते। हमें यह भी मालूम है कि हर ग़लत बात पर अल्लाह तआला सज़ा दे सकता है। उसकी सज़ा से कोई बचानेवाला नहीं। फिर भला हम कैसे झूठ बोल सकते हैं!

हम हर बुराई से भागते हैं। हम अल्लाह की पकड़ से डरते हैं। हम भलाई को अपनाते हैं। हमें ख़ूब मालूम है कि ऐसे ही लोगों को अल्लाह तआला पसन्द करता है, जो भलाइयों पर चलें, अच्छे काम करें, उसके बन्दों के साथ नेक सुलूक करें और सबका भला चाहें। हमें यक़ीन है कि अगर हम नेक काम करेंगे तो अल्लाह तआला हमसे ख़ुश होगा और हमें जन्नत देगा।

हम बेशर्मी और बेहयाई से बचते हैं। हम जानते हैं कि अल्लाह तआ़ला ऐसी बातों से नाराज़ होता है। अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाकर हमने उसके हुक्मों पर चलने का अहद किया है, इसलिए हम गुनाह के क़रीब नहीं फटकते और बुरे ख़याल दिल में नहीं लाते। शरीफ़ और भला आदमी तो बन्दों से अहद करके नहीं तोड़ता, फिर हम अल्लाह से अहद करके कैसे तोड़ सकते हैं। हम बेहयाई के कामों से सख़्त नफ़रत करते हैं। दूसरों की इज़्ज़त व आबरू को भी हम वैसा ही समझते हैं, जैसी अपनी इज़्ज़त व आबरू को।

हम हर एक का हक़ अदा करते हैं। माँ-बाप का हक़, बहन-भाइयों का हक़, रिश्तेदारों का हक़। हम हर एक के साथ नेक सुलूक करते हैं। कभी किसी का हक़ नहीं मारते, जिसके साथ जो कुछ भलाई कर सकते हैं, करते हैं। यतीमों, बेवाओं और ग़रीब-दुखियों का ख़याल रखते हैं। उनको आराम पहुँचाकर अल्लाह तआ़ला को खुश करते हैं। हमें मालूम है कि अल्लाह तआ़ला इनसाफ़ को पसन्द करता है। वह किसी पर ज़ुल्म नहीं करता। हम भी किसी को दुख नहीं पहुँचाते, किसी को नहीं सताते और हक़ और इनसाफ़ के मामले में हम सबको एक नज़र से देखते हैं। जब हम पसन्द नहीं करते कि दूसरे हमारे साथ बुरा सुलूक करें, तो फिर हम दूसरों के साथ बुरा सुलूक क्यों करें। अगर हम ऐसा करेंगे तो अल्लाह तआ़ला इनसाफ़ के दिन हमें सख़्त सज़ा देगा।

शब्दार्थ और टिप्पणी

ज़िल्लत	=	अपमान
ज़ात	=	व्यक्तित्व
सिफ़ात	=	गुण, विशेषताएँ
आड़े वक़्त	=	कठिन समय, मुसीबत के समय
अहद	=	वचन, प्रतिज्ञा, वादा
यतीम	=	अनाथ, वह बच्चा जिसका बाप मर गया हो
बेवा	=	विधवा

अभ्यास

(क) उत्तर दीजिए :

1. अल्लाह पर ईमान लाने का क्या मतलब है?
2. अल्लाह पर ईमान लाकर हम किस तरह हर एक की बन्दगी से आज़ाद हो जाते हैं?
3. यह किसने कहा, "जो अल्लाह से डरता है, हर चीज़ उससे डरती है।"
4. इस पाठ में किन-किन लोगों के हुक़ूक़ अदा करने का तज़किरा किया गया है?
5. "पूरी दुनिया पर अल्लाह की हुकूमत है।" इस बात को स्पष्ट कीजिए।
6. "अल्लाह अकेला है।" इस बात से आप क्या समझते हैं?
7. अल्लाह पर ईमान लाने के बाद हमारे अन्दर क्या तब्दीलियाँ पैदा होती हैं?

(ख) ख़ाली जगहों को भरें :

1. चाँद उसी के..................से निकलता है।
2. मौत और ज़िन्दगी उसके...............में है।
3. हम अल्लाह की....................से डरते हैं।
4. अल्लाह इनसाफ़ को................करता है।

(ग) इस पाठ में अल्लाह की बहुत-सी सिफ़ात (गुण) बयान की गई हैं। कम-से-कम दस सिफ़ात लिखिए।

2. ईमान बिल-मलाइका

(फ़रिश्तों पर ईमान)

इस्लाम का दूसरा अक़ीदा ईमान बिल-मलाइका है, जिसका अर्थ फ़रिश्तों पर ईमान लाना है। फ़रिश्ते कौन होते हैं और क्या करते हैं? इन बातों के बारे में हम बस इतना ही जानते हैं जितना अल्लाह की किताबों में लिखा है और अल्लाह के रसूलों ने बताया है। कुछ लोगों ने अपनी तरफ़ से फ़रिश्तों के बारे में तरह-तरह की बातें गढ़ ली हैं। कोई उन्हें देवी-देवता कहता है, कोई उन्हें अल्लाह की औलाद समझता है, कोई समझता है कि पानी बरसाना, हवा चलाना, मौत और ज़िन्दगी देना उनके इख़्तियार में है, इसलिए उनकी पूजा करते हैं और उन्हें खुश करने के लिए नज़्र और नियाज़ देते हैं। ग़रज़ रसूलों की तालीम से हटकर लोगों ने अजीब-अजीब बातें गढ़ ली हैं। ये सब बातें ग़लत हैं।

इस दुनिया का पैदा करनेवाला सिर्फ़ अल्लाह है, वही हाकिम है। उसकी खुदाई में कोई दूसरा शरीक नहीं। ज़मीन और आसमान में सिर्फ़ उसी की हुकूमत क़ायम है। हर जगह उसी का हुक्म चलता है। ज़मीन और आसमान का इन्तिज़ाम चलाने के लिए और हर काम को वक़्त पर क़ायदे से अंजाम देने के लिए अल्लाह ने बहुत-से फ़रिश्ते पैदा किए हैं। फ़रिश्ते अल्लाह की मख़लूक़ हैं। वे बहुत ही फ़रमाँबरदार पैदा किए गए हैं। वे गुनाह कर ही नहीं सकते। दिन-रात अल्लाह के हुक्मों को बजा लाने में लगे रहते हैं। कभी नाफ़रमानी नहीं करते, बस अल्लाह के हुक्म के इन्तिज़ार में रहते हैं। जब जो हुक्म मिल गया फ़ौरन बजा लाते हैं। जिस काम पर उन्हें लगा दिया गया है, बस उसी के करने में लगे रहते हैं। जिस काम की ताक़त अल्लाह ने उन्हें दी है, बस वही काम कर सकते हैं। इसके सिवा अपने इख़्तियार से वे कुछ नहीं कर सकते। अल्लाह के हुक्म के बग़ैर एक पत्ता भी नहीं हिला सकते। अल्लाह तआला की अपनी हिकमत और मसलिहत है कि वह ज़मीन और आसमान का इन्तिज़ाम उनके ज़रीए से कराता है, वरना किसी काम के करते अल्लाह को क्या देर लगती है। इधर कहा और उधर हो गया। सब कुछ उसी के हुक्म से होता है। वह फ़रिश्तों से काम लेने पर मजबूर नहीं है। उसकी मसलिहत हम नहीं समझ सकते। वह बग़ैर बादलों

के पानी बरसा सकता है, बग़ैर पानी बरसाए पौधे उगा सकता है, लेकिन यह उसकी मसलिहत है कि दुनिया में हर काम का कोई न कोई सबब मुक़र्रर कर रखा है।

यह समझना कि फ़रिश्तों के पास अपनी कोई ताक़त है, अपना कोई इख़्तियार है, या वे जो चाहें कर सकते हैं, बिलकुल ग़लत है। वे तो बिलकुल मजबूर, बेबस और बे-इख़्तियार हैं। सब कुछ अल्लाह के इख़्तियार में है। वह जो चाहता है करता है। फ़रिश्तों की क्या मजाल कि वे अल्लाह के काम में दख़ल दें, या उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कुछ करें।

फ़रिश्ते नूर से पैदा किए गए हैं। वे आमतौर पर हमें नज़र नहीं आते। जिस तरह हमारी अपनी जान निगाहों से ओझल है, उसी तरह फ़रिश्ते भी हमारी निगाहों से ओझल हैं। अल्लाह के रसूलों ने बताया है कि फ़रिश्ते होते हैं, इसलिए हम उनके होने पर ईमान लाते हैं। फ़रिश्ते न हमारी तरह मर्द-औरत हैं, न खाते-पीते हैं और न ऊँघते-सोते हैं। बस अल्लाह का ज़िक्र उनका भोजन है, वे दिन-रात अल्लाह तआ़ला की तस्बीह करते रहते हैं और पूरी फ़रमाँबरदारी के साथ अपने कामों को अंजाम देते रहते हैं। मुख़्तसर तौर पर फ़रिश्तों के बारे में नीचे लिखी बातों को ज़रूर याद रखना चाहिए।

फ़रिश्तों के बारे में ज़रूरी बातें

❶ फ़रिश्तों को अल्लाह ने पैदा किया है, इसलिए वे अल्लाह की मख़्लूक़ हैं। वे न तो अल्लाह की औलाद हैं और न किसी तरह उसकी ख़ुदाई में शरीक हैं। अल्लाह ही के क़ब्ज़े में उनकी ज़िन्दगी भी है और मौत भी, उनमें ख़ुदाई की ताक़त नहीं। बस वे एक फ़रमाँबरदार मख़लूक़ हैं। हर वक़्त अल्लाह की इबादत और बन्दगी करना, उसकी हम्द और तस्बीह करना और उसके हुक्मों को बजा लाना ही उनका काम है।

❷ फ़रिश्ते बहुत ही फ़रमाँबरदार पैदा किए गए हैं, कभी नाफ़रमानी नहीं कर सकते। अल्लाह के हुक्म के इन्तिज़ार में रहते हैं, बस जहाँ हुक्म मिला उसको पूरा करने के लिए दौड़ पड़े। क्या मजाल कि ज़रा चूक जाएँ। अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कुछ भी नहीं करते और न ही कभी अल्लाह के हुक्म को टालते हैं।

❸ फ़रिश्ते बेबस और बे-इख़्तियार हैं, जो कुछ करते हैं अल्लाह के हुक्म से करते हैं। बस जिस काम पर अल्लाह ने उन्हें लगा दिया है और जिस काम की अल्लाह ने उन्हें ताक़त दी है, वही कर सकते हैं। उनका अपना न कोई इख़्तियार है और न ताक़त। हज़रत इज़राईल (अलैहि०) जानदारों की जान निकालने पर लगाए गए हैं, लेकिन किसी

इनसान की जान तो क्या, अपने इख़्तियार से एक मच्छर की जान भी नहीं ले सकते। हर जानदार की मौत का वक़्त तय है। जब अल्लाह का हुक्म मिलता है, हज़रत इज़राईल (अलैहि०) जान निकालने के लिए दौड़ पड़ते हैं। क्या मजाल कि एक सेकंड की देर कर दें या एक सेकंड पहले जान निकाल लें।

❹ फ़रिश्ते न मर्द हैं, न औरत। न खाते-पीते हैं और न ही सोते-जागते हैं। बस अल्लाह का ज़िक्र उनका भोजन है। वे नूर से पैदा किए गए हैं और हमारी निगाहों से ओझल हैं। अल्लाह के रसूलों ने हमें उनके बारे में बताया है, इसलिए हम उनपर ईमान लाते हैं।

❺ फ़रिश्ते अमानतदार हैं। हमेशा अल्लाह की वह्य और पैग़ाम अल्लाह के रसूलों के पास लाते रहे हैं। प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास भी अल्लाह की वह्य हज़रत जिबरील (अलैहि०) लाए। उन्होंने ठीक-ठीक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाया। क़ुरआन शरीफ़ ठीक-ठीक प्यारे नबी (सल्ल०) को लाकर सुनाया। जो कुछ अल्लाह ने कहा, वह सही-सही प्यारे नबी (सल्ल०) को आकर बता दिया।

❻ दुनिया का इन्तिज़ाम चलाने के लिए अल्लाह ने फ़रिश्तों को मुख़्तलिफ़ कामों पर लगा दिया है और वे पूरी फ़रमाँबरदारी से अपने-अपने काम अंजाम दे रहे हैं। कभी काम चोरी नहीं करते।

फ़रिश्तों के काम

- **रसूलों के पास अल्लाह का पैग़ाम लाना :** इस काम पर हज़रत जिबरील (अलैहि०) मुक़र्रर थे। मगर यह काम अब ख़त्म हो चुका है, क्योंकि प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के बाद अब कोई नबी आनेवाला नहीं।
- **जानदारों की जान निकालना :** इस काम पर हज़रत इज़राईल (अलैहि०) मुक़र्रर हैं।
- **जानदारों को रोज़ी पहुँचाना :** इस काम पर हज़रत मीकाईल (अलैहि०) लगाए गए हैं।
- **सूर फूँकना :** इस काम पर हज़रत इसराफ़ील (अलैहि०) मुक़र्रर हैं। बस वे अल्लाह के हुक्म का इन्तिज़ार कर रहे हैं। सूर मुँह में लिए कान लगाए खड़े हैं। हुक्म मिलते ही सूर फूँकेंगे। सूर की आवाज़ बहुत ही तेज़ और डरावनी होगी। पहली बार में सारे जानदार, इनसान, जिन्न, जानवर और परिन्दे ग़रज़ सारा जहान मर-मिट कर ख़त्म हो

जाएगा। दूसरी बार सूर फूँकने से सारे इनसान जी उठेंगे और अपना-अपना आमालनामा लिए हश्र के मैदान की तरफ़ दौड़ेंगे।

- **क़ब्र में मुर्दों से सवाल-जवाब करना :** इस काम पर दो फ़रिश्ते लगाए गए हैं। एक का नाम 'मुनकर' है और दूसरे का नाम 'नकीर'।
- **इनसानों की हिफ़ाज़त करना :** इस काम को अंजाम देनेवाले फ़रिश्तों का नाम हफ़ज़ा है यानी हिफ़ाज़त करनेवाले।
- **इनसानों के कामों को लिखना :** यानी इनसान इस दुनिया में जो कुछ करता है, फ़रिश्ते उसे लिख लेते हैं। हममें से हर एक के साथ अल्लाह तआ़ला ने दो फ़रिश्ते लगा रखे हैं। हम जहाँ कहीं भी हों और जो कुछ भी कर रहे हों, फ़रिश्ते उसे लिखते रहते हैं और क़ियामत के दिन हमारा पूरा 'कच्चा-चिट्ठा' अल्लाह के सामने पेश कर देंगे। इन फ़रिश्तों को 'किरामन-कातिबीन' कहते हैं।
- **जन्नत की रखवाली और इन्तिज़ाम करना :** इस काम पर नियुक्त फ़रिश्ते का नाम रिज़वान है।
- **जहन्नम का इन्तिज़ाम करना :** इस फ़रिश्ते का नाम मालिक हैं।
- **नेक मजलिसों और सभाओं में शरीक होना :** फ़रिश्ते खुद भी अल्लाह के ज़िक्र में लगे रहते हैं और जहाँ कहीं दूसरे ज़िक्र करते हैं, वहाँ भी शरीक होते हैं।

इनके अलावा बेशुमार फ़रिश्ते अल्लाह की इबादत और ज़िक्र व तस्बीह में लगे रहते हैं, और न मालूम कितने फ़रिश्ते हैं जो हर वक़्त ईमानवालों की बख़्शिश के लिए अल्लाह तआ़ला से दुआ करते रहते हैं।

शब्दार्थ और टिप्पणी

फ़रमाँबरदार	=	आज्ञाकारी
बजा लाना	=	पूरा करना
नाफ़रमान	=	अवज्ञाकारी
तस्बीह करना	=	गुणगान करना, महिमागान करना
वह्य	=	अल्लाह की तरफ़ से आनेवाला पैग़ाम
मुक़र्रर	=	नियुक्त
आमालनामा	=	कर्मपत्र

अभ्यास

(क) उत्तर दीजिए :

1. अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को क्यों पैदा किया है?
2. फ़रिश्तों के बारे में आप क्या जानते हैं?
3. फ़रिश्तों के बारे में लोगों ने क्या-क्या ग़लत ख़यालात क़ायम कर रखे हैं?
4. चार मशहूर फ़रिश्तों के नाम बताइए?

(ख) ख़ाली जगहों को भरिए :

1. फ़रिश्ते.......................से पैदा किए गए हैं।
2. फ़रिश्ते अल्लाह की....................हैं।
3. फ़रिश्तों की क्या.................कि वे अल्लाह के काम में दख़ल दें।
4. फ़रिश्ते बहुत ही....................पैदा किए गए हैं।

(ग) नीचे लिखे फ़रिश्तों के क्या काम हैं :

1. हज़रत जिबरील (अलैहि॰)
2. मुनकर-नकीर
3. हज़रत इसराफ़ील (अलैहि॰)
4. किरामन-कातिबीन

(घ) कॉलम 'अ' को कॉलम 'ब' से मिलाइए :

	(अ)	(ब)
1.	जानदारों की जान निकालने के लिए	किरामन-कातिबीन
2.	जानदारों को रोज़ी पहुँचाने के लिए	मालिक
3.	जन्नत की रखवाली करने के लिए	इज़राईल (अलैहि॰)
4.	जहन्नम का इन्तिज़ाम करने के लिए	मीकाईल (अलैहि॰)
5.	इनसानों के कामों को लिखने के लिए	रिज़वान (अलैहि॰)

3. ईमान बिल-कुतुब

(किताबों पर ईमान)

इस्लाम और मुसलमान का तीसरा अक़ीदा ईमान बिल-कुतुब है, जिसका अर्थ है अल्लाह की किताबों पर ईमान लाना। कौन है जिसने किताब न देखी हो। हमारे हाथ में किताब ही तो है। किताबें दो क़िस्म की होती हैं, एक वे जो इनसानों ने सोच-सोचकर लिखी हैं और दूसरी वे जो अल्लाह ने अपने रसूलों पर उतारी हैं। रसूलों पर उतारी हुई किताबों को आसमानी किताबें कहते हैं। मुसलमान होने के लिए आसमानी किताबों पर भी ईमान लाना ज़रूरी है।

अल्लाह तआ़ला हम पर बहुत ही मेहरबान है, हमे पैदा किया, खाने-पीने के लिए तरह-तरह की चीज़ें दीं, ज़रूरत का सब सामान दिया और सबसे बड़ी बात यह है कि रहने-सहने का ठीक-ठीक ढंग बताया। ज़िन्दगी गुज़ारने का सही तरीक़ा सिखाया। अगर हम रहने-सहने का ठीक-ठीक ढंग न जानते तो दुनिया में भी गुमराह होते, भटकते फिरते और आख़िरत में भी अल्लाह का अज़ाब भुगतना पड़ता। अल्लाह तआ़ला की हम पर बहुत बड़ी मेहरबानी है कि उसने हमारी हिदायत के लिए किताबें उतारीं। किताबों में अच्छे कामों की तफ़सील बताई। बुरी बातों से बचने का हुक्म दिया, ज़िन्दगी गुज़ारने की सीधी-सच्ची राह बताई, अपने पसन्दीदा काम बताए। अपनी मर्ज़ी का सही इल्म दिया। दीन की ज़रूरी बातें बताईं, जन्नत-जहन्नम के बारे में बताया। नेक कामों पर उकसाया। बुरे कामों का अंजाम खोल-खोल कर बयान किया। अच्छे और सही अक़ीदे की तालीम दी, इबादत करने के तरीक़े सिखाए। माँ-बाप, बहन-भाइयों के हुक़ूक़ बताए। ग़रीबों, मुहताजों और यतीमों के साथ अच्छे सुलूक का ढंग बताया। ग़रज़ वे तमाम बातें अल्लाह तआ़ला ने अपनी किताबों में बताईं, जिनसे वह ख़ुश होकर आख़िरत में इनाम और नेमतों से भरी जन्नत देगा।

अल्लाह तआ़ला ने सीधी राह बताने के लिए बहुत-सी छोटी-बड़ी किताबें उतारीं,

उनकी ठीक-ठीक गिनती अल्लाह ही को मालूम है। हमें तो बस उतना ही मालूम है जितना क़ुरआन मजीद में लिखा है या प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने बताया है। आसमानी किताबों में सिर्फ़ क़ुरआन मजीद ही आज अपनी असली शक्ल में मौजूद है। यह सबसे आख़िरी आसमानी किताब है। इसके बाद कोई किताब न आएगी। क़ुरआन मजीद दुनिया के तमाम इनसानों की हिदायत के लिए है।

क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने चार आसमानी किताबों की ख़बर दी है। 'तौरात' जो हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) पर नाज़िल हुई, 'ज़बूर' जो हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) पर नाज़िल हुई, 'इंजील' जो हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) पर नाज़िल हुई और क़ुरआन मजीद जो हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर नाज़िल हुआ। इनके अलावा भी कुछ छोटी-छोटी किताबें कुछ दूसरे पैग़म्बरों पर नाज़िल हुई थीं। इन्हें 'सुहुफ़' कहते हैं। क़ुरआन शरीफ़ के अलावा तमाम पिछली किताबें अब अपनी असली हालत में नहीं हैं। लोगों ने अपनी लापरवाही से और कुछ लोगों ने शरारत से उनमें तरह-तरह की बातें मिला लीं। झूठी-सच्ची बातें मिलाकर अल्लाह के दीन को बिगाड़ लिया। अपने मतलब की बातें ज़ाहिर कीं और अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ बातें छिपा लीं। ग़रज़ पिछली किताबें अब उस हालत में नहीं हैं जिस हालत में अल्लाह ने नाज़िल की थीं।

मुसलमान इन सारी आसमानी किताबों पर ईमान लाते हैं। जो शख़्स अल्लाह की तमाम किताबों पर ईमान न लाए वह मुसलमान नहीं हो सकता।

अल्लाह की किताबों के बारे में ज़रूरी अक़ीदे :

① तमाम आसमानी किताबों की तालीम सच्ची थी।

② तमाम आसमानी किताबों की तालीम भी यही थी कि अल्लाह के अलावा किसी की इबादत और बन्दगी न करो और अल्लाह के पैग़म्बरों की पैरवी करो।

③ तमाम आसमानी किताबों पर ईमान लाना ज़रूरी है। जो आदमी इनमें से किसी एक किताब को भी मानने से इनकार कर दे वह मुसलमान नहीं हो सकता।

④ पिछली आसमानी किताबें अब अपनी असली शक्ल में नहीं हैं। उनमें लोगों ने अपनी लापरवाही और शरारत से ग़लत-सलत बातें शामिल कर ली हैं।

⑤ तौरात, ज़बूर और इंजील (इस समय बाइबल) के नाम से जो किताबें पाई जाती हैं,

उनके बारे में हम यह नहीं कह सकते कि ये अल्लाह की किताबें हैं, हम उन किताबों पर ईमान लाए हैं जो अल्लाह ने उतारी थीं और जो ग़लत बातों से पाक थीं। हाँ, हम उनके उन हिस्सों को मानते हैं, जिनकी तस्दीक़ क़ुरआन मजीद से होती है।

⑥ पिछली तमाम किताबें अपने-अपने ज़माने के लिए थीं, अब क़ियामत तक क़ुरआन मजीद इनसानों की हिदायत और रहनुमाई के लिए है। क़ुरआन मजीद को माने बग़ैर कोई भी शख़्स इस्लाम की सीधी राह नहीं पा सकता।

⑦ क़ुरआन मजीद जब से नाज़िल हुआ है तब से ही अपनी असली हालत में है और क़ियामत तक इसी तरह महफ़ूज़ रहेगा।

⑧ क़ुरआन मजीद की तालीम हर ज़माने के लिए है। जिस तरह प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के आख़िरी रसूल हैं, इसी तरह क़ुरआन मजीद भी आख़िरी आसमानी किताब है। क़ुरआन मजीद के होते हुए अब किसी दूसरी किताब की ज़रूरत नहीं।

⑨ क़ुरआन मजीद के आ जाने के बाद अब पिछली किताबों पर अमल करने की ज़रूरत नहीं है, और अगर कोई शख़्स क़ुरआन मजीद को छोड़कर पिछली किताबों पर अमल करे तो वह मुसलमान नहीं है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

आसमानी किताब	=	अल्लाह द्वारा भेजी गई किताब, ईश्वरीय ग्रंथ
आख़िरत	=	परलोक
अज़ाब	=	यातना, गुनाहों की सज़ा
हिदायत	=	सीख, रहनुमाई, निर्देश
हुक़ूक़	=	अधिकारों
नेमतों	=	कृपा-दानों
नाज़िल होना	=	उतरना
तस्दीक़	=	पुष्टि
महफ़ूज़	=	सुरक्षित

अभ्यास

(क) उत्तर दीजिए :

1. आसमानी किताब किसे कहते हैं?
2. क़ुरआन मजीद के बारे में आप क्या जानते हैं?
3. अल्लाह तआ़ला हम पर किस-किस तरह मेहरबान है?
4. अल्लाह की किताबों में किन-किन बातों की तालीम दी गई है?

(ख) ख़ाली जगहों को भरिए :

1. पिछली आसमानी किताबें अब अपनी...............शक्ल में नहीं हैं।
2. तमाम आसमानी किताबों की...............एक थी।
3. क़ुरआन मजीद जब से नाज़िल हुआ है। अपनी असली...............में है।
4. ....को माने बग़ैर कोई भी शख़्स इस्लाम की सीधी राह नहीं पा सकता।

(ग) सही वाक्य पर (√) और ग़लत पर (×) के निशान लगाइए :

1. तमाम आसमानी किताबों की तालीम सच्ची थी। ( )
2. तमाम आसमानी किताबों पर ईमान लाना ज़रूरी नहीं है। ( )
3. क़ुरआन मजीद हर ज़माने के लिए है। ( )
4. क़ुरआन मजीद के आ जाने के बाद पिछली किताबों पर भी अमल करना ज़रूरी है। ( )

(ग) उचित जोड़े लगाइए :

	(अ)	(ब)
1.	क़ुरआन	हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम)
2.	तौरात	हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम)
3.	ज़बूर	हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम)
4.	इंजील	हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

4. ईमान बिर्रिसालत

(रसूलों पर ईमान)

इस्लाम का चौथा अक़ीदा ईमान बिर्रिसालत है। इसका अर्थ अल्लाह के रसूलों पर ईमान लाना है। अल्लाह हम पर बहुत ही मेहरबान है। ज़रूरत की ऐसी कौन-सी चीज़ है, जो उसने हमें नहीं दी? पीने को ठंडा-मीठा पानी, खाने को मज़ेदार मीठे फल, पहनने को अच्छे-अच्छे कपड़े, रहने-सहने को अच्छा, आरामदेह मकान। ग़रज़ दुनिया-जहान की चीज़ें अल्लाह ने हमें दी हैं, और इन सबसे बड़ी नेमत यह है कि उसने हमें अपनी मर्ज़ी बताई, सीधी राह दिखाई। अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने और सीधी राह दिखाने को 'रिसालत' कहते हैं, और इस काम के करनेवाले को 'रसूल' कहते हैं। रिसालत पर ईमान लाने के मानी ये हैं कि जब से दुनिया बसी है, तभी से अल्लाह अपने रसूलों को अपना पैग़ाम देकर भेजता रहा है। रसूल हर ज़माने में आते रहे, अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाते रहे। सभी रसूलों ने आकर अल्लाह के पसन्दीदा काम बताए। इस्लाम की तालीम दी, जन्नत में दाख़िल होने और जहन्नम से बचने की राह बताई। रसूल सब सच्चे थे, अमानतदार थे। हर एक ने आकर तालीम दी कि अल्लाह को एक मानो, उसकी ज़ात और उसके कामों में किसी को शरीक न जानो। सिर्फ़ उसी की बन्दगी करो। उसके सिवा कोई बन्दगी के लायक़ नहीं। हर एक ने यही कहा कि मेरी पैरवी करो, मेरी पैरवी ही में दुनिया और आख़िरत का भला है।

यह पैग़ाम लेकर सबसे पहले हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) तशरीफ़ लाए। उनके बाद हज़रत नूह (अलैहि॰), हज़रत इबराहीम (अलैहि॰), हज़रत मूसा (अलैहि॰), हज़रत ईसा (अलैहि॰) और न जाने कितने पैग़म्बर कहाँ-कहाँ आए। उनकी सही गिनती और उनके नाम अल्लाह ही को मालूम हैं। हमें तो बस इतना ही मालूम है कि उन सबकी तालीम एक ही थी। उन सबने आकर अल्लाह की बन्दगी सिखाई, ख़ुद भी अल्लाह की मर्ज़ी पर चले और दूसरों को भी अल्लाह की मर्ज़ी पर चलाया।

रसूलों ने अपनी तरफ़ से कुछ न कहा। अल्लाह ने उन्हें जो हुक्म दिया, उसे ठीक-ठीक बन्दों तक पहुँचाया। कोई बात न छिपाई और ज़रा भी कमी-बेशी न की। रसूल इनसानों के सच्चे ख़ैरख़ाह थे, बड़े ही नेक और सच्चे थे, हर एक का भला चाहते थे, कभी झूठ न बोलते, कभी किसी का बुरा न चाहते थे। उनकी अच्छी ज़िन्दगी को देखकर माननेवाला ज़रूर मान लेता। जो लोग अल्लाह का हुक्म मानकर उसपर चलने लगते, ऐसे लोगों को रसूल ख़ुशख़बरी देते कि उनसे अल्लाह तआला ख़ुश होगा और उन्हें आख़िरत में जन्नत के सदाबहार बाग़ में दाख़िल किया जाएगा। जो लोग रसूलों का इनकार करके कुफ़्र पर अड़े रहते, उन्हें जहन्नम के सख़्त अज़ाब से डराते। हर एक को बड़ी ही मुहब्बत और प्यार से समझाते। अल्लाह की तरफ़ बुलाते, अल्लाह की मेहरबानियाँ याद दिलाते, उसकी नेमतें गिनाकर शुक्रिये पर उभारते। बड़ी ही नर्मी से पेश आते और यह चाहते कि किसी तरह अल्लाह की बातें लोगों के दिलों में उतर जाएँ!

अल्लाह के रसूल ख़ुद दीन पर चलकर दिखाते, नेक काम करते, बुरी बातों से बचते, बुरे कामों से दूर रहते, अल्लाह की इबादत करते, उससे गुनाहों की माफ़ी माँगते, अपने बीवी-बच्चों के साथ अच्छा सुलूक करते थे और हर एक का हक़ अदा करते थे। ग़रज़ सारे भले काम ख़ुद करके दिखाते थे, ताकि लोग उनकी ज़िन्दगी को अपने लिए नमूना बनाएँ और ठीक उसी तरह अमल करें जिस तरह रसूलों ने अमल करके दिखाया है। इसी लिए तो अल्लाह ने हमेशा इनसानों ही को रसूल बनाकर भेजा।

मुसलमान तमाम रसूलों को मानते हैं। उनमें कोई फ़र्क़ नहीं करते कि हम फ़लाँ को मानेंगे और फ़लाँ को नहीं मानेंगे। जो आदमी किसी एक रसूल का भी इनकार कर दे वह मुसलमान नहीं। जिन रसूलों का ज़िक्र क़ुरआन मजीद में आया है उनपर तो हम नाम लेकर ईमान लाते हैं, लेकिन जिनका ज़िक्र नहीं आया है, उनके बारे में हम यक़ीन के साथ नहीं कह सकते कि वे अल्लाह के रसूल हैं या नहीं।

अल्लाह ने रसूलों को कुछ निशानियाँ भी दीं। रसूल अपनी सच्चाई के लिए ये निशानियाँ लोगों को दिखाते थे, इन निशानियों को 'मोजज़ा' कहते हैं। हज़रत मूसा (अलैहि॰) की लाठी अल्लाह के हुक्म से अज़दहा बन जाती थी और फिर जब उठाते तो वही लाठी की लाठी। हज़रत ईसा (अलैहि॰) अल्लाह के हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा कर देते, अंधों और कोढ़ियों को भला-चंगा कर देते। प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को भी अल्लाह ने बहुत-से मोजज़े दिए। एक ही रात में ज़मीन-आसमान की सैर

कराई। अपने पास बुलाया। जन्नत-जहन्नम दिखाई। अपने पास बुलाया। इस वाक़ये को 'मेराज' कहते हैं। आप (सल्ल॰) के इशारे से चाँद दो टुकड़े हो गया। आप (सल्ल॰) की उँगलियों से चश्मा बह निकला। ग़रज़ आप (सल्ल॰) को बहुत-से मोजज़े दिए गए। मगर आप (सल्ल॰) का सबसे बड़ा मोजज़ा क़ुरआन मजीद है, जो क़ियामत तक मौजूद रहेगा। जिसकी छोटी-से-छोटी सूरा की मिस्ल कोई आज तक न ला सका और न क़ियामत तक ला सकेगा।

प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) से पहले जितने रसूल आए, वे सब अपने-अपने ज़माने और वक़्तों के लिए थे। लेकिन आप (सल्ल॰) की नुबूवत क़ियामत तक के लिए है। आप (सल्ल॰) को तमाम इनसानों के लिए रसूल बनाकर भेजा गया। सारी दुनिया के लोगों के लिए आप (सल्ल॰) पर ईमान लाना और आप (सल्ल॰) की पैरवी करना ज़रूरी है। जो लोग आप (सल्ल॰) की नुबूवत का इनकार करें वे मुसलमान नहीं, और आख़िरत में अल्लाह तआला उनसे सख़्त नाराज़ होगा। हज़रत मूसा (अलैहि॰) और हज़रत ईसा (अलैहि॰) ने अपनी उम्मत के लोगों को ताकीद की थी कि आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर ईमान लाना और उनके बताए हुए तरीक़े पर चलना। मगर कुछ लोगों ने तो उनकी बात मानी, कुछ लोगों ने नहीं मानी, अपनी ज़िद पर अड़े रहे और हठधर्मी करके अपनी दीन-दुनिया दोनों को बिगाड़ लिया।

रसूलों के बारे में ज़रूरी अक़ीदे

1. तमाम रसूल अल्लाह के बन्दे और इनसान थे।
2. तमाम रसूल सच्चे थे, कभी झूठ नहीं बोलते थे।
3. तमाम रसूल 'अमानतदार' थे। अल्लाह का पैग़ाम बग़ैर किसी कमी-बेशी के ठीक-ठीक पहुँचा देते थे, कोई बात छिपा कर नहीं रखते थे।
4. तमाम रसूल सबके सच्चे ख़ैरख़ाह होते थे। अपनी बड़ाई, लालच या अपने दुनियावी फ़ायदे के लिए कुछ नहीं करते थे। अल्लाह को खुश करने के लिए अल्लाह का पैग़ाम लोगों को पहुँचाते थे।
5. तमाम रसूलों के पास हज़रत जिबरील (अलैहि॰) वह्य लाते थे।
6. तमाम रसूल मासूम थे, वे कभी गुनाह का काम नहीं करते थे।

7. अल्लाह की तरफ़ से बन्दों को सीधी राह दिखाने पर मुक़र्रर होते थे।
8. अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ग़ैब की बहुत-सी ऐसी बातें बता दी थीं, जो आम लोगों को मालूम नहीं थीं।
9. उन्हें अज़ाब, सवाब, जन्नत और जहन्नम पर ऐसा यक़ीन था, जैसा आँखों देखी चीज़ पर होता है।
10. रसूल ख़ुद भी अल्लाह की बन्दगी करते थे। अल्लाह के हुक्मों पर चलते थे और दूसरों को भी उसकी तालीम देते थे।
11. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के आख़िरी रसूल हैं। अब क़ियामत तक कोई नबी नहीं आएगा। जो भी नबी होने का दावा करे वह झूठा है। अब आप (सल्ल०) ही पूरी दुनिया के लिए नबी हैं। तमाम इनसानों की भलाई इसी में है कि वे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर ईमान लाएँ और आप (सल्ल०) की पैरवी करें।

शब्दार्थ और टिप्पणी

रिसालत	=	ईशदूतत्व
मोजज़ा	=	चमत्कार, वह चमत्कार जो नबी ने दिखाया
मेराज	=	नबी (सल्ल०) का आसमानी सफ़र
क़ियामत	=	प्रलय, हश्र का दिन

अभ्यास

(क) उत्तर दीजिए :

1. रिसालत किसे कहते हैं?
2. रसूलों ने लोगों को किन-किन बातों की तालीम दी?
3. रसूलों की ज़िन्दगी कैसी थी?
4. अल्लाह ने हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) को कौन-कौन से मोजज़े दिए थे?
5. हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की नुबूवत के बारे में आप क्या जानते हैं?

(ख) ख़ाली जगहों को भरिए :

1. इनसानों के सच्चे.....................थे।
2. हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का सबसे बड़ा मोजज़ा...............है।
3. मुसलमान तमाम.................को मानते हैं।
4. हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की नुबूवत.................तक के लिए है।
5. रसूल, अल्लाह के बन्दे और....................थे।

(ग) सही वाक्य पर सही (√) और ग़लत पर (×) का निशान लगाइए :

1. रसूल सब मासूम थे। (   )
2. रसूलों के पास हज़रत मीकाईल (अलैहि॰) वह्य लाते थे। (   )
3. प्यारे नबी (सल्ल॰) का सबसे बड़ा मोजज़ा क़ुरआन मजीद है। (   )
4. हज़रत आदम (अलैहि॰) आख़िरी नबी थे। (   )
5. अब क़ियामत तक कोई नबी नहीं आएगा। (   )

(घ) नीचे रसूलों के नामों की तरतीब उलट-पुलट हो गई है। आप सही तरतीब से उनके नाम लिखिए :

1. हज़रत मूसा (अलैहि॰)
2. हज़रत नूह (अलैहि॰)
3. हज़रत आदम (अलैहि॰)
4. हज़रत इबराहीम (अलैहि॰)
5. हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰)
6. हज़रत ईसा (अलैहि॰)

5. ईमान बिल-आख़िरत

(आख़िरत पर ईमान)

इस्लाम का पाँचवाँ अक़ीदा ईमान बिल-आख़िरत है। इसका अर्थ है मरने के बाद जी उठने पर ईमान लाना। बहुत-से लोग यह समझते हैं कि जब हम एक बार मर गए तो फिर भला दोबारा क्या ज़िन्दा होंगे। मिट्टी में मिलकर मिट्टी हो जाएँगे, गली-सड़ी हड्डियाँ भला फिर क्या ज़िन्दा होंगी। कुछ लोग यह समझते हैं कि मरकर दूसरा जन्म बदलते हैं। जन्म बदलने का मतलब यह है कि अगर किसी ने अच्छे-अच्छे काम किए हैं, तो दोबारा इसी दुनिया में उसकी रूह को और अच्छा जिस्म मिल जाता है और अगर बुरे काम किए हैं तो इसी दुनिया में उसे बुरा जिस्म मिल जाता है। बुरे कामों की सज़ा में कोई कुत्ता बना दिया जाता है, कोई गधा और सूअर बना दिया जाता है। मानो बुरे कामों की सज़ा इसी दुनिया में मिल जाती है।

ये सब बातें ग़लत हैं और ख़ुद इनसानों ने अपनी अक़्ल से गढ़ ली हैं। मरने के बाद क्या होता है यह हम ख़ुद नहीं देख सकते। जो लोग मर चुके हैं, उनसे मिलकर मालूम नहीं कर सकते। फिर भला हम ख़ुद कैसे कह सकते हैं कि मरने के बाद क्या होगा। लेकिन रसूलों पर ईमान लाने वालों के लिए यह कोई मुशकिल बात नहीं है। अल्लाह के सच्चे बन्दों यानी रसूलों ने हमें मौत के बाद का हाल भी ठीक-ठीक बता दिया है। रसूलों ने बताया कि हम सब मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा किए जाएँगे। अल्लाह के लिए यह क्या मुशकिल है! आख़िर पहले भी तो उसी ने हमें पैदा किया था! जी उठने के बाद हम सब हश्र के मैदान में जमा होंगे। अल्लाह के सामने हमारी पेशी होगी। हमारे कामों की जाँच-पड़ताल होगी। एक-एक अमल तौला जाएगा। हर एक को अपने किए के मुताबिक़ बदला मिलेगा। मरने के बाद जी उठने और फ़ैसला होने के दिन को 'आख़िरत' कहते हैं।

फ़रिश्तों के हाल में हमने पढ़ा है कि हज़रत इसराफ़ील (अलैहिस्सलाम) सूर मुँह में लिए खड़े हैं और इन्तिज़ार कर रहे हैं कि हुक्म मिले और वे सूर फूँकें। जब वे पहला सूर फूँकेंगे तो सारी दुनिया मर-मिटकर ख़त्म हो जाएगी। सूर की आवाज़ इतनी तेज़ और

भयानक होगी कि कोई जानदार ज़िन्दा न रह सकेगा और सारी दुनिया टूट-फूट जाएगी। आए दिन हम सुनते रहते हैं कि कहीं ज़लज़ला आ गया, कहीं ताऊन (महामारी) फैल गया, कहीं कोई और वबा फूट पड़ी, लाखों लोग हलाक हो गए और शहर के शहर तबाह हो गए।

ये छोटे-छोटे ज़लज़ले और तबाहियाँ क़ियामत का नमूना हैं। एक दिन ऐसा आएगा जब एक बहुत बड़ा ज़लज़ला सारी दुनिया को हिला देगा। आन की आन में सारी दुनिया ख़त्म हो जाएगी। न ये शहर रहेंगे, न गाँव, न पहाड़ रहेंगे, न दरिया, न चाँद रहेगा और न सूरज। सितारे झड़-झड़कर बिखर जाएँगे। न ज़मीन रहेगी, न आसमान, न इनसान रहेंगे, न कोई जानदार। ग़रज़ सारी दुनिया तबाह हो जाएगी।

फिर हज़रत इसराफ़ील (अलैहि॰) दोबारा सूर फूँकेंगे। तमाम मुर्दे जी उठेंगे और सब हश्र के मैदान में जमा होंगे। सबके अच्छे-बुरे काम सामने आएँगे, किसी का कोई अमल छिपा न रहेगा। रत्ती-रत्ती का हिसाब होगा। फ़रिश्तों के बयान में हमने 'किरामन-कातिबीन' का हाल पढ़ा था। दो फ़रिश्ते हर वक़्त आदमी के साथ रहते हैं और जो कुछ वह कहता या करता है, लिखते रहते हैं। क़ियामत के दिन वे अपनी पूरी रिपोर्ट अल्लाह के सामने पेश करेंगे। किसी की कोई बात अल्लाह से छिपी नहीं है। अल्लाह तो दिलों का हाल जानता है। सबका ठीक-ठीक फ़ैसला करेगा। उस दिन न कोई झूठ बोल सकेगा, न किसी की दोस्ती काम आ सकेगी और न कोई ग़लत सिफ़ारिश कर सकेगा। भूल-चूक से गुनाह करनेवाले मुसलमानों की प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) शफ़ाअत फ़रमाएँगे।

उस दिन तमाम इनसान दो गरोहों में बँट जाएँगे। एक ईमानवालों का गरोह होगा, दूसरा काफ़िरों (इनकारियों) का। जिन लोगों ने अल्लाह का हुक्म माना होगा, इस्लाम की राह पर चले होंगे, रसूलों की पैरवी की होगी, अच्छे काम किए होंगे, गुनाहों से बचे होंगे और हर एक का हक़ अदा किया होगा, अल्लाह उन नेक बन्दों से बहुत ख़ुश होगा, उन्हें इनाम देगा। रहने-सहने के लिए जन्नत देगा और वे हमेशा-हमेशा जन्नत में रहेंगे।

जिन लोगों ने अल्लाह की नाफ़रमानी की होगी, उसका हुक्म मानने से इनकार किया होगा, रसूलों की पैरवी से मुँह मोड़ा होगा, गुनाह किए होंगे, ख़ुद भी भटके होंगे और दूसरों को भी भटकाया होगा, किसी पर ज़ुल्म किया होगा, किसी का हक़ दबाया होगा और अल्लाह की ज़मीन में फ़ितना-फ़साद फैलाया होगा, ऐसे ज़ालिमों से अल्लाह सख़्त नाराज़ होगा। उन्हें सख़्त अज़ाब देगा। ऐसे लोग जहन्नम में डाले जाएँगे। उस दिन कोई अल्लाह की पकड़ से न बच सकेगा। भाग निकलने की कोई राह न होगी। गुनाहगारों के लिए यह

बड़ा सख़्त दिन होगा। वे सोचते होंगे कि कोई दुनिया भर की दौलत लेकर हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा ले। लेकिन उस दिन वे अज़ाब से न बच सकेंगे।

जन्नत

जन्नत नेक बन्दों का ठिकाना है। जन्नत हरे-भरे बाग़ों का नाम है, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। जन्नत में तरह-तरह की नेमतें होंगी। अल्लाह के नेक बन्दे जो चाहेंगे खाएँगे-पिएँगे और जो चाहेंगे पहनेंगे। ख़ूबसूरत और क़ीमती कपड़े होंगे। अच्छे-अच्छे ज़ेवर मिलेंगे। शानदार महल होंगे। बड़ी-बड़ी कोठियाँ होंगी, उनमें हर तरह से सुकून रहेगा। न कोई बीमारी होगी और न दुख, बस आराम ही आराम होगा। न आँखों ने ऐसा आराम देखा होगा, न कानों ने सुना होगा और न दिल में ऐसे आराम का ख़याल आया होगा। अल्लाह के फ़रमाँबरदार बन्दे जन्नत में जो चाहेंगे पाएँगे। सबसे बड़ी बात यह है कि जन्नत की नेमतें कभी ख़त्म न होंगी। जो एक बार उसमें दाख़िल हो गया, फिर कभी न निकाला जाएगा। ऐशो-आराम के ख़त्म होने का कोई खटका न होगा। सदा सुख होगा, मौत का कोई डर न होगा, मौत को भी मौत आ चुकी होगी।

जहन्नम

जहन्नम नाफ़रमानों का ठिकाना है। जहन्नम में तरह-तरह के अज़ाब होंगे, ऐसे-ऐसे सख़्त अज़ाब जिनको हम सोच भी नहीं सकते। जहन्नम आग की एक बहुत ही गहरी खाई है, जहाँ साँप, बिच्छू और बड़े-बड़े अज़दहे होंगे। जहन्नमियों को खाने के लिए काँटेदार कड़वे पत्ते मिलेंगे। पीने के लिए ख़ून, पीप और खौलता हुआ पानी मिलेगा, जिसको पिएँगे तो मुँह झुलसकर रह जाएगा। घबराकर मौत को पुकारेंगे, लेकिन वहाँ किसी को मौत भी न आएगी। जहन्नम बहुत ही बुरा ठिकाना है।

ऐ अल्लाह, हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा। हमें इस्लाम की सीधी राह पर चला और दोनों जहान में कामियाबी अता कर! आमीन!

आख़िरत के बारे में ज़रूरी अक़ीदे

1. एक दिन यह सारी दुनिया ख़त्म हो जाएगी।
2. मरने के बाद तमाम अगले-पिछले इनसानों को अल्लाह तआ़ला दोबारा ज़िन्दा करेगा।

3. सारे इनसान हश्र के मैदान में हिसाब-किताब के लिए जमा होंगे।
4. इनसानों के तमाम अच्छे-बुरे आमाल (काम) सामने आ जाएँगे।
5. अल्लाह तआला ख़ुद हर एक से हिसाब लेगा और अच्छे-बुरे आमाल (काम) के मुताबिक़ बदला देगा।
6. उस दिन कोई इनसान अपना छोटे-से-छोटा अमल भी न छिपा सकेगा।
7. ठीक-ठीक जँचा-तुला फ़ैसला होगा। किसी के साथ कोई ज़्यादती न होगी।
8. नाफ़रमानों और फ़रमाँबरदारों को एक समान नहीं समझा जाएगा। हर एक को उसके आमाल के मुताबिक़ ठिकाना दिया जाएगा।
9. न कोई झूठ बोल सकेगा, न किसी की दोस्ती काम आएगी और न ही किसी की ग़लत सिफ़ारिश।
10. रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उन्हीं लोगों की सिफ़ारिश करेंगे, जिनके लिए अल्लाह की तरफ़ से इजाज़त मिलेगी।
11. उस दिन कोई अल्लाह की पकड़ से न बच सकेगा। अल्लाह का जो फ़ैसला होगा, अटल होगा। एक सच्चा मुसलमान उस दिन के डर से काँपता रहता है और किसी बुराई के क़रीब भी नहीं फटकता।
12. ईमानवाले जन्नत की नेमतों में हमेशा रहेंगे।
13. नाफ़रमान और शिर्क करनेवाले जहन्नम की आग में हमेशा जलते रहेंगे।

रब्बनसरिफ़ अन्ना अज़ा-ब जहन्न-म इन-न अज़ाबहा का-न ग़रामा।

"ऐ हमारे रब! जहन्नम का अज़ाब हमसे दूर रख। सच्ची बात यह है कि जहन्नम का अज़ाब बराबर दुख देनेवाला है।" (क़ुरआन, 25:65)

नोट : ईमाने-मुफ़स्सल में सात चीज़ों पर ईमान लाना ज़रूरी बताया गया है और यहाँ हमने सिर्फ़ पाँच चीज़ों पर ईमान लाने का ज़िक्र किया है—तक़दीर पर ईमान, ईमान बिल्लाह ही में दाख़िल है और इसी तरह मौत के बाद जी उठने पर ईमान, ईमान बिल-आख़िरत में शामिल है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

आख़िरत	=	परलोक, मरने के बाद जी उठने और फ़ैसला होने के दिन को आख़िरत कहते हैं।
हश्र	=	क़ियामत
ज़लज़ला	=	भूकम्प
शफ़ाअत	=	सिफ़ारिश
जन्नत	=	स्वर्ग
जहन्नम	=	नरक
अज़ाब	=	यातना

अभ्यास

(क) **उत्तर दीजिए :**

1. आख़िरत किसे कहते हैं?
2. आख़िरत के बारे में लोगों के क्या ख़यालात हैं?
3. आख़िरत के बारे में रसूलों की तालीमात क्या हैं?
4. क़ियामत के दिन क्या होगा?
5. जन्नत किन लोगों को मिलेगी?
6. जहन्नम किन लोगों का ठिकाना है?
7. मैदाने-हश्र में सारे इनसान क्यों जमा किए जाएँगे?

(ख) **ख़ाली जगहों को भरिए :**

1. हज़रत इसराफ़ील (अलैहि॰) जब पहला.............फूँकेंगे तो सारी दुनिया मर-मिटकर ख़त्म हो जाएगी।
2. इनसान के तमाम अच्छे-बुरे................सामने आ जाएँगे।
3. क़ियामत के दिन तमाम इनसान...................गरोहों में बँट जाएँगे।
4. ....हरे-भरे बाग़ों का नाम है।
5. ....आग की एक बहुत ही गहरी खाई है।

कुछ और काम

1. जन्नत और जहन्नम के बारे में चार-चार वाक्य लिखिए।

4

जुमे की नमाज़

जुमे की नमाज़ 'फ़र्ज़े-ऐन' है। हर मुसलमान के लिए जुमे की नमाज़ पढ़ना ज़रूरी है और जो इनसान इसका इनकार करे, वह मुसलमान नहीं है। क़ुरआन पाक में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि जुमे की अज़ान होते ही अपने कारोबार छोड़कर अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ दौड़ पड़ो। हदीस शरीफ़ में भी जुमे की नमाज़ की बहुत ताकीद की गई है। एक बार प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "मुसलमानो! जुमे के दिन को अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए ईद का दिन बनाया है। इस दिन नहाओ, अगर ख़ुशबू मिल जाए तो ख़ुशबू लगाओ और मिसवाक इस दिन ज़रूर कर लिया करो।" आप (सल्ल॰) ने यह भी फ़रमाया कि जुमे का दिन तमाम दिनों का सरदार है। यह दिन अल्लाह के नज़दीक सब दिनों से ज़्यादा बेहतर है। ईद के दिनों से भी ज़्यादा अल्लाह के नज़दीक जुमे का दर्जा है। जुमे का दिन पिछली उम्मतों में भी बहुत बाबरकत था। लेकिन उन्होंने उसे छोड़ दिया। यहूदियों ने सनीचर (हफ़्ते) के दिन को बाबरकत बना लिया और ईसाइयों ने इतवार के दिन को मुतबर्रक समझा। यह अल्लाह की हिदायत और मेहरबानी है कि मुसलमानों ने इसकी बड़ाई और अज़मत को बाक़ी रखा।

जुमे की तैयारी

प्यारे रसूल (सल्ल॰) जुमेरात के दिन ही से जुमे की तैयारी शुरू कर दिया करते थे और फ़रमाया करते थे कि जुमे की रात रौशन और दिन चमकता हुआ है। (हदीस : मिशकात) जो लोग बग़ैर किसी उज़्र और मजबूरी जुमे की नमाज़ न पढ़ें उनको सख़्त अज़ाब होगा।

आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "जो लोग जुमे की जमाअत में शरीक नहीं होते, मेरा जी चाहता है कि मैं ख़ुद जाकर उनके घरों को जला दूँ।" प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने यह भी फ़रमाया कि जो शख़्स जुमे के दिन अच्छी तरह नहा-धोकर बालों में तेल लगाए, ख़ुशबू लगाए और मस्जिद में जाकर अदब-से बैठ जाए। पहले से बैठे हुए आदमी को अपनी जगह

से न उठाए, और नफ़्ल पढ़े, और जब इमाम ख़ुतबा पढ़े तो ख़ामोश होकर सुने तो अल्लाह तआ़ला उसके पिछले जुमे से अब तक के गुनाह माफ़ फ़रमा देगा।

हम जुमे की नमाज़ हमेशा पाबन्दी से जामा मस्जिद में पढ़ते हैं और जुमेरात के दिन ही से जुमे का इन्तिज़ार करने लगते हैं। कपड़े साफ़ करके रखते हैं। ख़ुशबू मिल जाए तो लाकर रख लेते हैं और जुमे के दिन सुबह-सवेरे ही गुस्ल करके साफ़-सुथरे कपड़े पहनते हैं, बालों में तेल लगाते हैं, ख़ुशबू लगाते हैं, सुर्मा लगाते हैं और बहुत पहले से जामा मस्जिद पहुँच जाते हैं। कुछ नफ़्ल नमाज़ पढ़ते हैं, सुन्नतें पढ़ते हैं और अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करते रहते हैं।

जुमे के दिन जल्द-से-जल्द मस्जिद में पहुँचना चाहिए। जो शख़्स जिस क़द्र पहले मस्जिद में पहुँचेगा, उसको उतना ही ज़्यादा सवाब मिलेगा।

जुमे की नमाज़ किन लोगों पर फ़र्ज़ है

जुमे की नमाज़ मुसाफ़िरों, बीमारों, अंधों, औरतों और बच्चों के अलावा तमाम मुसलमानों पर फ़र्ज़ है। जुमे की नमाज़ जामा मस्जिद में पढ़नी चाहिए, ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोग उस दिन जमा हों। सब मिलकर इबादत करें और इस्लाम की शान व शौकत ज़ाहिर हो। जिन लोगों पर जुमे की नमाज़ फ़र्ज़ नहीं है वे भी अगर पढ़ लें तो उनकी जुमे की नमाज़ हो जाएगी। उस दिन उनको ज़ुहूर की नमाज़ पढ़ने की ज़रूरत न होगी। बच्चे तो जुमे के दिन नमाज़ पढ़ते ही हैं, ताकि शुरू से आदत पड़ जाए।

वक़्त

जुमे की नमाज़ का वक़्त सूरज ढलने के बाद (ज़वाले-आफ़ताब) से शुरू हो जाता है। जुमे की नमाज़ शुरू समय में पढ़ना ज़्यादा बेहतर है। प्यारे सहाबा (रज़ि॰) जब तक जुमे की नमाज़ से फ़ारिग़ न हो लेते, न दोपहर को आराम करते और न दोपहर का खाना खाते। जुमे की नमाज़ का वक़्त वही है, जो ज़ुहूर की नमाज़ का है। अगर ज़ुहूर का वक़्त निकल जाए तो फिर जुमे की नमाज़ जाइज़ नहीं।

नमाज़ का तरीक़ा

जुमे के दिन अज़ान की आवाज़ सुनते ही सारे काम छोड़कर मुसलमान मस्जिद की तरफ़ दौड़ पड़ते हैं। सबसे पहले दो रकअतें तहिय्यतुल-मस्जिद की और चार रकअतें सुन्नत

पढ़ते हैं। जब इमाम साहब मिम्बर पर ख़ुतबा पढ़ने के लिए आकर बैठते हैं तो दूसरी अज़ान ख़ुतबे के लिए दी जाती है। फिर इमाम साहब पहला ख़ुतबा पढ़ते हैं। मुक़तदी ख़ामोशी से ख़ुतबा सुनते हैं, न बातें करते हैं, न किसी को सलाम करते हैं, न किसी के सलाम का जवाब देते हैं और न कोई नफ़्ल नमाज़ पढ़ते हैं। बस ख़ामोशी से जी लगाकर ख़ुतबा सुनते हैं। पहले ख़ुतबे में इमाम साहब अल्लाह तआला की तारीफ़ बयान करते हैं और प्यारे नबी (सल्ल०) पर दुरूद व सलाम भेजते हैं। फिर कुछ क़ुरआन मजीद और हदीसें पढ़कर लोगों को अच्छी-अच्छी बातें बताते हैं। क़ियामत के अज़ाब से डराते हैं और बुरे कामों से बचने की ताकीद करते हैं। अच्छे कामों का हुक्म देते हैं और नेक लोगों को अल्लाह की नेमतों की ख़ुशख़बरी सुनाते हैं। ख़ुतबा अरबी में पढ़ते हैं, लेकिन उर्दू में उसकी मुख़्तसर तशरीह कर देते हैं, ताकि मुसलमान ख़ूब समझ लें। फिर इमाम साहब बीच में थोड़ी देर के लिए बैठ जाते हैं। दूसरी बार खड़े होकर दूसरा ख़ुतबा पढ़ते हैं। दूसरे ख़ुतबे में अल्लाह तआला की तारीफ़ होती है। प्यारे नबी (सल्ल०) पर दुरूद व सलाम होता है। प्यारे सहाबा (रज़ि०) की तारीफ़ होती है और उनके लिए दुआएँ की जाती हैं। आम मुसलमानों के लिए और इस्लाम की सरबुलन्दी के लिए भी दुआएँ की जाती हैं। इसके बाद जुमे की नमाज़ दो रकअतें फ़र्ज़ जमाअत से पढ़ी जाती है।

प्यारे नबी (सल्ल०) ख़ुतबा छोटा पढ़ा करते थे और नमाज़ ख़ुतबे से लम्बी होती थी। लेकिन नमाज़ भी बहुत ज़्यादा लम्बी नहीं पढ़ाते थे। नमाज़ में हर क़िस्म के लोग होते हैं, कमज़ोर भी और बच्चे भी, इसलिए जमाअत की नमाज़ ज़्यादा लम्बी नहीं पढ़ानी चाहिए। जुमे की फ़र्ज़ दो रकअतों के बाद दो[1] रकअतें या चार रकअतें सुन्नत पढ़ते हैं और कुछ लोग छः रकअतें पढ़ते हैं।

जुमे की नमाज़ के बारे में याद रखने की बातें

❶ जुमे की अज़ान सुनते ही मुसलमानों को अपना कारोबार छोड़ देना चाहिए, अज़ान के बाद कारोबार में लगे रहना दुरुस्त नहीं।

1. हदीस से दो रकअतें भी साबित हैं और चार भी। जब आप (सल्ल०) मस्जिद में नमाज़ पढ़ते तो चार रकअतें सुन्नत पढ़ते और जब घर आकर सुन्नतें पढ़ते तो दो रकअतें पढ़ते। कुछ सहाबा (रज़ि०) ने छः रकअतें भी पढ़ी हैं।

❷ जुमे का वक़्त वही है जो ज़ुहर की नमाज़ का है। लेकिन जुमे की नमाज़ अव्वल वक़्त में पढ़ना ज़्यादा अच्छा है। ज़ुहर का वक़्त अगर निकल जाए तो फिर जुमे की नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं।

❸ कम से कम तीन आदमी भी हों तो जुमे की जमाअत कर लेनी चाहिए। अगर तीन आदमी से कम हों तो ज़ुहर की नमाज़ पढ़नी चाहिए।

❹ जुमे की नमाज़ जामा मस्जिद में पढ़नी चाहिए और हर बड़ी आबादी में जुमे की नमाज़ होनी चाहिए।

❺ ख़ुतबा हो रहा हो तो बातचीत करना, क़ुरआन मजीद पढ़ना, सलाम करना या सलाम का जवाब देना, सब मना है। कोई नमाज़ भी शुरू नहीं करनी चाहिए। हाँ, अगर शुरू कर दी है तो पूरी कर लेनी चाहिए।

❻ जुमे की नमाज़ के लिए दो अज़ानें होती हैं। एक ख़ुतबे से पहले और एक जब इमाम साहब ख़ुतबे के लिए मिम्बर पर बैठते हैं।

❼ जुमे के दिन ग़ुस्ल करना, साफ़-सुथरे कपड़े पहनना, मिल जाए तो ख़ुशबू लगाना, बाल बनवाना और नाख़ुन कटाना सुन्नत है।

❽ मस्जिद में जहाँ जगह मिले बैठ जाना चाहिए। लोगों के ऊपर से कूद-फाँदकर अगली सफ़ों में जाने की कोशिश न करें। पहले आकर क्यों न पहली सफ़ में बैठ जाएँ।

❾ शहर के सबसे ज़्यादा इल्म और वक़ारवाले दीनदार आदमी को ख़ुतबा देना चाहिए। ख़ुतबा ऊँची आवाज़ से निहायत जोश के साथ देना चाहिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

फ़र्ज़े-ऐन = ऐसा फ़र्ज़ जो हरेक मुसलमान पर लाज़िम हो
बाबरकत = बरकतवाला
मुतबर्रक = मुबारक, शुभ

अभ्यास

(क) उत्तर दीजिए :

1. जुमे की नमाज़ क्या है?

2. जो शख़्स जुमे की नमाज़ को फ़र्ज़े-ऐन न माने, उसके लिए क्या हुक्म है?
3. प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) जुमे की नमाज़ की तैयारी किस तरह करते थे?
4. जुमे की नमाज़ किन लोगों पर फ़र्ज़ नहीं है?
5. जुमे की नमाज़ का वक़्त क्या है?
6. खुतबे के दौरान किन बातों से मना किया गया है?
7. जुमे की नमाज़ का तरीक़ा क्या है?
8. जुमे की नमाज़ कहाँ अदा करनी चाहिए?
9. जुमे की नमाज़ के लिए किन बातों का एहतिमाम करना ज़रूरी है?

(ख) ख़ाली जगहों को भरिए :

1. जुमे का दिन तमाम दिनों का................है।
2. अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि....................की अज़ान होते ही अपने कारोबार छोड़कर अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ दौड़ पड़ो।
3. जुमे की नमाज़.....................में पढ़नी चाहिए।
4. जुमे की नमाज़ के लिए..................अज़ानें होती हैं।
5. ईसाइयों के नज़दीक................का दिन बाबरकत माना जाता है।
6. प्यारे रसूल (सल्ल.)..............मुख़्तसर पढ़ा करते थे और नमाज़ खुतबे से लम्बी होती थी।

(ग) सही वाक्य पर (√) और ग़लत वाक्य पर (×) का निशान लगाइए :

1. जुमे की नमाज़ मुसाफ़िरों, बीमारों, अंधों, औरतों और बच्चों के अलावा तमाम मुसलमानों पर फ़र्ज़ है। (   )
2. जुमे की नमाज़ मुहल्ले की मस्जिद में पढ़नी चाहिए। (   )
3. तीन आदमी भी हों तो जुमे की नमाज़ पढ़ लेनी चाहिए। (   )
4. जुमे की अज़ान के बाद भी ख़रीद-फ़रोख़्त कर सकते हैं। (   )
5. जुमे के दिन खुशबू लगाना सुन्नत है।
6. जुहर का वक़्त निकल जाने के बाद भी जुमे की नमाज़ जाइज़ है। (   )

(घ) जोड़े लगाइए :

(अ)	(ब)
यहूदियों का बाबरकत दिन	जामा मस्जिद
मुसलमानों का बाबरकत दिन	सनीचर
मिम्बर	जुमा
जुमे की नमाज़	खुतबा देने की जगह

5

ईदैन की नमाज़

'ईदैन' के मानी दो ईदें, एक ईदुल-फ़ित्र यानी रमज़ान के रोज़े पूरे होने के बाद की ईद और दूसरी ईदुल-अज़हा यानी क़ुरबानी की ईद। ये दोनों इस्लामी त्योहार हैं। प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जब मक्का से मदीने को हिजरत फ़रमाई तो देखा कि मदीने के मुसलमान दो दिन ख़ुशियाँ मनाते हैं। आपने मालूम किया तो लोगों ने बताया कि हम मुसलमान होने से पहले ही से इन दो दिनों में ख़ुशियाँ मनाते चले आ रहे हैं। आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए इन दो दिनों से बेहतर दो दिन मुक़र्रर फ़रमाए हैं : एक ईदुल-फ़ित्र का दिन और दूसरा ईदुल-अज़हा का दिन।

मुसलमान ईदुल-फ़ित्र तो इस ख़ुशी में मनाते हैं कि अल्लाह तआला ने प्यारे रसूल (सल्ल॰) पर क़ुरआन जैसी नेमत नाज़िल फ़रमाई, जिसमें दीन-दुनिया की भलाइयाँ हैं और जिसमें अल्लाह तआला ने हर अच्छाई और बुराई को खोल-खोलकर बयान कर दिया है। हम रमज़ान-भर तरावीह की नमाज़ में क़ुरआन सुनते और वैसे भी क़ुरआन पढ़ते हैं। दूसरे यह कि रमज़ान शरीफ़ के जो रोज़े अल्लाह तआला ने हम पर फ़र्ज़ किए हैं, उसकी मेहरबानी और मदद से वे पूरे-पूरे अदा करते हैं। यह ईद हम अरबी महीने शव्वाल की पहली तारीख़ को मनाते हैं। शुकराने की दो रकअत नमाज़ पढ़ते हैं कि अल्लाह तआला ने हमें रमज़ान शरीफ़ की बरकतों से मालामाल फ़रमाया।

ईदुल-अज़हा हम हज़रत इसमाईल (अलैहिस्सलाम) की क़ुरबानी की याद और हज की ख़ुशी में मनाते हैं। अल्लाह ने हमें यह मुबारक दिन नसीब फ़रमाया कि हम हज अदा करें और क़ुरबानी की सुन्नत को ज़िन्दा रखें। हज हक़ीक़त में इस बात का एलान है कि तमाम इनसान अल्लाह तआला के बन्दे हैं। बन्दगी के लायक़ सिर्फ़ अल्लाह तआला की ज़ात है। सारे इनसान बराबर हैं, किसी को किसी पर बड़ाई हासिल नहीं है। बड़ाई के लायक़ सिर्फ़ अल्लाह तआला की ज़ात है। वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं।

क़ुरबानी हम इसलिए करते हैं कि जिस तरह हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) ने अल्लाह

की ख़ुशी के लिए अपने बेटे के गले पर छुरी रख दी और हज़रत इसमाईल (अलैहि०) ख़ुशी-ख़ुशी अपनी जान अल्लाह के हुज़ूर में पेश करने को तैयार हो गए, इसी तरह ज़रूरत पड़ने पर हम भी अल्लाह की राह में अपनी जान पेश कर देंगे, क्योंकि हमारी नमाज़ें और क़ुरबानियाँ, हमारी ज़िन्दगी और मौत सब कुछ अल्लाह के लिए है।

10 ज़िलहिज्जा को हम उन्हीं नेमतों के शुकराने में दो रक्अत नमाज़ अदा करते हैं।

ईदुल-फ़ित्र और ईदुल-अज़हा की नमाज़ें हम ईदगाह में पढ़ते हैं। ईद के दिन हम ग़ुस्ल करते हैं, मिसवाक करते हैं और नये-नये कपड़े पहनते हैं। मिल जाए तो ख़ुशबू लगा लेते हैं। और ख़ुशी-ख़ुशी ईद की नमाज़ पढ़ने के लिए सुबह-सवेरे पैदल ईदगाह रवाना हो जाते हैं। अगर ईदुल-फ़ित्र हो तो कुछ मीठा खाकर रास्ते में धीरे-धीरे तकबीर कहते हुए जाते हैं। अगर क़ुरबानी की ईद हो तो बिना कुछ खाए ज़ोर-ज़ोर से तकबीर कहते हुए जाते हैं। ईद की तकबीर अल्लाह तआला की बड़ाई और तौहीद का एलान है। एक रास्ते से जाते हैं और दूसरे रास्ते से आते हैं, ताकि पूरी बस्ती अल्लाह की बड़ाई और तौहीद के एलान से गूँज उठे और इस्लाम की शान व शौकत ज़ाहिर हो।

तकबीर के अलफ़ाज़ ये हैं—

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इला-ह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, वलिल्लाहिल हम्द०

"अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और अल्लाह ही सबसे बड़ा है। (हाँ) अल्लाह ही सबसे बड़ा है और सारी तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं।"

ईदगाह पहुँचकर हम सफ़ों में अदब से बैठ जाते हैं। किसी की जगह पर नहीं बैठते, किसी को धक्का नहीं देते, ख़ुद तकलीफ़ उठा कर दूसरों को आराम पहुँचाते हैं। अल्लाह की इबादत करनेवालों की इतनी बड़ी तादाद देखकर दिल बाग़-बाग़ हो जाता है। ईदगाह में हम कोई नफ़्ल नमाज़ नहीं पढ़ते हैं। प्यारे रसूल (सल्ल०) ईदगाह में ईद की नमाज़ से पहले और बाद में कोई भी नमाज़ नहीं पढ़ते थे।

दोनों ईदों की नमाज़ के लिए न अज़ान होती है और न इक़ामत। सबके सब वक़्त पर ईदगाह पहुँच जाते हैं। दो रक्अतें ईद की नमाज़ अदा करते हैं, ख़ुतबा सुनते हैं, फिर घर वापस आते हैं। क़ुरबानी भी ईदुल-अज़हा की नमाज़ पढ़ने के बाद घर वापस आकर करते हैं।

ईद की नमाज़ का हुक्म

प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आपके प्यारे साथियों (रज़ियल्लाहु अनहुम) ने कभी ईद की नमाज़ नहीं छोड़ी। ईद के दिन सबसे पहले आप (सल्ल॰) ईद की तैयारी करके ईद की दो रक्अत नमाज़ पढ़ते थे। इसके बाद और किसी काम में लगते थे। ईद की नमाज़ पढ़ना मुसलमानों पर वाजिब है। कुछ लोग इसको फ़र्ज़ क़रार देते हैं। साल भर में कुल दो ही ईदें तो हैं। कौन मुसलमान होगा, जो ईद की नमाज़ छोड़ेगा!

ईदैन की नमाज़ का वक़्त

दोनों ईदों की नमाज़ का एक ही वक़्त है। सूरज बुलन्द होते ही वक़्त शुरू हो जाता है और ज़वाल (सूरज ढलने) से पहले तक रहता है। ईदुल-अज़हा की नमाज़ ज़रा जल्दी पढ़ी जाती है, ताकि क़ुरबानी में आसानी हो। क़ुरबानी नमाज़ के बाद ही की जाती है। नमाज़ से पहले क़ुरबानी करना जाइज़ नहीं। अलबत्ता ईदुल-फ़ित्र की नमाज़ ज़रा देर करके अदा की जाती है।

ईद की नमाज़ का तरीक़ा

ईद की नमाज़ के लिए जमाअत उसी तरह शर्त है, जिस तरह नमाज़ के लिए वुज़ू शर्त है। जिस तरह बिना वुज़ू के कोई नमाज़ नहीं हो सकती, उसी तरह बग़ैर जमाअत ईद की नमाज़ नहीं हो सकती। इसी लिए तो हम बहुत सवेरे तैयार होकर ईदगाह पहुँच जाते हैं कि अगर कहीं जमाअत छूट गई तो फिर अकेले ईद की नमाज़ नहीं पढ़ सकते।

ईदैन की नमाज़ में छह ज़ाइद वाजिब तकबीरें कही जाती हैं। पहली रक्अत में तीन ज़ाइद तकबीरें सना के बाद और क़िरअत से पहले और दूसरी रक्अत में तीन ज़ाइद तकबीरें क़िरअत के बाद और रुकूअ से पहले कही जाती हैं।

दोनों ईदों की नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा यह है कि इमाम भी और मुक़्तदी भी पहले नीयत करें कि मैं ईदुल-फ़ित्र या ईदुल-अज़हा की दो रक्अत नमाज़ वाजिब ज़ाइद छह तकबीरों के साथ पढ़ता हूँ। मुक़्तदियों को 'पीछे इस इमाम के' भी कह लेना चाहिए। नीयत करने के बाद इमाम बुलन्द आवाज़ से और मुक़्तदी आहिस्ता से 'अल्लाहु अकबर' कहकर हाथ बाँध लें और दोनों (इमाम और मुक़्तदी) आहिस्ता से 'सना' पढ़ें। सना के बाद इमाम बुलन्द आवाज़ से तकबीर कहकर दोनों हाथ कानों तक उठाए और छोड़ दे। मुक़्तदी भी

आहिस्ता से तकबीर कहते हुए ऐसा ही करें। दूसरी बार इमाम बुलन्द आवाज़ में तकबीर कहते हुए दोनों हाथ कानों तक ले जाए और छोड़ दे। मुक़्तदी भी आहिस्ता से तकबीर कहते हुए ऐसा ही करें। तीसरी बार इमाम और मुक़्तदी तकबीर कहकर हाथ उठाएँ और इस बार हाथ न छोड़ें, बल्कि बाँध लें। अब इमाम आहिस्ता से 'तअव्वुज़' और 'तसमिया' पढ़े और बुलन्द आवाज़ से सूरा फ़ातिहा और क़ुरआन की कोई सूरा पढ़े फिर रुकूअ़ और सजदे करके, क़ायदे के मुताबिक़ एक रक्अत पूरी करे।

दूसरी रक्अत में खड़े होकर इमाम पहले सूरा फ़ातिहा और कोई दूसरी सूरा बुलन्द आवाज़ से पढ़े। जब सूरा पढ़ चुके तो रुकूअ में न जाए बल्कि तीन बार तकबीर कहकर दोनों हाथ कानों तक उठाए और छोड़ दे। मुक़्तदी भी आहिस्ता से तकबीर कहते हुए ऐसा ही करें। चौथी बार इमाम बुलन्द आवाज़ से तकबीर कहकर रुकूअ में चला जाए और मुक़्तदी भी आहिस्ता से तकबीर कहते हुए ऐसा ही करें। फिर हस्बे-दस्तूर नमाज़ पूरी कर लें।

हमें ईद की नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा मालूम है और हम इसी तरह ईदैन की नमाज़ पढ़ते हैं। नमाज़ के बाद इमाम मिम्बर पर खड़े होकर ख़ुतबा पढ़ते हैं और हम ख़ामोशी के साथ सुनते हैं। ख़ुतबा सुनना भी बहुत ज़रूरी है। ईदुल-फ़ित्र के ख़ुतबे में इमाम साहब हम्दो-सना के बाद फ़ितरे के एहकाम बताते हैं। नेक कामों पर उभारते और बुरे कामों के अंजाम से डराते हैं। ईदुल-अज़हा के ख़ुतबे में क़ुरबानी और तकबीरे-तशरीक़ वग़ैरह के एहकाम बताते हैं। हज का शौक़ दिलाते हैं, हज़रत इबराहीम (अलैहि०) और हज़रत इसमाईल (अलैहि०) का वाक़िआ सुनाकर इस्लाम पर मर-मिटने का जज़्बा पैदा करते हैं।

इमाम साहब ख़ुतबे में बार-बार तकबीरें पढ़ते हैं, नौ बार पहले ख़ुतबे में और सात बार दूसरे ख़ुतबे में और तकबीर ही से ख़ुतबा शुरू करते हैं।

ईदुल-फ़ित्र के दिन हम नमाज़ से पहले फ़ितरा अदा करते हैं ताकि हमारे तमाम ग़रीब भाई भी बेफ़िक्री के साथ ईद की ख़ुशी में हमारे साथ शरीक हो सकें। ईदुल-अज़हा में क़ुरबानी का गोश्त तक़सीम करते हैं, ताकि सब लोग क़ुरबानी का गोश्त खाएँ और ख़ुशी में शरीक हों।

अय्यामे-तशरीक़

अरबी महीने 'ज़िलहिज्जा' की नौवीं तारीख़ को 'अरफ़ा' कहते हैं, दसवीं तारीख़ को ईद होती है और ग्यारहवीं, बारहवीं और तेरहवीं तारीख़ों को 'अय्यामे-तशरीक़' कहते हैं।

ज़िलहिज्जा की नौवीं तारीख़ अरफ़े के दिन फ़ज्र की नमाज़ से लेकर ज़िलहिज्जा की तेरहवीं तारीख़, अस्र की नमाज़ तक हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद एक बार बुलन्द आवाज़ से तकबीरे-तशरीक़ पढ़ना इमाम और मुक़्तदी दोनों पर वाजिब है। अलबत्ता, औरतों पर तकबीरे-तशरीक़ आहिस्ता आवाज़ में वाजिब है। तकबीरे-तशरीक़ वही है जो ईदगाह जाते वक़्त पढ़ते हैं और इमाम साहब ख़ुतबे में भी पढ़ते हैं "अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर वलिल्लाहिल हम्द।'

ईदैन के बारे में याद रखने की बातें

① ईदैन की नमाज़ पढ़ना मुसलमानों पर वाजिब है।

② ईदैन की नमाज़ में दो रक्अतें पढ़ी जाती हैं और नमाज़ के बाद ख़ुतबा होता है।

③ ईदैन की नमाज़ में न अज़ान होती है और न इक़ामत।

④ ईदुल-फ़ित्र में कुछ मीठा खाकर ईदगाह जाना सुन्नत है और ईदुल-अज़हा में बग़ैर खाए जाना सुन्नत है।

⑤ ईदैन की नमाज़ ईदगाह में पढ़ना सुन्नत है और ईदगाह तक पैदल जाना भी सुन्नत है।

⑥ ईदगाह में नमाज़ से पहले या नमाज़ के बाद कोई दूसरी नमाज़ पढ़ना मना है।

⑦ ईदैन की नमाज़ों में छह या बारह ज़ाइद तकबीरें कही जाती हैं।

⑧ दोनों ईदों में एक रास्ते से ईदगाह जाना और दूसरे रास्ते से आना, ईदुल-फ़ित्र में ईदगाह जाते हुए रास्ते में आहिस्ता-आहिस्ता और ईदुल-अज़हा में बुलन्द आवाज़ से तकबीर कहते हुए जाना सुन्नत है।

⑨ नौ ज़िलहिज्जा फ़ज्र की नमाज़ से लेकर तेरह ज़िलहिज्जा अस्र की नमाज़ तक हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद तकबीरे-तशरीक़ पढ़ना वाजिब है।

⑩ ईदैन की नमाज़ के लिए जमाअत शर्त है। इसलिए जल्द से जल्द ईदगाह पहुँच जाना चाहिए, क्योंकि अगर जमाअत हो गई तो फिर तनहा नहीं पढ़ सकते।

अभ्यास

(क) उत्तर दीजिए :

1. ईदुल-फ़ित्र और ईदुल-अज़हा हम क्यों मनाते हैं?
2. क़ुरबानी क्यों की जाती है?
3. ईद की नमाज़ का क्या हुक्म है?
4. ईद की नमाज़ का वक़्त क्या है?
5. ईद के ख़ुतबे की क्या अहमियत है?
6. सदक़ए-फ़ित्र क्यों अदा किया जाता है?
7. किन तारीख़ों को 'अय्यामे-तशरीक़' कहते हैं?
8. 'तकबीरे-तशरीक़' क्या है?

(ख) ख़ाली जगहों को भरिए :

1. ईदुल-फ़ित्र के दिन हम नमाज़ से पहले.........................अदा करते हैं।
2. ईदैन की नमाज़ में.....................नमाज़ के बाद पढ़ा जाता है।
3. नमाज़ से पहले या नमाज़ के बाद कोई दूसरी नमाज़ पढ़ना................है।
4. ईदैन की नमाज़ के लिए न अज़ान दी जाती है, न..............कही जाती है।
5. ईदुल-फ़ित्र और ईदुल-अज़हा की नमाज़ें हम.................में पढ़ते हैं।
6. अल्लाह तआला ने प्यारे रसूल (सल्ल॰) पर..............जैसी नेमत नाज़िल फ़रमाई।
7. हमारी नमाज़ें और हमारी.................हमारी ज़िन्दगी और मौत सब कुछ अल्लाह के लिए है।
8. तकबीरे-.....................फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद ऊँची आवाज़ से कहनी चाहिए।

(ग) जोड़े लगाइए :

	(अ)	(ब)
1.	तकबीरे-तशरीक़	नौवीं ज़िलहिज्जा
2.	ईदुल-फ़ित्र	दसवीं ज़िलहिज्जा
3.	ईदुल-अज़हा	एक शव्वाल
4.	अरफ़ा	नौ ज़िलहिज्जा की फ़ज्र से तेरह ज़िलहिज्जा की अस्र तक ऊँची आवाज़ से पढ़ी जानेवाली तकबीर।

कुछ और काम

1. ईदुल-अज़हा और ईदुल-फ़ित्र पर आठ-आठ वाक्यों का लेख लिखिए।

6

जनाज़े की नमाज़

मौत से कौन बच सकता है? मौत तो हर एक को आएगी, अगर हम मज़बूत क़िलों में भी छिप जाएँ तब भी आएगी। अभी कुछ ही दिनों की बात है, रशीद के दादा अब्बा का इन्तिक़ाल हो गया। हाफ़िज़ साहब, अल्लाह बख़्शे, बड़े ही नेक आदमी थे। मुहल्ले का एक-एक आदमी उनकी तारीफ़ करता। हाफ़िज़ साहब दिन भर घर के बाहर चारपाई डाले बैठे रहते और लोगों को अच्छी बातें बताते रहते थे। मैं भी उन्हें देखने पहुँचा, घर की औरतें चीख़-चीख़कर रो रही थीं। इतनी देर में रशीद के अब्बू आ गए। उन्होंने औरतों से कहा कि माँओ और बहनो! अपनों से किसे मुहब्बत नहीं होती, अज़ीज़ों और बुज़ुर्गों के जुदा होने का ग़म भी होता है, आँसू भी निकलते हैं। लेकिन प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ज़ोर-ज़ोर से रोने को मना फ़रमाया है। अल्लाह की अमानत थी, उसने ले ली। जब किसी के मरने की ख़बर सुनो तो यह दुआ पढ़ो :

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

"हम सब अल्लाह ही के हैं और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है।"

और मरनेवाले के लिए मग़फ़िरत और बख़्शिश की दुआ करो। सदक़ा और ख़ैरात करो।

कुछ देर बाद हाफ़िज़ साहब को गुस्ल दिया गया, कफ़न पहनाया गया और जनाज़ा जामा मस्जिद के चौक में पहुँचाया गया। जनाज़े में बहुत से लोग थे। जहाँ तक नज़र जाती थी आदमी ही आदमी नज़र आ रहे थे। हाफ़िज़ साहब थे भी तो बड़े सच्चे और भले आदमी! सबके साथ बड़ी मुहब्बत से पेश आते थे और अच्छा सुलूक करते थे। इमाम साहब आए और जनाज़े के सामने खड़े हो गए। सफ़ें बनवाई गईं। बड़ी लम्बी-लम्बी सात सफ़ें बनीं। जनाज़े की नमाज़ पढ़ी गई। नमाज़ अदा करने के बाद मय्यत को क़ब्रिस्तान में दफ़न कर दिया गया और दफ़न करके लोग चले आए।

ज़नाज़े की नमाज़ का हुक्म

जनाज़े की नमाज़ फ़र्ज़े-किफ़ाया है। फ़र्ज़े-किफ़ाया का मतलब यह है कि अगर बस्ती के कुछ लोग इसे पढ़ लें और कुछ न पढ़ें तो सबके ज़िम्मे से फ़र्ज़ अदा हो जाएगा। लेकिन अगर बस्ती के किसी भी आदमी ने न पढ़ी तो सब लोग गुनाहगार होंगे। मय्यत की ख़बर मिलने पर सबको शरीक होने की कोशिश करनी चाहिए, ताकि ज़्यादा से ज़्यादा मुसलमान मिलकर मय्यत के लिए अल्लाह तआला से बख़्शिश की दुआ करें। एक दिन हम भी मर जाएँगे और लोग हमारे जनाज़े की नमाज़ पढ़ेंगे। अगर हमारी यह ख़्वाहिश है कि ज़्यादा से ज़्यादा लोग मिलकर हमारे जनाज़े की नमाज़ पढ़ें, तो हमें भी तो दूसरों के जनाज़े की नमाज़ में शरीक होना चाहिए।

नमाज़ की शर्तें

'सच्चा दीन, भाग-2' में हम नमाज़ की शर्तें पढ़ चुके हैं। जनाज़े की नमाज़ के लिए भी वही शर्तें हैं। बस इतना फ़र्क़ है कि जनाज़े के लिए वक़्त की शर्त नहीं है। जनाज़े की नमाज़ मुसलमानों के ख़लीफ़ा को पढ़ानी चाहिए या फिर शहर के क़ाज़ी को, और अगर ये लोग न हों तो फिर मय्यत के घरवालों में जो बुज़ुर्ग ज़्यादा इल्मवाले और दीनदार हों वे पढ़ाएँ। मुहल्ले के इमाम साहब भी घरवालों की इजाज़त से जनाज़े की नमाज़ पढ़ा सकते हैं।

जनाज़े की नमाज़ में दो बातें फ़र्ज़ हैं :

① चार बार अल्लाहु अकबर कहना।

② क़याम, यानी खड़े होकर जनाज़े की नमाज़ पढ़ना।

जनाज़े की नमाज़ में तीन बातें सुन्नत हैं :

❶ अल्लाह तआला की हम्द व तारीफ़ करना।

❷ प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर दुरूद भेजना।

❸ मय्यत के लिए दुआ करना।

जनाज़े की नमाज़ दूसरी नमाज़ों से बिलकुल ही अलग है। इसमें न रुकूअ है, न सजदा और क़अदा। जिस तरह दूसरी नमाज़ों के लिए 'जमाअत' शर्त नहीं है, उसी तरह जनाज़े की नमाज़ के लिए भी 'जमाअत' शर्त नहीं है। अगर एक भी आदमी हो तो जनाज़े

की नमाज़ पढ़ ले। अगर जमाअत हो तो बहुत ही अच्छा है कि बहुत-से मुसलमान जमा होकर अल्लाह तआला से मय्यत के लिए दुआ करें। लेकिन जनाज़े की नमाज़ में इस ख़याल से देर करना मुनासिब नहीं है कि जमाअत के लिए बहुत-से लोग जमा हो जाएँ।

जनाज़े की नमाज़ का तरीक़ा

जनाज़े को सामने रखकर इमाम उसके सीने के सामने खड़ा हो जाए और कम से कम तीन सफ़ें बनाई जाएँ। फिर इमाम और मुक़्तदी जनाज़े की नमाज़ की नीयत करें।

जनाज़े की नमाज़ की नीयत :

नवैतु अन उसल्लि-य सलातल जनाज़ति लिल्लाहि तआल-व दुआउ लिल मय्यित।

"मैंने जनाज़े की नमाज़ का इरादा किया। नमाज़ अल्लाह के लिए और दुआ मय्यत के लिए।"

फिर इमाम और मुक़्तदी दोनों हाथ उठाकर अल्लाहु अकबर कहते हुए नीयत बाँध लें। इमाम बुलन्द आवाज़ से तकबीर कहे और मुक़्तदी आहिस्ता से। फिर इमाम और मुक़्तदी दोनों सना पढ़ें। जनाज़े की नमाज़ में सना पढ़ते वक़्त 'व तआला जद्दुक' के बाद 'व जल-ल सनाउ-क' भी पढ़ना चाहिए।

सना

सुब्हा-न कल्ला हुम-म व बि हम्दि-क, व तबा-र कस्मु-क, व तआला जद्दु-क, व जल-ल सनाउ-क व ला इला-ह ग़ैरु-क।

"ऐ अल्लाह तू पाक है। हर तरह की तारीफ़ तेरे लिए है। तेरा नाम बड़ी बरकतवाला है और तेरी शान बहुत ऊँची है और तेरी तारीफ़ बहुत ख़ूब है। तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।"

सना पढ़ने के बाद बग़ैर हाथ उठाए इमाम बुलन्द आवाज़ से और मुक़्तदी आहिस्ता से अल्लाहु अकबर कहें। फिर आहिस्ता से इमाम व मुक़्तदी दुरूद पढ़ें। दुरूद पढ़ने के बाद इमाम और मुक़्तदी बग़ैर हाथ उठाए फिर तकबीर कहें। इमाम ज़ोर से और मुक़्तदी आहिस्ता से। अगर मय्यत बालिग़ मर्द या औरत की है तो इमाम और मुक़्तदी दोनों आहिस्ता से यह दुआ पढ़ें :

बालिग़ मय्यत की दुआ

अल्लाहुम्मग़फ़िर लि हय्यिना व मय्यितिना व शाहिदिना व ग़ाइबिना व सग़ीरिना व कबीरिना व ज़-क-रिना व उन्साना, अल्लाहुम-म मन अहयैतहू मिन्ना फ़ अह यिही अलल इस्लाम, व मन तवफ़्फ़ैतहू मिन्ना फ़ तवफ़्फ़हू अलल ईमान।

"ऐ अल्लाह बख़्श दे हमारे ज़िन्दों को और हमारे मुर्दों को और हमारे उन लोगों को जो हाज़िर हैं और उनको जो ग़ायब हैं। और हमारे छोटों को और बड़ों को और हमारे मर्दों और औरतों को। ऐ अल्लाह! तू हममें से जिसको ज़िन्दा रखे तो उसको दीने इस्लाम पर ज़िन्दा रख और हममें से जिसको तू मौत दे तो ईमान पर उसका ख़ात्मा फ़रमा।"

कुछ लोग यह दुआ पढ़ते हैं–

अल्लाहुम्मग़फ़िर लहू वर हमहू व आफ़िहू वअ फु अन्हू व अकरिम नुज़ुलहू व वस्सिअ मद ख़-लहू वग़सिलहू बिलमाइ वस्सलजि वल बरदि व मिनल ख़ताया, कमा युनक़्क़स्सौबुल अब्यज़ु मिनद द-न-सि वब्दिल्हु ख़ैर म मिन दारिही व अह्लन ख़ैर म मिन ज़ौजिही व अद ख़िल्हुल जन्न-त व अ-इज़्हू मिन अज़ाबिल क़ब्रि व अज़ाबिन्नार।

"ऐ अल्लाह इस मुर्दे को बख़्श दे, इसपर रहम फ़रमा और इसकी ख़ताओं को माफ़ कर दे और अच्छी-अच्छी नेमतों से इसका इस्तिक़बाल फ़रमा, और इसकी क़ब्र को कुशादा कर और धो दे इसके गुंनाह पानी से, बर्फ़ से और ओलों से और इसको गुनाहों से इस तरह साफ़ कर दे जिस तरह सफ़ेद कपड़ा मैल-कुचैल से पाक-साफ़ हो जाता है। और इसको दुनिया के घर से ज़्यादा अच्छा घर अता कर और दुनिया के रिश्तेदारों से ज़्यादा अच्छे रिश्तेदार दे और दुनिया की बीवी से ज़्यादा अच्छी बीवी दे और इसको जन्नत में दाख़िल फ़रमा। और इसको क़ब्र और जहन्नम के अज़ाब से बचा ले।"

लेकिन अगर मय्यत नाबालिग़ लड़के की है तो यह दुआ पढ़ें :

नाबालिग़ लड़के की दुआ

अल्लाहुम्मज-अलहु लना फ़-र-तँव-वज् अल हु लना अजूरँव-व ज़ुख़रँव-वज् अल हु लना शाफ़िअँव-व मुशफ़्फ़आ॰

"ऐ अल्लाह! तू इस लड़के को हमारे लिए फ़र्त बना दे (यानी वह हमसे पहले अपने असली घर में पहुँचकर हमारे लिए आराम का सामान तैयार करे) और इसको हमारे लिए अज्र और आख़िरत का सामान बना दे और इसको हमारे लिए ऐसा सिफ़ारिश करनेवाला बना दे और इसकी सिफ़ारिश को क़बूल फ़रमा।"

अगर मय्यत नाबालिग़ लड़की की है तो यह दुआ पढ़ें :

नाबालिग़ लड़की की दुआ

अल्लाहुम्मज-अलहा लना फ़-र-तँव-वज् अलहा लना अजूरँव व ज़ुख़रँव-वज् अलहा लना शाफ़िअँव-व मुशफ़्फ़आ॰

"ऐ अल्लाह! तू इस लड़की को हमारे लिए फ़र्त बना दे कि हमसे पहले पहुँचकर हमारे लिए आराम का हर सामान तैयार कर दे और इसको हमारे लिए आख़िरत में सवाब और काम आनेवाली बना दे और इसको हमारे लिए सिफ़ारिश करनेवाली बना दे जिसकी सिफ़ारिश क़बूल की जाए।"

फिर चौथी बार हाथ उठाए बग़ैर तकबीर कहकर इमाम और मुक़्तदी सलाम फेर दें।

जिस तरह ज़िन्दा मुसलमानों का हमपर हक़ है उसी तरह मुर्दों का भी हमपर हक़ है। जनाज़े की नमाज़ में कोशिश करके शरीक होना चाहिए। इसके अलावा मुर्दे के लिए बख़्शिश की दुआ भी करते रहना चाहिए। अल्लाह के नाम पर सदक़ा और ख़ैरात करनी चाहिए। लेकिन ऐसी बातों से सख़्ती से बचा जाय जो प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने न बताई हों।

अभ्यास

(क) उत्तर दीजिए :

1. जनाज़े की नमाज़ का क्या हुक्म है?
2. जनाज़े की नमाज़ कौन पढ़ाए?
3. जनाज़े की नमाज़ में कितने फ़र्ज़ और कितनी सुन्नतें हैं?
4. जनाज़े की नमाज़ का तरीक़ा क्या है?
5. जनाज़े की नमाज़ में कितनी तकबीरें कही जाती हैं?
6. मुर्दों का हमपर क्या हक़ है?
7. फ़र्ज़े-किफ़ाया से क्या मुराद है?

(ख) ख़ाली जगहों को भरिए :

1. किसी के मरने की ख़बर सुनने पर.......................................पढ़ना चाहिए।
2. जनाज़े की नमाज़......................है।
3. जनाज़े की नमाज़ दूसरी नमाज़ों से......................है।
4. जनाज़े की नमाज़ के लिए भी......................शर्त नहीं है।

(ग) सही वाक्य पर (√) और ग़लत पर (×) का निशान लगाइए :

1. किसी के मरने पर चीख़-चीख़कर रोने से प्यारे नबी (सल्ल॰) ने मना फ़रमाया है। (   )
2. जनाज़े की नमाज़ के लिए वक़्त की शर्त नहीं है। (   )
3. मुहल्ले के इमाम साहब घरवालों की इजाज़त के बग़ैर ही जनाज़े की नमाज़ पढ़ा सकते हैं। (   )
4. जनाज़े की नमाज़ में कोशिश करके शरीक होना चाहिए। (   )

कुछ और काम

1. जनाज़े की नमाज़ की दुआएँ और उनका तर्जुमा याद करके दर्जे में सुनाइए।

7

ज़कात

नमाज़ और रोज़े की तरह ज़कात भी मुसलमानों पर फ़र्ज़ है। फ़र्क़ सिर्फ़ यह है कि नमाज़ और रोज़ा तो हर ग़रीब और अमीर मुसलमान पर फ़र्ज़ है और ज़कात सिर्फ़ मालदारों पर फ़र्ज़ है। नमाज़ और रोज़ा जिस्मानी इबादतें हैं और ज़कात माली इबादत है। नमाज़ और रोज़ा अल्लाह के हुक़ूक़ हैं और ज़कात में बन्दों का हक़ भी शामिल है। ज़कात इस्लाम का एक रुक्न (स्तंभ) है। इसका फ़र्ज़ होना क़ुरआन मजीद की स्पष्ट दलीलों से साबित है। जो आदमी इसका इनकार करे वह मुसलमान ही नहीं, और जो मालदार होते हुए भी ज़कात न अदा करे वह बहुत ही गुनाहगार है।

क़ुरआन मजीद से उन्हीं लोगों को हिदायत मिलती है जो नमाज़ पढ़ते हैं और ज़कात देते हैं। ज़कात की अहमियत इससे ज़्यादा और क्या होगी कि जो लोग ज़कात अदा नहीं करते उन्हें हिदायत ही नहीं मिल सकती। क़ुरआन मजीद में लगभग बयासी (82) जगह ज़कात की ताकीद की गई है। और बत्तीस (32) जगह तो नमाज़ जैसी इबादत के साथ इसका ज़िक्र किया गया है। ज़कात अदा करने को मुसलमानों की पहचान बताया गया है और ज़कात न अदा करना मुशरिकों और मुनाफ़िक़ों की सिफ़त बताया गया है। ज़कात अदा करनेवालों को जन्नत में हर तरह की नेमतें मिलेंगी और ज़कात से जी चुरानेवालों को ऐसा दर्दनाक अज़ाब दिया जाएगा कि उसके सुनने से ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। क़ुरआन मजीद में है कि जो लोग सोना-चाँदी जमा करते हैं और उसे अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते, उन्हें एक दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दो कि उनका जमा किया हुआ सोना-चाँदी क़ियामत के दिन जहन्नम की आग में तपाया जाएगा, फिर उसी से उन बदबख़्तों की पेशानियों, पहलुओं और पीठों को दाग़ा जाएगा और उनसे कहा जाएगा कि यह वही सोना-चाँदी है, जो तुमने जमा किया था, अब अपने जमा किए हुए का मज़ा चखो।

(क़ुरआन, 9:34,35)

यह सज़ा तो क़ुरआन मजीद में है। हदीस शरीफ़ में भी बहुत ही सख़्त सज़ा बयान की गई है। प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया :

> "जिन लोगों को अल्लाह तआ़ला ने माल दिया और वे उसकी ज़कात अदा नहीं करते, क़ियामत के दिन उनका यह माल एक बहुत ही ज़हरीले और गंजे साँप की शक्ल में सामने आएगा। वह उनकी गर्दनों में लिपट जाएगा और उनके जबड़ों को नोच-नोचकर कहेगा : मैं तुम्हारा जमा किया हुआ माल हूँ, मैं तुम्हारा ख़ज़ाना हूँ।"

तौबा-तौबा कैसी सख़्त सज़ा है! कौन मुसलमान होगा जो इस सज़ा को सुनकर भी ज़कात अदा न करे :

प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बाद हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) जब ख़लीफ़ा हुए तो कुछ लोगों ने ज़कात देने से इनकार कर दिया। आपने उनसे जिहाद करने का एलान कर दिया। हज़रत उमर (रज़ि०) बोले, "आप उनसे कैसे जिहाद कर सकते हैं। ये लोग तो 'कलिमा' पढ़ते हैं।" हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने फ़रमाया, "ख़ुदा की क़सम! जो लोग नमाज़ और ज़कात में फ़र्क़ समझे, मैं उनके ख़िलाफ़ जिहाद करूँगा। ख़ुदा की क़सम! अगर वे ऊँट की रस्सी भी रोकेंगे तो मैं उनसे जिहाद करूँगा।" इस वाक़िए से मालूम होता है कि ज़कात की कितनी अहमियत है।

ज़कात अदा करने में हमारे लिए दीन-दुनिया की भलाई है। ज़कात देने से हमारा माल पाक (पवित्र) हो जाता है, हमारे दिल से माल की मुहब्बत कम होती है। इससे ग़रीब भाइयों की मदद होती है, लोगों में हमदर्दी का जज़्बा पैदा होता है और अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ माल ठीक-ठीक तक़सीम हो जाता है। यह नहीं कि कुछ लोग तो कोठियाँ बनवाएँ और कुछ लोग दाने-दाने को तरसें। प्यारे सहाबा (रज़ि०) का तो यह हाल था कि वे ज़रूरत से ज़्यादा एक पैसा भी अपने पास नहीं रखते थे। हज़रत अबू-ज़र ग़िफ़्फ़ारी (रज़ि०) की तो यह आदत थी कि जहाँ कुछ लोगों को इकट्ठा देखते तो ज़कात के बारे में ज़रूर नसीहत करते।

ज़कात का मतलब

ज़कात के मानी बढ़ने और पाक होने के हैं और शरीअ़त में सोने-चाँदी और कारोबारी सामान वग़ैरह पर अगर एक साल गुज़र जाए तो उनकी क़ीमत का चालीसवाँ हिस्सा ग़रीबों और मुहताजों को देने का नाम ज़कात है। शरीअत में इस माली इबादत को ज़कात इसलिए कहा जाता है कि इससे ज़कात देनेवाले का बाक़ी माल पाक भी हो जाता

है और उसमें बरकत भी होती है।

ज़कात फ़र्ज़ होने की शर्तें

ज़कात फ़र्ज़ होने के लिए छह बातों का पाया जाना ज़रूरी है—

① **मुसलमान होना :** ग़ैर-मुस्लिमों पर ज़कात नहीं। अगर वे किसी इस्लामी हुकूमत में रहते हों, तो उनसे ज़कात नहीं ली जाएगी।

② **आक़िल होना :** दीवाने और पागल पर ज़कात नहीं है।

③ **बालिग़ होना :** नाबालिग़ बच्चों के पास चाहे कितना ही माल हो, उसपर ज़कात नहीं है।

④ **निसाबवाला होना।**

⑤ **पूरे साल का गुज़रना :** यानी माल-अस्बाब और सोना-चाँदी एक साल तक आदमी के पास रहा हो।

⑥ **बुनियादी ज़रूरतों से ज़्यादा होना :** खाना, कपड़ा, रहने का मकान और पेशे के औज़ार, ये सब बुनियादी ज़रूरतें हैं।

निसाब

माल-अस्बाब, जानवर और सोना-चाँदी की वह तयशुदा मिक़दार, जिसपर साल भर गुज़रने से ज़कात देनी होती है, उसको निसाब कहते हैं। सोना-चाँदी और जानवरों का अलग-अलग निसाब है। ग़रीब और मिस्कीन पर ज़कात नहीं है।

चाँदी-सोने का निसाब

अगर किसी के पास साढ़े बावन[1] तोले चाँदी हो और उसपर पूरा साल गुज़र जाए, या साढ़े सात तोले सोना हो और पूरा साल गुज़र जाए तो उसका चालीसवाँ हिस्सा ज़कात में देना चाहिए। इसका आसान तरीक़ा यह है कि चाँदी या सोने की क़ीमत लगा ली जाए और ढाई रुपये प्रति सैकड़ा के हिसाब से ज़कात अदा की जाए। सिक्कों और नोटों के निसाब का अन्दाज़ा भी सोने-चाँदी से किया जाएगा। जितनी क़ीमत में साढ़े बावन तोले

1. कुछ लोगों की तहक़ीक़ यह है कि चाँदी का निसाब 36 तोले साढ़े पाँच माशे है और सोने का निसाब 5 तोले ढाई माशे है।

चाँदी मिलती है अगर किसी के पास उतनी क़ीमत के नोट हों और साल गुज़र जाए तो ज़कात वाजिब होगी।

ज़ेवरों पर भी ज़कात देना फ़र्ज़ है। एक बार प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास दो औरतें हाथों में कंगन पहने हुए आईं। आप (सल्ल॰) ने पूछा, "इनकी ज़कात भी दी है?" बोलीं, "नहीं।" तो आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "क्या तुम तैयार हो कि इसके बदले तुम्हें आग के कंगन पहनाए जाएँ?" बोलीं : "नहीं।" आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "तो फिर इसकी ज़कात दिया करो।"

तिजारत के सामान पर भी ज़कात देना फ़र्ज़ है। अगर तिजारत के सामान की क़ीमत साढ़े बावन तोले चाँदी की क़ीमत के बराबर पहुँच जाए और साल भर तक इतनी क़ीमत का सामान मौजूद रहा हो तो ज़कात देनी होगी।

जानवरों[1] का निसाब

अगर किसी के पास चालीस भेड़ें या बकरियाँ हों तो एक भेड़ या एक बकरी ज़कात में देनी होगी और एक सौ बीस तक एक ही बकरी या भेड़ देनी होगी। फिर एक सौ इक्कीस से दो सौ तक दो बकरियाँ या दो भेड़ें देनी होंगी। दो सौ एक से तीन सौ निन्यानवे तक तीन भेड़ें या तीन बकरियाँ और चार सौ में चार भेड़ें या चार बकरियाँ, फिर चार सौ से ज़्यादा में हर सैकड़े पर एक बकरी या भेंड़ बढ़ती रहेगी।

गाय-भैंस जब तीस हों तो एक साल का बच्चा देना होगा और जब चालीस हो जाएँ तो पूरे दो साल का बच्चा देना होगा। फिर 41 से 59 तक कुछ वाजिब न होगा। 60 पूरे होने पर 30 के दो निसाब हो जाएँगे। लिहाज़ा एक साल के दो बच्चे देने होंगे, फिर 60 से ज़्यादा हर 30 पर एक साल का बच्चा और हर चालीस पर दो साल का बच्चा देना होगा।

ऊँट अगर किसी के पास पाँच हों तो एक बकरी, दस हों तो दो बकरियाँ, पन्द्रह हों तो तीन, बीस हों तो चार बकरियाँ ज़कात में देनी होंगी और पच्चीस ऊँटों पर एक साल का ऊँट का बच्चा ज़कात में देना होगा।

1. आम मैदानों में चरनेवाले पालतू जानवर जो नस्ल बढ़ाने और दूध के लिए पाले जाते हैं, इनको 'साइमा' कहते हैं। उनपर ज़कात वाजिब है।

ज़मीन की पैदावार का निसाब—उश्र

ज़मीन की पैदावार में जो ज़कात दी जाती है उसको 'उश्र' कहते हैं। इसके अहकाम (नियम) ज़कात से ज़रा अलग हैं। क़ुरआन मजीद में भी इसका ज़िक्र है—"अल्लाह की राह में ख़र्च करो अपनी पाक कमाइयों में से और ज़मीन से हमने जो पैदावार तुमको दी है उसमें से भी।" और फ़रमाया, "जब उनमें फल आ जाएँ तो ख़ुद भी खाओ और पैदावार का हक़ (यानी उश्र) भी अदा करो।" प्यारे रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो कुछ ज़मीन से उगे उसमें सदक़ा (दान) है।" सहाबा (रज़ि०) ग़ल्ला, फल, शहद हर चीज़ का उश्र देते थे। उश्र हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है। इसमें आक़िल, बालिग़ की कोई शर्त नहीं और न ही निसाब[1] और साल गुज़रने की शर्त है।

आधा उश्र

अगर पैदावार बग़ैर आबपाशी या सिंचाई के यानी बारिश के पानी से हुई हो तो कुल पैदावार का दसवाँ हिस्सा यानी दस प्रतिशत देना होगा। और अगर आबपाशी के ज़रीए ये सिंचाई की गई हो तो कुल पैदावार का बीसवाँ हिस्सा यानी पाँच प्रतिशत देना होगा।

ज़कात किन लोगों को दी जाए

जिन लोगों को ज़कात दी जाती है वे आठ क़िस्म के हैं :

1. **फ़क़ीर :** जिसके पास आमदनी का कोई ज़रीआ तो हो लेकिन उससे उसकी ज़रूरतें पूरी न होती हों, या सैलाब, तूफ़ान और फ़साद वग़ैरह की वजह से अचानक सब कुछ तबाह हो जाए।
2. **मिसकीन :** जिसके पास खाने को न हो, और न वह कमा सकता हो, बे-सहारा, यतीम और बेवाएँ भी इसमें शामिल हैं।
3. **आमिलीन :** यानी ज़कात वुसूल करके लानेवाले।

---

1. इमाम शाफ़ई (रह०) निसाब के क़ाइल हैं। उनके नज़दीक 5 वसक़ से कम में उश्र वाजिब नहीं होता। एक वसक़ सात साअ के बराबर होता है। और साअ का वज़न एक सेर छह छटांक के लगभग होता है। (इल्मुल-फ़िक़ह)

❹ **मुअल्लि फ़तुल-क़ुलूब :** जिनको इस्लाम का शौक़ दिलाने या इस्लाम पर जमाने की कोशिश की जाए।

❺ **अर्रिक़ाब :** ग़ुलाम या जो लोग जंग में गरिफ़्तार करके क़ैदी बना लिए जाएँ।

❻ **ग़ारिम :** क़र्ज़दार लोग, जो अपना क़र्ज़ अदा न कर सकते हों।

❼ **फ़ी सबीलिल्लाह :** जो लोग दीन को ग़ालिब करने के लिए दुश्मनों से लड़ें और दीन की ख़िदमत करें उनपर ख़र्च करना।

❽ **इब्नुस्सबील :** यानी मुसाफ़िर। मुसाफ़िर चाहे अपने घर का खाता-पीता हो, अगर सफ़र में उसे ज़रूरत पेश आ जाए तो उसको ज़कात दी जा सकती है।

ज़कात मुसलमानों के बैतुलमाल (ख़ज़ाने) में जमा करनी चाहिए और बैतुलमाल से इन आठ क़िस्म के लोगों पर ख़र्च होनी चाहिए। अगर बैतुलमाल न हो तो बैतुलमाल क़ायम करने की कोशिश करनी चाहिए। और जब तक बैतुलमाल न हो ख़ुद ही उन लोगों को दे देनी चाहिए। ज़कात चाँद के महीने से देनी चाहिए और देते वक़्त यह नीयत कर लेनी चाहिए कि यह माल अल्लाह के वास्ते ज़कात में दे रहा हूँ। जिसको ज़कात दी जा रही है, उसको बताना ज़रूरी नहीं।

अभ्यास

(क) उत्तर दीजिए :

1. ज़कात की तारीफ़ क्या है?
2. ज़कात के फ़र्ज़ होने की क्या शर्तें हैं?
3. इस्लाम में ज़कात की क्या अहमियत है?
4. निसाब किसे कहते हैं? चाँदी और सोने का निसाब क्या है?
5. उश्र की तारीफ़ क्या है?
6. ज़कात कहाँ जमा करनी चाहिए?
7. क़ुरआन मजीद में कितनी जगह नमाज़ के साथ ज़कात की भी ताकीद की गई है?

(ख) ख़ाली जगहों को भरिए :

1. नमाज़ और रोज़े की तरह......................भी मुसलमानों पर फ़र्ज़ है।
2. ज़कात को.........................की पहचान बताया गया है।
3. क़ुरआन मजीद में तक़रीबन.......................जगह ज़कात की ताकीद की गई है।
4. नमाज़-रोज़ा जिस्मानी इबादतें हैं और ज़कात................है।
5. अगर पैदावार सिर्फ़ बारिश के पानी से हुई हो तो कुल पैदावार का............हिस्सा उश्र में देना होगा।
6. अगर पैदावार आबपाशी से हुई हो तो कुल पैदावार का ....हिस्सा उश्र में देना होगा।

(ग) सही वाक्य पर (√) और ग़लत पर (×) का निशान लगाइए :

1. ज़कात इस्लाम का एक रुक्न है। ( )
2. ज़कात अदा करने में दीन-दुनिया का नुक़सान है। ( )
3. ज़कात न देने को मुनाफ़िक़ों की पहचान बताया गया है। ( )
4. मुसाफ़िर को ज़कात देना जाइज़ नहीं है। ( )

8

हज

बहुत दिनों पहले हज़रत इबराहीम (अलैहिस्सलाम) और हज़रत इसमाईल (अलैहिस्सलाम) ने मक्का मुअज़्ज़मा में अल्लाह की इबादत के लिए एक घर बनाया था। उसको ख़ाना-ए-काबा या बैतुल्लाह (अल्लाह का घर) कहते हैं। बाद के ज़माने में कुछ गुमराह लोगों ने ख़ाना-ए-काबा में पत्थरों के बुत रख दिए थे और उनकी पूजा करते थे। हमारे रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ख़ाना-ए-काबा को बुतों से पाक किया और सारी दुनिया में तौहीद फैलाने और एक अल्लाह की इबादत की तालीम देने के लिए दोबारा ख़ाना-ए-काबा को मरकज़ (केन्द्र) क़रार दिया।

हज

कुछ तयशुदा दिनों में ख़ाना-ए-काबा की ज़ियारत करने और अरफ़ात के मैदान में कुछ इबादतें करने को 'हज' कहते हैं। हज इस्लाम की बड़ी अहम इबादत है। नमाज़ और रोज़ा जिस्मानी इबादतें हैं और ज़कात माली इबादत है। लेकिन हज जिस्मानी इबादत भी है और माली भी। हज मालदार, आक़िल, बालिग़ और तन्दुरुस्त मुसलमानों पर उम्र भर में सिर्फ़ एक बार फ़र्ज़ है। रास्ते का महफ़ूज़ (सुरक्षित) होना और वापसी तक बीवी-बच्चों के लिए ख़र्च का मौजूद होना भी जरूरी है और औरत के लिए यह भी ज़रूरी है कि उसके साथ सफ़र में कोई महरम (जिससे पर्दा न हो) भी हो जैसे बाप, भाई, बेटा या शौहर।

हज कब फ़र्ज़ हुआ

जब प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हिजरत करके मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले आए और मुसलमानों ने ज़रा इत्मीनान की साँस ली तो सन् 6 हिजरी में अल्लाह तआला ने हुक्म भेजा, "अल्लाह को खुश करने के लिए हज और उमरा करो।" मगर इस साल मक्का के काफ़िरों ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को हज नहीं करने दिया। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) यूँ ही वापस आ गए। सन् 10 हिजरी में आप कई हज़ार

सहाबा (रज़ि॰) के साथ मदीना मुनव्वरा से हज के लिए मक्का तशरीफ़ ले गए और एक लाख से ज़्यादा मुसलमानों के साथ आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हज अदा किया।

हज की फ़ज़ीलत

इस्लाम में हज की बड़ी फ़ज़ीलत है। क़ुरआन मजीद में है, "अल्लाह की ख़ुशनूदी के लिए उन लोगों पर हज फ़र्ज़ है जो वहाँ तक जाने की ताक़त रखते हों, और जो आदमी हज से इनकार करे तो अल्लाह को उससे कोई मतलब नहीं। अल्लाह तआला सारे जहानवालों से बेनियाज़ है।" (3:97) हदीस में भी जगह-जगह हज की फ़ज़ीलत आई है। प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "जिस आदमी ने अल्लाह तआला को ख़ुश करने के लिए हज किया और हज में तमाम बेशर्मी की बातों से अलग रहा और किसी से लड़ाई-झगड़ा न किया और न ही कोई और बुरा काम किया, तो जब वह हज से वापस होगा तो गुनाहों से ऐसा पाक-साफ़ होगा जैसा माँ के पेट से पैदा होते वक़्त था।" बेशक हज से तमाम बुराइयाँ दूर हो जाती हैं, मगर जबकि हज करनेवाले की ग़रज़ सिर्फ़ अल्लाह को ख़ुश करना हो, लोगों को दिखाना, नाम पैदा करना और दुनिया का कोई फ़ायदा हासिल करना न हो। जिहाद, इस्लाम में बड़ी अफ़ज़ल इबादत है। जिहाद अल्लाह की राह में जान लड़ा देने का नाम है। इससे बड़ी नेकी और क्या होगी। मगर प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने एक बार फ़रमाया, "औरतों के लिए 'हज' ही जिहाद है।"

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह भी फ़रमाया, "अगर किसी आदमी के पास रास्ते का ख़र्च भी हो और सवारी भी और फिर वह हज न करे, तो उसके बिना हज किए मर जाने और यहूदी या ईसाई होकर मर जाने में कोई फ़र्क़ नहीं है।" हज का बहुत बड़ा सवाब है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "हज का बदला जन्नत है।" और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "हज और उमरा करनेवाले अल्लाह के मेहमान हैं। अगर वे दुआ करते हैं तो अल्लाह उनकी दुआ क़बूल फ़रमाता है और वे मग़फ़िरत चाहते हैं तो अल्लाह तआला उनकी मग़फ़िरत फ़रमाता है।"

प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बाद सहाबा किराम (रज़ि॰) भी हज का बड़ा एहतिमाम करते थे। ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन भी अपने-अपने ज़मानों में बड़े एहतिमाम से

हज फ़रमाते थे[1]। और दूर-दूर से मुसलमान हाकिमों को बुलाकर हालात मालूम करते और मश्विरे देते थे। कोई बहुत ज़रूरी हुक्म देना होता तो हज के आम मजमे में एलान फ़रमाते, ताकि इस्लामी हुकूमत के एक-एक कोने में वह हुक्म पहुँच जाए। हज़रत उमर (रज़ि॰) ने एक बार फ़रमाया, "जो लोग क़ुदरत रखते हुए हज नहीं करते हैं, उनके ख़िलाफ़ मैं जिहाद करूँगा।" हज़रत अबू-सईद (रज़ि॰) फ़रमाते हैं, "क़ियामत उस वक़्त आएगी जब लोग ख़ाना-ए-काबा का हज करना छोड़ देंगे।"

हज की इस्तिलाहें

① **इहराम :** हज का लिबास पहनना, हज की नीयत करना और हज की दुआ पढ़ना।

② **मीक़ात :** वह इलाक़ा जहाँ पहुँचकर हज करनेवाले इहराम बाँधते हैं।

③ **तलबियः :** इहराम बाँधने के बाद से हज ख़त्म होने तक उठते-बैठते और हज के अरकान अदा करते वक़्त जो दुआ पढ़ते हैं उसको तलबिया कहते हैं। तलबिया यह है :

लब्बैक, अल्लाहुम-म लब्बैक, लब्बैक ला शरी-क ल-क लब्बैक, इन्नल हम-द वन्नेअ्-म-त ल-क वल मुल्-क, ला शरी-क-ल-क।

"हाज़िर हूँ ऐ अल्लाह! मैं तेरी पुकार पर तेरे दरबार में हाज़िर हूँ। तेरा कोई साझी नहीं। मैं तेरे दर पर हाज़िर हूँ। बेशक तारीफ़ तेरे लिए है और नेमत भी तेरी ही है, बादशाहत भी तेरे ही लिए है। तेरा कोई साझी नहीं।"

④ **तहलील :** 'ला इला-ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' पढ़ना।

⑤ **तवाफ :** ख़ाना-ए-काबा के चारों तरफ़ चक्कर लगाना।

⑥ **वुक़ूफ़ :** अरफ़ात और मुज़्दल्फ़ा में कुछ देर ठहरना।

⑦ **रमी :** जमरात के पास कंकरियाँ मारना।

⑧ **तहलीक़ :** सिर के बाल मुंडवाना।

⑨ **तक़सीर :** सिर के बाल कटवाना और छोटे कराना।

⑩ **उमरा :** इहराम बाँधकर काबे का तवाफ़ करना और सफ़ा और मरवा के बीच दौड़ना। हज के दिनों के अलावा भी उमरा कर सकते हैं।

---

1. सिर्फ़ हज़रत अली (रज़ि॰) को अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में हज का मौक़ा न मिल सका था।

हज की क़िस्में

हज की तीन क़िस्में हैं :

❶ **इफ़राद :** वह हज जिसमें इहराम बाँधते वक़्त सिर्फ़ हज का इरादा किया गया हो। ऐसा हज करनेवाला 'मुफ़रिद' कहलाता है।

❷ **क़िरान :** क़िरान उस तरीक़ा-ए-हज को कहा जाता है, जिसमें इहराम बाँधते वक़्त हज और उमरा दोनों की नीयत की गई हो। ऐसा हज करनेवाला 'क़ारिन' कहलाता है।

❸ **तमत्तुअ़ :** तमत्तुअ़ उस तरीक़ा-ए-हज को कहते हैं, जिसमें हज के दिनों में पहले इहराम बाँधकर उमरा कर लिया जाए और फिर कुछ दिनों के लिए इहराम खोल लिया जाए। फिर हज का इहराम बाँधकर हज कर लिया जाए। ऐसा हज करनेवाला 'मुतमत्तिअ़' कहलाता है।

हज का तरीक़ा

हज में तीन बातें फ़र्ज़ हैं। अगर वे छूट जाएँ तो हज न होगा। हज का पूरा तरीक़ा यह है कि पहले तवाफ़े-क़ुदूम करते हैं। हजरे-असवद (काला पत्थर) को चूमते हैं। फिर सफ़ा और मरवा दोनों पहाड़ियों के बीच दौड़ते हैं। 8 ज़िलहिज्जा को फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर मिना को चल देते हैं। रात को मिना में रहते हैं। 9 ज़िलहिज्जा को अरफ़ात के मैदान की तरफ़ रवाना होते हैं। वहाँ शाम तक ठहरते हैं। अरफ़ात का मंज़र बड़ा ही अजीब होता है। दुनिया भर से आए हुए अल्लाह के लाखों मुख़लिस बन्दों का ठाठें मारता हुआ समन्दर दूर तक नज़र आता है। कोई गोरा, कोई काला, कोई छोटा, कोई बड़ा, मगर सबका एक ही लिबास, सबकी ज़ुबानों पर एक ही अल्लाह की बड़ाई, सब एक ही की मुहब्बत में डूबे हुए नज़र आते हैं। न कोई ग़रीब है, न अमीर। न छोटा, न बड़ा; न कोई राजा है, न प्रजा; सब एक ही अल्लाह के बन्दे हैं। सब भाई-भाई हैं। सब एक ही के गुण गाते हैं, सबका एक ही पैग़ाम है और एक अल्लाह की ही पुकार—

> "सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, सारी नेमतें उसकी ही हैं, उसका कोई साझी नहीं, हम सब उसी के बन्दे हैं और उसी की पुकार पर उसके दर पर हाज़िर हैं।"

अरफ़ात में ज़ुह्र और अस्र की नमाज़ें इकट्ठी पढ़ते हैं और सूरज डूबने के बाद वहाँ

से मुज़्दल्फ़ा की तरफ़ रवाना हो जाते हैं। वहाँ मग़रिब और इशा की नमाज़ें इकट्ठी पढ़ी जाती हैं। रात को मुज़्दल्फ़ा ही में ठहरते हैं।

10 ज़िल्हिज्जा को फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर मिना की तरफ़ रवाना हो जाते हैं और दोपहर से पहले-पहले मिना में पहुँचकर जमरए-उक़बा में सात बार कँकरियाँ फेंकते हैं। रमी (कँकरियाँ मारने) के बाद तल्बियः कहना बन्द कर देते हैं। फिर क़ुरबानी करके सिर के बाल मुंडवाते या कतरवाते हैं और इहराम उतारकर अपने कपड़े पहन लेते हैं। फिर तवाफ़े-ज़ियारत के लिए मक्का जाते हैं। तवाफ़े-ज़ियारत के बाद मिना आ जाते हैं। मिना में 12 ज़िलहिज्जा तक रहते हैं। इन दिनों यानी ग्यारहवीं और बारहवीं दोनों दिनों में मस्जिदे-ख़ाफ़ के पास जो तीनों जमरे हैं, उनकी रमी करते हैं। हर एक पर सात कंकरियाँ फेंकते हैं और कंकरियाँ फेंकने के बाद तकबीर कहते हैं। इस रमी में पहले जमरए-ऊला की, फिर जमरए-वुस्ता की, फिर जमरए-उक़बा की रमी करते हैं। ज़िलहिज्जा की बारहवीं तारीख़ ख़त्म होते ही हज ख़त्म हो जाता है।

हज से फ़ारिग़ होकर प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पाक बस्ती की ज़ियारत के लिए जाते हैं। ख़ाना-ए-काबा की ज़ियारत के बाद प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मज़ारे-मुक़द्दस (पवित्र क़ब्र) की ज़ियारत करते हैं। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मस्जिद में नमाज़ पढ़ते हैं। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर दरूद और सलाम भेजते हैं और दीन-दुनिया की दौलतों से दामन भरकर वापस आते हैं। अल्लाह तआला हम सबको ख़ाना-ए-काबा की ज़ियारत नसीब करे, प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का पाक मज़ार दिखाए और हज की नेमतों से मालामाल करे। आमीन!

अभ्यास

(क) उत्तर दीजिए :

1. हज किसे कहते हैं?
2. हज करने के लिए किन सहूलतों का हासिल होना ज़रूरी है?
3. हज की फ़ज़ीलत के बारे में क़ुरआन मजीद का हुक्म बयान कीजिए।
4. हज की फ़ज़ीलत के बारे में प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की कोई हदीस लिखिए।
5. हज की कितनी क़िस्में हैं? हर एक की तारीफ़ (परिभाषा) लिखिए।

6. तलबियः किसे कहते हैं? तर्जुमे के साथ लिखिए।
7. किस जगह ज़ुहर और अस्र की नमाज़ें इकट्ठी पढ़ी जाती हैं?
8. 'उमरा' से क्या मुराद है?

(ख) ख़ाली जगहों को भरिए :

1. मग़रिब और इशा की नमाज़ें..................में इकट्ठी पढ़ी जाती हैं।
2. प्यारे रसूल (सल्ल॰) के बाद सहाबा किराम (रज़ि॰) भी.............का बड़ा एहतिमाम करते थे।
3. ख़ाना-ए-काबा की ज़ियारत के बाद प्यारे रसूल (सल्ल॰) के..................की ज़ियारत करते हैं।

(ग) सही वाक्य पर (√) और ग़लत पर (×) का निशान लगाइए :

1. हज इस्लाम की एक बड़ी अहम इबादत है। ( )
2. हज मुसलमानों पर उम्र भर में तीन बार फ़र्ज़ है। ( )
3. प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने ख़ाना-ए-काबा को बुतों से पाक किया। ( )
4. हज 7 हिजरी में फ़र्ज़ हुआ। ( )
5. औरतों के लिए हज ही जिहाद है। ( )
6. मुज़दल्फ़ा में इशा और फ़ज्र की नमाज़ें इकट्ठी पढ़ी जाती हैं। ( )

(घ) कॉलम 'अ' को कॉलम 'ब' से मिलाइए :

(अ)	(ब)
1. क़ुरआन	हज की नीयत से हज का लिबास पहनना और हज की दुआ पढ़ना।
2. तहलीक़	बाल कटवाना और छोटे कराना।
3. तवाफ़	इहराम बाँधते वक़्त हज और उमरा दोनों की नीयत करना।
4. तक़सीर	हज के लिए इहराम बाँधने की जगह।
5. इहराम	ख़ाना-ए-काबा के चारों तरफ़ चक्कर लगाना।
6. मीक़ात	बाल मुँडवाना
7. रमी	अरफ़ात और मुज़दल्फ़ा में कुछ देर ठहरना।
8. वुक़ूफ़	जमरा के पास कँकरियाँ मारना।

9

क़ुरआन मजीद

अल्लाह तआला के हमपर अनगिनत एहसान हैं। मगर सबसे बड़ा एहसान यह है कि उसने हमें ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा सिखाया। प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर अपनी किताब उतारी, किताब में भले-बुरे की पहचान बताई, अपने पसन्दीदा काम बताए, अपने प्यारे बन्दों की ख़ूबियाँ बताईं, जहन्नम से बचने और जन्नत में जाने का तरीक़ा बताया। क़ुरआन मजीद हिदायत की किताब है। इसमें दीन-दुनिया की भलाई का क़ानून है। इसपर चलकर हमें दुनिया में इज़्ज़त मिलेगी और आख़िरत में जन्नत। क़ुरआन को छोड़कर हम कहीं से हिदायत नहीं पा सकते।

क़ुरआन मजीद 23 साल की मुद्दत में थोड़ा-थोड़ा, ज़रूरत के मुताबिक़ प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतरता रहा। क़ुरआन मजीद जबसे उतरा है तब से ही अपनी असली हालत में है और क़ियामत तक इसी हालत में रहेगा। क़ुरआन मजीद की तालीम हर ज़माने के लिए है। यह हमारी पूरी ज़िन्दगी का क़ानून है। इसमें अल्लाह तआला ने सच्चे अक़ीदे की तालीम दी, इबादत के तरीक़े बताए, माँ-बाप और रिश्तेदारों के हुक़ूक़ बताए, आम लोगों के साथ अच्छे सुलूक का ढंग बताया, तालीम और तरबियत के तरीक़े सिखाए, लेन-देन के उसूल बताए, कमाने और ख़र्च करने के हलाल तरीक़े सिखाए। दुनिया में अम्न क़ायम करने और अल्लाह की हुकूमत क़ायम करने के उसूल सिखाए, बेहतरीन इन्तिज़ाम करने के क़ानून बताए। ग़र्ज़ वह सब कुछ बताया, जिसकी हमें इस दुनिया में ज़रूरत थी। इसके होते हुए अब किसी दूसरे क़ानून की कोई ज़रूरत नहीं। इसको अपनाने में दुनिया की भी भलाई है और आख़िरत की भी। इसके होते हुए जो लोग दूसरे क़ानून को मानते और उसपर चलते हैं, सच्ची बात यह है कि वे क़ुरआन पढ़ते ही नहीं और न इसपर ऐसा ईमान लाते हैं, जैसा ईमान लाने का अल्लाह ने हुक्म दिया है।

जमा और तरतीब

क़ुरआन मजीद पूरा-का-पूरा प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के ज़माने ही में लिख लिया गया था। और उसी तरतीब से लोग पढ़ते-पढ़ाते भी थे, जिस तरतीब से हम पढ़ते और पढ़ाते हैं। प्यारे रसूल (सल्ल०) ने अल्लाह तआला ही के हुक्म से क़ुरआन मजीद को इस तरह तरतीब दिया था। जब कोई आयत उतरती तो आप (सल्ल०) लिखनेवालों से फ़रमाते कि इसको फ़ुलाँ सूरा में लिख दो और जब कोई सूरा नाज़िल होती तो आप (सल्ल०) फ़रमाते कि इसको फ़ुलाँ सूरा के बाद रखो। आप (सल्ल०) के ज़माने में क़ुरआन मजीद के सैकड़ों हाफ़िज़ मौजूद थे, और पूरा क़ुरआन मजीद तहरीरी शक्ल में मौजूद था। हाँ, वह अलग-अलग चीज़ों पर लिखा हुआ था। हज़रत अबू-बक्र (रज़ि०) और हज़रत उमर (रज़ि०) ने बड़े-बड़े सहाबा (रज़ि०) के मश्विरे से पूरा क़ुरआन एक जिल्द में जमा किया।

हज़रत उस्मान ग़नी (रज़ि०) के ज़माने में इस्लाम दूर-दूर तक फैला और ऐसे लोग भी मुसलमान हुए जो अरब के रहनेवाले न थे। उस वक़्त अलग-अलग क़बीले अलग-अलग तरीक़ों से क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते थे। हर क़बीले का लहजा और पढ़ने का तरीक़ा अलग था। उन्होंने क़ुरैश क़बीले के लहजे और क़िरअत के मुताबिक़ पढ़ने का हुक्म दिया।

तिलावत

क़ुरआन का नाम खुद अल्लाह ने 'क़ुरआन' रखा है। क़ुरआन का मतलब है बार-बार पढ़ी जानेवाली और ख़ूब पढ़ी जानेवाली किताब, इसलिए हम क़ुरआन की ख़ूब-ख़ूब तिलावत करते हैं। प्यारे रसूल (सल्ल०) भी ख़ूब तिलावत फ़रमाते थे। कभी दूसरों को सुनाते और कभी दूसरों से पढ़वाकर सुनते थे। रमज़ान में हर साल पूरा क़ुरआन मजीद हज़रत जिबरील (अलैहिस्सलाम) को सुनाते थे। प्यारे सहाबा (रज़ि०) भी अकसर वक़्त क़ुरआन मजीद की तिलावत में गुज़ारते थे, क़ुरआन मजीद है भी ऐसी किताब कि बार-बार पढ़ी जाए। इसके पढ़ने से हमारा ईमान ताज़ा होता है। अल्लाह की मुहब्बत बढ़ती है। प्यारे रसूल (सल्ल०) के रास्ते पर चलने का शौक़ बढ़ता है। अच्छे और नेक लोगों से मुहब्बत पैदा होती है। नेकियाँ कमाने और बुराइयों से बचने की ताक़त पैदा होती है। और अल्लाह की ख़ुशी के काम करने को हर वक़्त जी चाहता है। इसी लिए प्यारे रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया, "तुममें सबसे बेहतर वे हैं जो क़ुरआन पढ़ते और पढ़ाते हैं।"

तिलावत के मानी हैं, समझकर पढ़ना। हम क़ुरआन मजीद समझ-समझकर पढ़ते हैं। इसकी एक-एक बात पर ग़ौर करते हैं। क़ुरआन मजीद एक आईना है, जिसमें पढ़नेवाले को अपनी एक-एक अच्छाई और बुराई साफ़ नज़र आती है। क़ुरआन मजीद से फ़ायदा उठाने के लिए तीन बातों का ख़याल रखना बहुत ज़रूरी है :

❶ जब हम क़ुरआन मजीद पढ़ने बैठें तो यह यक़ीन रखें कि यह अल्लाह तआला की भेजी हुई किताब है। इसमें कोई ग़लती नहीं है। दोनों जहान की भलाइयाँ इसी में हैं। अगर हमने इसे छोड़ दिया तो फिर हम कहीं से हिदायत नहीं पा सकते।

❷ दूसरी बात यह कि क़ुरआन शरीफ़ अच्छी नीयत से पढ़ें, यह नहीं कि लोग तारीफ़ करेंगे, बड़ा आदमी समझेंगे, नाम होगा या कोई दुनियावी ग़र्ज़ पूरी होगी। क़ुरआन हकीम बस इसी लिए पढ़ा जाए कि हिदायत मिले, अल्लाह तआला ख़ुश हो, नेक बनने की तौफ़ीक़ और आख़िरत में जन्नत की नेमतें मिलें।

❸ तीसरी बात यह कि हम यह तय करके पढ़ने बैठें कि इस किताब में जो-जो हुक्म हम पढ़ेंगे, उनपर सच्चे दिल से अमल करेंगे। बुरे लोगों की जो निशानियाँ बताई गई हैं उनसे बचेंगे और नेक लोगों की जो-जो ख़ूबियाँ बताई गई हैं उन्हें अपनाएँगे।

इन तीन बातों का ख़याल करके जब हम क़ुरआन मजीद पढ़ेंगे तो हमें एक-एक बुराई बुरी तरह खटकेगी, उससे नफ़रत पैदा होगी और भलाई करने को अन्दर से जी चाहेगा। बुराई की राह बहुत तंग और अंधेरी मालूम होगी और नेकी की राह बहुत रौशन और कुशादा मालूम होगी।

ऐ हमारे परवरदिगार! हमें क़ुरआन मजीद की समझ दे और उसके बताए हुए रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ अता कर। आमीन!

अभ्यास

(क) उत्तर दीजिए :

1. क़ुरआन मजीद किसलिए नाज़िल किया गया?
2. क़ुरआन मजीद की जमा और तरतीब के बारे में आप क्या जानते हैं?
3. क़ुरआन मजीद को 'क़ुरआन' क्यों कहते हैं? 'तिलावत' के क्या मानी हैं?
4. क़ुरआन मजीद पढ़ते वक़्त किन बातों का ख़याल रखना चाहिए?
5. क़ुरआन मजीद की शिक्षाएँ क्या हैं?
6. क़ुरआन मजीद से क्या फ़ायदे हासिल होते हैं?

(ख) ख़ाली जगहों को भरिए :

1. क़ुरआन मजीद..........................साल की मुद्दत में, थोड़ा-थोड़ा, ज़रूरत के मुताबिक़ उतरा।
2. क़ुरआन मजीद हमारी पूरी ज़िन्दगी.....................का है।
3. क़ुरआन मजीद को अपनाने में हमारी....................की भलाई है।
4. हज़रत उस्मान (रज़ि॰) ने................के लहजे और क़िरअत के मुताबिक़ क़ुरआन मजीद के बहुत-से नुस्ख़े लिखवाए।
5. तुममें सबसे.......................वे हैं जो क़ुरआन पढ़ते और पढ़ाते हैं।

कुछ और काम

1. क़ुरआन मजीद को रोज़ाना समझकर पढ़ने का एहतिमाम कीजिए।

10

क़ुरआन की फ़रियाद

ताक़ों में सजाया जाता हूँ, आँखों से लगाया जाता हूँ।
तावीज़ बनाया जाता हूँ, धो-धो के पिलाया जाता हूँ।।

जुज़्दान हरीरो-रेशम के और फूल, सितारे चाँदी के।
फिर इत्र की बारिश होती है, ख़ुशबू में बसाया जाता हूँ।।

जिस तरह से तोता-मैना को, कुछ बोल सिखाए जाते हैं।
इस तरह पढ़ाया जाता हूँ, इस तरह सिखाया जाता हूँ।।

जब क़ौलो-क़सम लेने के लिए, तकरार की नौबत आती है।
फिर मेरी ज़रूरत पड़ती है, हाथों पे उठाया जाता हूँ।।

दिल सोज़ से ख़ाली रहते हैं, आँखें हैं कि नम होती ही नहीं।
कहने को मैं इक-इक जलसे में, पढ़-पढ़कर सुनाया जाता हूँ।।

नेकी पे बदी का ग़लबा है, सच्चाई से बढ़कर धोका है।
इक बार हँसाया जाता हूँ, सौ बार रुलाया जाता हूँ।।

यह मुझसे अक़ीदत के दावे, क़ानून पे राज़ी ग़ैरों के।
यूँ भी मुझे रुसवा करते हैं, ऐसे भी सताया जाता हूँ।।

किस बज़्म में मुझको बार नहीं, किस उर्स में मेरी धूम नहीं।
फिर भी मैं अकेला रहता हूँ, मुझ-सा भी कोई मज़लूम नहीं।।

● माहिरुल क़ादिरी

11

प्यारे रसूल (सल्ल॰) क्या करते और क्या कहते थे?

प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के आख़िरी पैग़म्बर थे। अल्लाह तआला ने आप (सल्ल॰) में तमाम भलाइयाँ जमा कर दी थीं। हमारा क्या मुँह कि भला हम आप (सल्ल॰) की तारीफ़ कर सकें। बस मुख़्तसर यह कि अल्लाह के बाद आप (सल्ल॰) ही का दर्जा है।

प्यारे रसूल (सल्ल॰) बड़े ही अच्छे थे। रोज़ाना रात के पिछले पहर उठ बैठते, उठकर वुज़ू करते, मिसवाक से दाँत साफ़ करते और नमाज़ पढ़ने में लग जाते। देर तक नमाज़ पढ़ते रहते, ठहर-ठहरकर, इत्मीनान से नमाज़ पढ़ते, अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाते और दुआ माँगते। फ़ज्र की नमाज़ अव्वल वक़्त में पढ़ते। नमाज़ में देर तक क़ुरआन पढ़ते, क़ुरआन बहुत साफ़-साफ़ पढ़ते, क़ुरआन का पढ़ना आप (सल्ल॰) को बहुत पसन्द था, रोज़ाना तिलावत फ़रमाते, दूसरों से भी पढ़वाकर सुनते और असर लेते, रोते-रोते दाढ़ी तर हो जाती। क़ुरआन है भी तो अल्लाह का कलाम। क़ुरआन सुनकर भी जिसका दिल न पसीजे, भला वह भी कोई मुसलमान है।

प्यारे रसूल (सल्ल॰) हर वक़्त अल्लाह को याद करते, हर वक़्त रब के गुण गाते, अल्लाह से बहुत डरते, अल्लाह के डर से नमाज़ों में रोते। कभी तो रोते-रोते सारी रात गुज़ार देते।

प्यारे रसूल (सल्ल॰) बड़े ख़ुश-मिज़ाज और हँस-मुख थे, बड़े ही नर्म दिल और मेहरबान थे। कभी किसी का दिल न दुखाते, बुरी बात मुँह से न निकालते, किसी की ग़ीबत न करते, किसी को बुरे नाम से याद न करते। हर एक से मुहब्बत से पेश आते। आप (सल्ल॰) ने कभी किसी को न मारा, न कभी किसी को गाली दी।

प्यारे रसूल (सल्ल॰) सच्चे थे, सदा सच्ची बात कहते। फ़रमाते, "सच्चाई में नजात

है और झूठ में तबाही।" लोग आपको 'सादिक़' कहते। प्यारे रसूल (सल्ल॰) अमानतदार थे। फ़रमाते, "जो ख़यानत करे, उसमें ईमान नहीं।" लोग आप (सल्ल॰) के पास अपनी अमानतें रखते और आप (सल्ल॰) पर इत्मीनान करते। मक्के के लोग आपको 'अमीन' के लक़ब से पुकारते।

प्यारे रसूल (सल्ल॰) बीमारों की ख़बर रखते, उनका हाल पूछने जाते, उनके पास बैठकर तसल्ली देते और उनके लिए दुआ फ़रमाते। जब कोई रास्ते में मिलता तो पहले ख़ुद सलाम करते, हाथ मिलाते। मंजलिस में सबके साथ मिल-जुलकर बैठते। अपने बैठने के लिए कोई ऊँची जगह पसन्द न फ़रमाते। सबके साथ चलते, अपना काम ख़ुद अपने हाथ से करते, मेहनत करने को अच्छा समझते, घोड़े की सवारी को बहुत पसन्द करते।

प्यारे रसूल (सल्ल॰) सिरका, शहद और गोश्त बहुत पसन्द फ़रमाते। खाना हमेशा सादा खाते। जो कुछ सामने आता ख़ुश-ख़ुश खा लेते। खाने में कभी ऐब न निकालते। प्याज़ और लहसुन की बू पसन्द न फ़रमाते और फ़रमाते, "प्याज़ और लहसुन खाकर कोई मस्जिद में न आए।" लिबास सादा पसन्द फ़रमाते। आम तौर पर क़मीस और तहबन्द पहनते, चादर ओढ़ते और सिर पर टोपी रखकर पगड़ी बाँधते, सफ़ेद कपड़े पहनते। सफ़ेद रंग पसन्द फ़रमाते और सदा साफ़-सुथरे कपड़े पहनते।

प्यारे रसूल (सल्ल॰) को ख़ुशबू बहुत पसन्द थी। इत्र का तोहफ़ा बहुत पसन्द फ़रमाते, इत्र लगाते, जिस गली से गुज़रते, वह ख़ुशबू से महक जाती। मैले कपड़े न पहनते, ग़ुस्ल फ़रमाते, बालों में कंघा करते, तेल लगाते, आँखों में सुरमा लगाते। हमेशा साफ़-सुथरे रहते और अपने साथियों को भी साफ़-सुथरा रहने की ताकीद फ़रमाते।

प्यारे रसूल (सल्ल॰) बच्चों से बहुत प्यार करते। रास्ते में बच्चे मिल जाते तो उनको सलाम करते, उनसे देर तक अच्छी-अच्छी बातें करते। बच्चे आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को देखकर आप (सल्ल॰) से चिमट जाते। आप (सल्ल॰) उनको प्यार करते, गोद में लेते और मीठी-मीठी बातें करते। जब आप (सल्ल॰) मदीना पहुँचे तो बच्चियाँ ख़ुशी के गीत गाने लगीं। आप (सल्ल॰) ने पूछा, "क्या तुम मुझसे प्यार करती हो?" लड़कियों ने कहा, "जी हाँ।" आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "मैं भी तुमसे प्यार करता हूँ।"

प्यारे रसूल (सल्ल॰) ठहर-ठहरकर बोलते। जो आप (सल्ल॰) की बातें सुनता, अच्छी तरह समझ लेता। प्यारे रसूल (सल्ल॰) की आवाज़ ऊँची थी, लेकिन कभी चिल्लाकर न

बोलते। क़ुरआन मजीद ऊँची आवाज़ से पढ़ते। काबे में बैठकर क़ुरआन पढ़ते तो पास के घरों में आवाज़ जाती। प्यारे रसूल (सल्ल॰) अकसर चुप रहते और जब बात करते तो काम की बात करते।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह के आख़िरी रसूल हैं। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह का आख़िरी पैग़ाम लाए। आप हर एक को अल्लाह का पैग़ाम सुनाते, अल्लाह की बातें सबको बताते, अल्लाह के बन्दों को अल्लाह की तरफ़ बुलाते, नेकियों का हुक्म देते, बुराइयों से रोकते। एक अल्लाह की बन्दगी करने को कहते, झूठे और बातिल ख़ुदाओं की पूजा से रोकते। फ़रमाते, "अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं।"

प्यारे रसूल (सल्ल॰) लोगों को समझाते, "हर चीज़ का पैदा करनेवाला अल्लाह तआ़ला है। हम सबको उसी ने पैदा किया है। वही हम सबका पालनेवाला है। वही हम सबको जिलाता है, वही मारता है। नफ़ा-नुक़सान उसी के हाथ में है। इज़्ज़त-ज़िल्लत उसी के क़ब्ज़े में है। वह किसी को दुःख देना चाहे तो कोई सुख नहीं दे सकता और सुख पहुँचाना चाहे तो कोई दुःख नहीं दे सकता। हुक्म देना उसी का काम है। सारी दुनिया पर उसी की हुकूमत है। वही सबका बादशाह है। उसके सामने सब बेबस और मजबूर हैं।"

आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "लोगो! उसी अल्लाह की बन्दगी करो, उसी के हुक्मों पर चलो और उसी की फ़रमाँबरदारी करो जो सारे जहान का रब है। इनसान अल्लाह ही का बन्दा है, उसी का ग़ुलाम है, उसी की ग़ुलामी में इज़्ज़त और दोनों जहान की भलाई है। जो उसकी फ़रमाँबरदारी करेगा, वह दुनिया में भी अच्छी ज़िन्दगी पाएगा और आख़िरत में भी। जो उसकी नाफ़रमानी करेगा वह दुनिया में भी ज़लील होगा और आख़िरत में भी।"

आप (सल्ल॰) समझाते, "लोगो! यह दुनिया एक दिन ख़त्म हो जाएगी। चाँद, सूरज टकराकर चूर-चूर हो जाएँगे, तारे झड़कर बिखर जाएँगे। ज़मीन और आसमान का सारा कारख़ाना टूट-फूट जाएगा। फिर अल्लाह तआ़ला एक नई दुनिया बसाएगा। तमाम अगले-पिछले मुर्दे जी उठेंगे और ज़िन्दा होकर सब अल्लाह के सामने पेश होंगे। अपने किए का हिसाब देंगे। नेकी-बदी की जाँच होगी। अच्छे कामों पर इनाम मिलेगा। बुरे कामों की सज़ा मिलेगी। इस दिन को 'आख़िरत' का दिन कहते हैं। आख़िरत की ज़िन्दगी हमेशा रहनेवाली है। जन्नत हमेशा रहनेवाले सदाबहार बाग़ का नाम है, वहाँ का आराम कभी ख़त्म न होगा। वह नेकों का ठिकाना है। जहन्नम अज़ाब का घर है। वहाँ का अज़ाब बड़ा सख़्त है। इतना सख़्त है कि कोई सोच भी नहीं सकता। वह नाफ़रमानों का ठिकाना है।"

प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "लोगो! मुझे अल्लाह ने इसलिए भेजा है कि तुम्हें जहन्नम के अज़ाब से बचाऊँ, तुम्हें जन्नत का रास्ता बताऊँ। मैं तुम्हें अच्छी बातें बताने आया हूँ, सीधी-सच्ची राह दिखाने आया हूँ। मुझे अल्लाह ने अपने अहकाम देकर भेजा है। मैं उसकी किताब लेकर आया हूँ। खुद भी उसपर अमल करता हूँ, तुमसे भी अमल करने को कहता हूँ। 'क़ुरआन' अल्लाह की आख़िरी किताब है। इसी की पैरवी में नजात है। मैं भी अल्लाह का बन्दा हूँ, उसी के हुक्म पर चलता हूँ, उसी को अपना आक़ा और मालिक मानता हूँ।"

प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "जो मेरी बातें कान लगाकर सुनेगा और इन्हें अपनाएगा, वह अपना ही भला करेगा, आख़िरत में ऐश की ज़िन्दगी पाएगा, सदा सुख से रहेगा। उसका मौला उससे राज़ी होगा। जो मेरी बातों का इनकार करेगा, फ़रिश्ते उसको मुँह के बल जहन्नम में घसीटेंगे। जहन्नम बहुत ही बुरा ठिकाना है।"

ऐ अल्लाह! हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा, जन्नत में पहुँचा और अपने प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का साथ नसीब फ़रमा। आमीन!

कितने अच्छे थे प्यारे रसूल (सल्ल॰) के काम और कैसा अच्छा था आप (सल्ल॰) का पैग़ाम। फिर भी मक्का के काफ़िर (हक़ के इनकारी) आप (सल्ल॰) की बातें न सुनते, आप (सल्ल॰) को सताते, दिल दुखाते, तरह-तरह से दुःख पहुँचाते। इस तरह अल्लाह का ग़ज़ब भड़काते। मगर बड़े ही मेहरबान थे प्यारे रसूल (सल्ल॰)। सब कुछ सहते रहे और इस्लाम की बातें बताते रहे। आप (सल्ल॰) ने कभी किसी के लिए बद्दुआ न की। आख़िर वक़्त तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाते रहे। दुरूद हो प्यारे रसूल (सल्ल॰) पर, सलाम हो प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर!!

अल्लाहुम-म सल्लि अला मुहम्मदिंव व बारिक व सल्लिम।

अभ्यास

(क) उत्तर दीजिए :

1. रोज़ाना रात के पिछले पहर उठकर आप (सल्ल॰) क्या करते थे?
2. क़ुरआन मजीद से प्यारे रसूल (सल्ल॰) का क्या ताल्लुक़ था?
3. प्यारे रसूल (सल्ल॰) का मिज़ाज कैसा था?
4. बीमारों के साथ प्यारे रसूल (सल्ल॰) का सुलूक कैसा था?
5. प्यारे रसूल (सल्ल॰) का मजलिस में क्या रवैया होता था?
6. प्यारे रसूल (सल्ल॰) कैसा खाना पसन्द करते थे?
7. प्यारे रसूल (सल्ल॰) कैसा लिबास पसन्द फ़रमाते थे?
8. प्यारे रसूल (सल्ल॰) लोगों को क्या बताते थे?
9. अल्लाह के बारे में प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने क्या बातें बताईं?
10. प्यारे रसूल (सल्ल॰) को अल्लाह तआ़ला ने क्यों भेजा?
11. आख़िरत के बारे में प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने क्या बातें बताईं?

(ख) ख़ाली जगहों को भरिए :

1. अल्लाह तआ़ला ने प्यारे रसूल (सल्ल॰) में दीन-दुनिया की..............जमा कर दी थीं।
2. क़ुरआन सुनकर भी जिसका..............न पसीजे, भला वह भी कोई मुसलमान है?
3. प्यारे नबी (सल्ल॰)....................की सवारी को बहुत पसन्द फ़रमाते थे।
4. आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया.......................खाकर कोई मस्जिद में न आए।
5. प्यारे रसूल (सल्ल॰) को.......................बहुत पसन्द थी।
6. प्यारे रसूल (सल्ल॰) अकसर.......................रहते और जब बात करते तो काम की बात करते।
7. हमेशा रहनेवाले सदाबहार बाग़ का नाम....................है।
8. क़ुरआन अल्लाह की आख़िरी किताब है। उसी की.......................में नजात है।

12

प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) नबी होने के बाद तेरह साल तक मक्के में रहे, दीन का काम करते रहे और हर तरह के दुख सहते रहे। उस ज़माने को 'मक्की दौर' कहते हैं। इसके बाद आप (सल्ल॰) ने मदीने को हिजरत फ़रमाई और दस साल मदीना में रहे। इस ज़माने को 'मदनी दौर' कहते हैं। 'मक्की दौर' का हाल हम इससे पिछली किताबों में पढ़ चुके हैं। अब हम 'मदनी दौर' का हाल पढ़ेंगे।

मदीने को हिजरत

यसरिब अरब का एक मशहूर शहर था। प्यारे रसूल (सल्ल॰) के वहाँ पहुँचने के बाद उसका नाम 'मदीनतुन्नबी' या मदीना हो गया। मदीने के लोग हर साल हज के लिए मक्का जाते थे, प्यारे रसूल (सल्ल॰) उनसे मिलते थे और दीन की बातें बताते थे। मदीने के लोग प्यारे रसूल (सल्ल॰) की बातें ध्यान से सुनते थे, उनमें से बहुत-से मुसलमान हो गए। इस तरह अल्लाह का दीन मदीना पहुँचा।

मक्का में दीन की बातें पहुँचाते-पहुँचाते प्यारे रसूल (सल्ल॰) को तेरह साल हो गए थे। मक्कावालों ने आप (सल्ल॰) को सताया। जब उनमें हुज़ूर (सल्ल॰) की बातें सुननेवाला कोई न रहा, उल्टे जान के दरपे हो गए, तो अल्लाह तआला ने आप (सल्ल॰) को हुक्म दिया कि अब मदीना को हिजरत कर जाइए। बहुत-से मुसलमान पहले ही हिजरत करके मदीने पहुँच चुके थे।

एक रात काफ़िरों (हक़ के इनकारियों) ने तय किया कि (तौबा-तौबा!) प्यारे रसूल (सल्ल॰) को जान से मार दिया जाए। इस 'नूर' को हमेशा के लिए बुझा दिया जाए। बदबख़्तों ने तरकीब सोची कि हर क़बीले का एक-एक आदमी जमा हो और सब प्यारे रसूल (सल्ल॰) के घर को घेर लें। जब आप (सल्ल॰) घर से निकलें तो सब एक साथ आप (सल्ल॰) पर हमला कर दें। आप (सल्ल॰) को जान से मार दें। अल्लाह तआला ने आप (सल्ल॰) को इस साज़िश की ख़बर दे दी। आप (सल्ल॰) क़ुरआन मजीद की आयतें पढ़ते हुए घर से

निकले। मुट्ठी में कुछ कंकरियाँ भरकर उनकी तरफ़ फेंकीं, अल्लाह तआला ने उनकी आँखों पर पर्दा डाल दिया, प्यारे रसूल (सल्ल॰) को कोई भी देख न सका। आप (सल्ल॰) के सच्चे दोस्त हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) भी आप (सल्ल॰) के साथ हो लिए। दोनों मिलकर मदीना की तरफ़ रवाना हुए। रास्ते में एक ग़ार है—'ग़ारे सौर'। उसमें दोनों छुप गए। काफ़िरों ने पीछा किया। दूर-दूर तक जासूस भेजे। एक काफ़िर तो ग़ार के मुँह तक पहुँच गया। हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) रंजीदा हो गए। प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने कहा, "ग़म न करो, अल्लाह हमारे साथ है।" अल्लाह ने उस काफ़िर की मत मार दी और वह आप (सल्ल॰) को न देख सका।

तीन दिन के बाद आप (सल्ल॰) वहाँ से मदीने को रवाना हुए। मदीने के लोग कई दिन से आप (सल्ल॰) का इन्तिज़ार कर रहे थे। आप (सल्ल॰) पहुँचे तो लोग बहुत ख़ुश हुए। बच्चियाँ गीत गाने लगीं। हर एक चाहता था कि हुज़ूर (सल्ल॰) हमारे घर ठहरें। हुज़ूर (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "मैं वहीं ठहरूँगा, जहाँ मेरी ऊँटनी जाकर बैठ जाएगी।" यह शर्फ़ हज़रत अबू-अय्यूब अनसारी (रज़ि॰) को मिला।

भाईचारा

मक्के से जो मुसलमान मदीने पहुँचे थे, वे 'मुहाजिर' कहलाए। मुहाजिर सब बेसरो-सामान थे। मदीने के मुसलमानों ने हर तरह उनकी मदद की, इसलिए वे लोग 'अनसार' कहलाए। प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने मुहाजिरों और अनसार में भाईचारा करा दिया। यानी अनसार और मुहाजिरों को एक-दूसरे का भाई बनाया। फिर तो अनसार ने उन भाइयों को रहने के लिए घर दिए, शादी-ब्याह कराया, कारोबार में साझी किया और हर बात में अपने से ज़्यादा उनका ख़याल रखने लगे। अल्लाह तआला ने भी उनकी मदद फ़रमाई।

लड़ाइयाँ

प्यारे रसूल (सल्ल॰) बड़े ही रहम दिल थे। दुनिया के लिए रहमत बनकर आए थे। सबका भला चाहते थे, सबके साथ नेक सुलूक करते थे, पत्थर मारनेवालों को भी दुआएँ देते थे, मगर काफ़िरों ने आप (सल्ल॰) को घरबार छोड़ने पर मजबूर किया। ख़याल था कि मदीने में इत्मीनान से रहेंगे, लेकिन वहाँ भी काफ़िरों ने चैन न लेने दिया। मदीने के आस-पास यहूदी बसते थे। वे अपने आपको हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) की उम्मत कहते, मगर काम सब काफ़िरों जैसे करते थे। वे लोग भी आप (सल्ल॰) के दुश्मन हो गए और काफ़िरों से

मिलकर आप (सल्ल॰) को धोखा देने लगे! मदीने में कुछ लोग 'मुनाफ़िक़' थे। वे देखने में तो मुसलमानों के साथी थे, लेकिन दिल से उनके दुश्मन थे।

बद्र की लड़ाई

आख़िरकार काफ़िरों (हक़ के इनकारियों) ने मदीने के मुसलमानों पर धावा बोल दिया। मुसलमानों को भी लड़ाई की इजाज़त मिल गई। इस्लाम के लिए यह सबसे पहली लड़ाई है। काफ़िर एक हज़ार थे और मुसलमान सिर्फ़ तीन सौ तेरह। काफ़िरों के पास लड़ाई का सब सामान था और मुसलमान निहत्थे थे। बद्र के मैदान में 17 रमज़ान सन् 2 हिजरी को दोनों में मुठभेड़ हुई। बद्र मदीना से लगभग सवा सौ किलोमीटर के फ़ासले पर एक गाँव का नाम हैं। मुसलमान सच्चे थे। प्यारे रसूल (सल्ल॰) हक़ पर थे। अल्लाह की मदद आई, मुसलमान जीत गए। काफ़िर हार गए। काफ़िरों के बड़े-बड़े सरदार मारे गए, अबू-जहल मारा गया, उतबा मारा गया, शैबा मारा गया, जमआ मारा गया, आस मारा गया, उमैया मारा गया, ग़रज़ तमाम बड़े-बड़े सरदार मारे गए और क़ुरैश की ताक़त टूट गई। इस लड़ाई में काफ़िरों के सत्तर आदमी मारे गए और सत्तर गिरफ़्तार हुए। बाक़ी पीठ फेरकर भाग गए।

बद्र के बाद

बद्र की लड़ाई में काफ़िर हार गए और उनके बड़े-बड़े सरदार मारे गए, इसलिए सारा अरब मुसलमानों के ख़िलाफ़ चौकन्ना हो गया। दुश्मनी की आग और ज़्यादा भड़क उठी। अभी बद्र की लड़ाई को मुशकिल से एक साल ही गुज़रा था कि काफ़िरों के हमले की ख़बरें मदीना पहुँचने लगीं। सन् 3 हिजरी में काफ़िरों ने बहुत बड़ी फ़ौज जमा की और मुसलमानों पर हमला किया। मुसलमान भी मुक़ाबले के लिए निकले। मुसलमानों की तादाद सात सौ थी और एक-एक मुसलमान अल्लाह की राह में जान देने के लिए बेचैन था।

उहुद की लड़ाई

मदीने से लगभग साढ़े छह किलोमीटर के फ़ासले पर 'उहुद' नामक एक पहाड़ है। 'उहुद' के क़रीब ही लड़ाई हुई। मुसलमान की तादाद कम थी और काफ़िर लगभग तीन हज़ार थे। फिर हर तरह का जंगी-सामान भी उनके पास था। अल्लाह की मदद से मुसलमान फिर जीत गए, मगर मुसलमानों से ज़रा-सी चूक हो गई। मुसलमान यह समझे कि लड़ाई ख़त्म हो गई और वे सत्तर मुसलमान उस पहरे से हट गए, जहाँ प्यारे नबी (सल्ल॰) ने उन्हें खड़ा किया था। काफ़िरों ने मौक़ा पाकर पीछे की तरफ़ से फिर हमला कर दिया। इस

अचानक हमले से मुसलमान घबरा गए। कई सहाबा (रज़ि॰) शहीद हो गए। प्यारे रसूल (सल्ल॰) के बहादुर चचा हज़रत हमज़ा (रज़ि॰) भी इस लड़ाई में शहीद हो गए। लोगों ने यह अफ़वाह भी उड़ा दी कि मुहम्मद (सल्ल॰) शहीद हो गए।

इस अफ़वाह से मुसलमानों ने और जी छोड़ दिया। लेकिन कुछ सहाबा (रज़ि॰) अपनी जान पर खेल कर प्यारे रसूल (सल्ल॰) को दुश्मनों के हमलों से बचाते रहे, फिर भी आप (सल्ल॰) के दो दाँत शहीद हो गए। मुसलमान फिर संभले, आख़िर अल्लाह की मदद आई, काफ़िर भागने लगे। मुसलमानों ने उनका पीछा किया और अल्लाह ने मुसलमानों को फ़त्ह दी। इस लड़ाई में सत्तर सहाबा किराम (रज़ि॰) शहीद हुए। अल्लाह की रहमत हो उनपर। उहुद की लड़ाई के बाद भी काफ़िरों से मुसलमानों की बहुत-सी लड़ाइयाँ हुईं। मुसलमान हक़ पर थे और अल्लाह का कलिमा बुलन्द करने के लिए उठे थे, इसलिए हर बार अल्लाह तआला ने मुसलमानों की मदद फ़रमाई और काफ़िरों को मुँह की खानी पड़ी।

यहूदी क़बीले

मुसलमान जब मदीने पहुँचे तो शुरू-शुरू में यहूदी बहुत ख़ुश हुए। उनका ख़याल था कि मुसलमानों की वजह से उनका इक्तिदार बढ़ जाएगा। इसलिए उन्होंने मुसलमानों से क़ौल व क़रार किया कि दुश्मनों ने अगर मुसलमानों पर हमला किया तो वे उनका साथ देंगे, लेकिन जल्द ही मुसलमानों के सबसे बड़े दुश्मन हो गए। मुसलमानों की बातें काफ़िरों तक पहुँचाते, काफ़िरों को मुसलमानों से लड़ने के लिए तैयार करते, अपनी तरफ़ से झूठी-झूठी बातें लगाकर भड़काते और जिस तरह बन पड़ती मुसलमानों की मुख़ालिफ़त करते।

मदीने के आस-पास यहूदियों के तीन क़बीले आबाद थे। एक बनी-क़ैनुक़ाअ, जो यहूदियों का सबसे बहादुर और लड़ाका क़बीला था। दूसरा क़बीला बनी-नज़ीर था और तीसरा क़बीला बनी-क़ुरैज़ा। जब इनकी शरारतें हद से बढ़ गईं तो प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने बनी-क़ैनुक़ाअ को मदीने से निकाल दिया। वे अपनी सारी जायदाद और ज़मीन छोड़कर शाम के मुल्क में चले गए। बनी-नज़ीर के लोगों ने कई बार प्यारे रसूल (सल्ल॰) को क़त्ल करने की साज़िशें कीं। एक बार आप (सल्ल॰) उनके मुहल्ले में एक दीवार के नीचे खड़े थे, यहूदियों ने चाहा कि छिपकर दीवार से एक बड़ा पत्थर आप (सल्ल॰) पर गिरा दें और (तौबा-तौबा!) आप (सल्ल॰) को मार डालें, प्यारे रसूल (सल्ल॰) को उनके नापाक इरादे की ख़बर हो गई और आप (सल्ल॰) फ़ौरन उठकर चले आए। एक बार उन लोगों ने कहला भेजा

कि आप (सल्ल॰) तीस आदमियों को लेकर हमारे आलिमों से बात करने के लिए आइए। आप (सल्ल॰) ने बनी-नज़ीर और बनी-क़ुरैज़ा से फ़रमाया कि हमें तुम्हारा एतिबार नहीं, तुम एक अहदनामा लिख दो। लेकिन फिर आप (सल्ल॰) को मालूम हुआ कि ये लोग तलवारें लिए लड़ने को तैयार खड़े हैं कि आप पहुँचें और (तौबा-तौबा!) आप (सल्ल॰) को क़त्ल कर दें। आप (सल्ल॰) वापस तशरीफ़ ले आए।

आख़िर हुज़ूर (सल्ल॰) ने इनको भी मदीने से निकाल दिया। वे लोग जितना माल व असबाब अपने साथ ले जा सकते थे ऊँटों पर लाद कर ख़ैबर चले गए।

अहज़ाब की लड़ाई

बनी-नज़ीर के लोगों ने ख़ैबर पहुँचकर सारे अरब को मुसलमानों के ख़िलाफ़ भड़काया। क़ुरैश के लोगों को लड़ाई पर उभारा। क़बीला-ए-ग़तफ़ान को लालच देकर अपने साथ मिला लिया। बनी-असद भी इनके साथ हो गए और दस हज़ार की भारी फ़ौज लेकर मदीने की तरफ़ चल पड़े। अरबी ज़बान में 'हिज़्ब' जमाअत को कहते हैं और इसका बहुवचन (जमा) अहज़ाब है। इस लड़ाई को अहज़ाब इसी लिए कहते हैं कि इसमें काफ़िरों की तमाम जमाअतें मुसलमानों से लड़ने के लिए मिल गई थीं। यह लड़ाई सन् पाँच हिजरी में हुई थी।

प्यारे रसूल (सल्ल॰) को ख़बर हुई तो आप (सल्ल॰) ने सहाबा (रज़ि॰) से मशविरा किया। हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि॰) ईरान के रहनेवाले थे। उन्हें लड़ाई के ईरानी तरीक़े मालूम थे। उन्होंने राय दी कि तीन तरफ़ से तो मदीना मकानों और खजूरों के बाग़ों से घिरा हुआ है सिर्फ़ एक तरफ़ से खुला हुआ है। इधर ख़न्दक़ (खाई) खोदकर महफ़ूज़ तरीक़े से मुक़ाबला किया जाए। इसलिए इस लड़ाई को ख़न्दक़ की लड़ाई भी कहते हैं, क्योंकि इसमें मुसलमान ख़न्दक़ खोदकर लड़े थे।

तीन हज़ार सहाबा (रज़ि॰) बीस दिन तक बराबर ख़न्दक़ खोदने का काम करते रहे। ख़ुद प्यारे रसूल (सल्ल॰) भी ख़न्दक़ खोदने में शरीक रहे। एक जगह ऐसी चट्टान आ गई कि किसी तरह टूटने में न आती थी। प्यारे रसूल (सल्ल॰) तशरीफ़ लाए और एक कुदाल ऐसी मारा कि चट्टान चूरा-चूरा हो गई।

काफ़िरों ने तीन तरफ़ से मदीने पर हमला कर दिया। वे बीस दिन तक मदीने के गिर्द घेरा डाले रहे। लेकिन शहर के अन्दर जाने का कोई रास्ता न पाते थे। एक जगह ख़न्दक़

की चौड़ाई कम थी। उस तरफ़ से एक काफ़िर घोड़ा कुदाकर अन्दर आ गया। हज़रत अली (रज़ि॰) ने तलवार का एक ऐसा हाथ मारा कि वह वहीं ढेर हो गया। मुसलमानों ने अपनी औरतों को एक क़िले में महफ़ूज़ कर दिया था। बनी-कुरैज़ा के लोगों ने देखा कि मुसलमान तो अपनी फ़िक्र में हैं, इस क़िले पर क़ब्ज़ा कर लिया जाए। एक यहूदी क़िले के फाटक पर पहुँच भी गया। हज़रत ज़ुबैर बिन-अव्वाम (रज़ि॰) की माँ हज़रत सफ़ीया (रज़ि॰) ने यहूदी को देखा तो आगे बढ़कर एक ऐसा वार किया कि उसका काम तमाम हो गया। फिर उसका सिर काटकर मैदान में फेंक दिया। बनी-कुरैज़ा के लोगों को ख़याल हुआ कि शायद क़िले में भी कुछ लोग हैं और फिर उधर जाने की हिम्मत न की। अल्लाह का करना ऐसा हुआ कि दुशमन की फ़ौज में फूट पड़ गई। इसके अलावा एक ऐसी ज़ोरदार आँधी चली कि दुशमनों की हाँडियाँ उलट गईं और ख़ेमे उखड़ गए। सर्दी भी बला की थी। काफ़िरों के दिल लरज़ गए। बनी-कुरैज़ा साथ छोड़कर अपने क़िले में चले गए। कुरैश भी अपना-सा मुँह लेकर वापस हो गए। काफ़िरों की हिम्मतें पस्त हो गईं और मजबूर होकर उन्होंने मुसलमानों से सुलह कर ली।

ख़ैबर की फ़तह

यहूदी हर तरफ़ से सिमट-सिमटकर ख़ैबर में जमा हो गए। वहाँ उनके छह क़िले थे, जिनमें बीस हज़ार सिपाही मौजूद थे। वे मुसलमानों के ख़िलाफ़ कुछ-न-कुछ शरारतें करते रहते थे। आख़िरकार सन् सात हिजरी में प्यारे रसूल (सल्ल॰) सोलह सौ मुसलमानों को लेकर ख़ैबर पहुँचे। आप (सल्ल॰) ने पहले सहाबा (रज़ि॰) के सामने 'जिहाद' पर प्रभावकारी ख़ुतबा दिया और अल्लाह की राह में लड़ने का जोश दिलाया। मुसलमान बीस दिन तक क़िले को घेरे रहे, लेकिन क़िला फ़तह न होता था। प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "कल मैं झंडा एक ऐसे आदमी को दूँगा, जिसके हाथ पर अल्लाह तआला फ़तह देगा और जो अल्लाह और अल्लाह के रसूल को चाहता है, और अल्लाह और अल्लाह का रसूल उसको चाहते हैं। दूसरे रोज़ आप (सल्ल॰) ने हज़रत अली (रज़ि॰) के हाथ में फ़तह का झंडा दिया। हज़रत अली (रज़ि॰) झंडा लेकर निकले। यहूदियों का सरदार 'मरहब' अपनी बहादुरी के गीत गाता हुआ निकला। इधर से हज़रत अली (रज़ि॰) ने भी जवाब दिया और इस ज़ोर से उसके सिर पर तलवार जमाई कि सिर को काटती हुई दाँतों तक आ गई। मरहब के मरते ही क़िला फ़तह हो गया। इस लड़ाई में पंद्रह मुसलमान शहीद हुए और 93 यहूदी मारे गए।

मक्का की फ़तह

छह हिजरी में हुदैबिया के मक़ाम पर मक्का के काफ़िरों ने प्यारे रसूल (सल्ल॰) से जो सुलह की थी, उस सुलह पर कुछ दिनों तो क़ायम रहे, लेकिन शरारतों से बाज़ न आए और फिर शरारत शुरू कर दी। मुसलमानों को काबे में शहीद किया। यह सुनकर प्यारे रसूल (सल्ल॰) दस हज़ार सहाबा (रज़ि॰) को साथ लेकर मक्के की तरफ़ निकल खड़े हुए। काफ़िर सटपटा गए, कुछ तो घरबार छोड़कर निकल खड़े हुए, कुछ माफ़ी माँगकर मुसलमान हो गए। रहमते-आलम (सल्ल॰) ने सबको माफ़ कर दिया।

अब से कुछ साल पहले जिन्होंने प्यारे रसूल (सल्ल॰) को सताया था, तरह-तरह के दुख पहुँचाए थे और अपना प्यारा वतन छोड़ने पर मजबूर किया था, आप (सल्ल॰) ने सबको माफ़ कर दिया। मक्के पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो गया। प्यारे रसूल (सल्ल॰) काबा में दाख़िल हुए और आप (सल्ल॰) ने एक-एक करके बुतों को तोड़ दिया। अल्लाह का कलिमा बुलन्द हुआ और धीरे-धीरे सारे अरब में इस्लाम का डंका बज गया। लोग आसानी से अल्लाह के दीन पर अमल करने लगे। आप (सल्ल॰) का काम पूरा हो गया। आप (सल्ल॰) ने अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया, अमल करके दिखा दिया और दीन फैलाने के लिए एक बहुत बड़ी जमाअत भी तैयार कर दी। इस जमाअत का नाम 'उम्मते-मुस्लिमा' है। दुरूद हो प्यारे रसूल (सल्ल॰) पर, सलाम हो प्यारे रसूल (सल्ल॰) पर!

अभ्यास

(क) उत्तर दीजिए :

1. मक्की और मदनी दौर किसे कहते हैं?
2. अल्लाह का दीन मदीने में किस तरह पहुँचा?
3. प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने मक्के से मदीने क्यों हिजरत की?
4. मुसलमानों से काफ़िरों की पहली लड़ाई कौन-सी है? यह लड़ाई क्यों हुई थी?
5. जंगे-उहुद में कितने सहाबा (रज़ि॰) शहीद हुए? यह शहादत किस वजह से हुई?
6. मदीने में यहूदियों के कितने क़बीले आबाद थे? उन्होंने प्यारे रसूल (सल्ल॰) के साथ क्या साज़िशें कीं?
7. अहज़ाब की लड़ाई का दूसरा नाम क्या है? इस लड़ाई के कारण क्या हैं?
8. फ़तहे-मक्का के बाद प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने दुश्मनों के साथ क्या सुलूक किया?

(ख) ख़ाली जगहों को भरिए :

1. मदीने पहुँचने पर प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने......................के घर क़ियाम फ़रमाया।
2. प्यारे रसूल (सल्ल॰) और हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) दोनों....................में छिप गए।
3. बद्र मदीने से.............................के फ़ासले पर है।
4. ....के मक़ाम पर 17 रमज़ान, सन् 2 हिजरी को मुसलमानों और काफ़िरों में मुठभेड़ हुई।
5. उहुद की लड़ाई.....................................पहाड़ के क़रीब हुई।
6. अहज़ाब की लड़ाई में हज़रत........................ने ख़ंदक़ खोदकर लड़ाई लड़ने का मशविरा दिया।
7. हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) बिन-अव्वाम की माँ का नाम.................था।
8. ख़ैबर की लड़ाई में........................मुसलमान शहीद हुए और 93 यहूदी मारे गए।

(ग) कॉलम 'अ' को कॉलम 'ब' से मिलाइए :

	(अ)	(ब)
1.	हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰)	मदीने के मुसलमान
2.	हज़रत हमज़ा (रज़ि॰)	यहूदी क़बीला
3.	अनसार	प्यारे रसूल (सल्ल॰) के चचा
4.	मरहब	ग़ारे-सौर के साथी
5.	बनी-क़ैनुक़ाअ	हज़रत अली (रज़ि॰)
6.	फ़ातहे-ख़ैबर	यहूदी सरदार

13

उम्मते-मुस्लिमा

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के आख़िरी रसूल हैं। आपके बाद अब कोई रसूल नहीं आएगा। आप (सल्ल०) की नुबूवत रहती दुनिया तक के लिए है। आप (सल्ल०) 'ख़ातमुन-नबिय्यीन, हैं। अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) पर दीन मुकम्मल फ़रमा दिया है। अब इसमें कुछ घटाने और बढ़ाने की गुंजाइश नहीं। अल्लाह तआ़ला ने अपनी किताब में मुसलमानों को दीन के मुकम्मल हो जाने की ख़ुशख़बरी दी है। अब क़ियामत तक के इनसानों का दीन इस्लाम है।

इस्लाम ही को अपनाने में दीन-दुनिया की भलाई है। प्यारे रसूल (सल्ल०) पूरा-पूरा दीन उम्मत को पहुँचा चुके, ख़ुद ज़िन्दगी भर इसपर चले और लोगों को इसी दीन पर चलना सिखाया। आप (सल्ल०) अपना काम पूरा कर चुके और अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) को वापस बुला लिया।

अल्लाह तआला ने नेकी-बदी दोनों को पैदा किया है। रौशनी के साथ अन्धेरे को भी पैदा फ़रमाया। हर ज़माने में अच्छे-बुरे दोनों क़िस्म के लोग होते हैं। नेकों के ज़रीए दुनिया में अमन-चैन होता है, नेकी का चलन हो जाता है, लेकिन बुरे लोग फिर सिर उठाते हैं, बुराइयाँ फैलाते हैं और अल्लाह तआ़ला की ज़मीन को फ़ितना-फ़साद से भर देते हैं।

मगर अब रसूल तो आएँगे नहीं! फिर बुराइयाँ कैसे दूर होंगी? लोग बुराइयों से कैसे बाज़ आएँगे? अल्लाह की ज़मीन से फ़ितना-फ़साद कैसे मिटेगा और नेकियाँ कैसे फैलेंगी? इस काम के लिए प्यारे रसूल (सल्ल०) ने अल्लाह के हुक्म से नेकी फैलानेवालों की एक जमाअत बनाई। इस जमाअत का नाम 'उम्मते-मुस्लिमा' यानी मुस्लिम उम्मत है। प्यारे रसूल (सल्ल०) पर ईमान लानेवाले सब लोग इसी जमाअत के आदमी हैं। अब रसूल (सल्ल०) के बाद यह ज़िम्मेदारी हम पर आ पड़ी है कि हम दीन की बातें फैलाएँ, लोगों को तौहीद

की तालीम दें, तमाम रसूलों पर ईमान लाने का सबक़ दें, आख़िरत की ज़िन्दगी का यक़ीन पैदा कराएँ, बुराइयों से रोकें और नेकियों का हुक्म दें। अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में मुसलमानों से कहा है, "तुम बेहतरीन उम्मत हो, तुम्हें सारे इनसानों की हिदायत के लिए पैदा किया है, तुम भलाइयों का हुक्म देते हो, बुराइयों से रोकते हो और तुम अल्लाह और रसूल (सल्ल.) पर सच्चे दिल से ईमान लाते हो।" ईमान लाने का मतलब ही यह है कि मुसलमान वही काम करें जो प्यारे रसूल (सल्ल.) ने किया था।

प्यारे रसूल (सल्ल.) ने हर तरह के दुख सहकर, हर तरह की मुसीबतें झेलकर इस ज़िम्मेदारी को पूरा किया। लोगों तक ठीक-ठीक दीन पहुँचाया। अल्लाह के रास्ते पर खुद चलकर दिखाया, दूसरों को चलना सिखाया। अल्लाह के बन्दों को अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाया। आप (सल्ल.) अपना काम पूरा करके वापस तशरीफ़ ले गए। दुरूद हो प्यारे रसूल (सल्ल.) पर! सलाम हो प्यारे रसूल (सल्ल.) पर!

प्यारे नबी (सल्ल.) के बाद आप (सल्ल.) के सहाबा (रज़ि.) ने दीन फैलाया। हर तरह दीन की ख़िदमत की। दिन-रात लग-लिपटकर, अल्लाह के बन्दों तक अल्लाह का दीन पहुँचाया, नेकियाँ फैलाईं, बुराइयाँ मिटाईं और अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करके दुनिया से चले गए। अल्लाह उनसे राज़ी हो। प्यारे सहाबा (रज़ि.) के बाद बुज़ुर्गों और दीन के आलिमों ने अपने-अपने ज़माने में दीन का काम किया। अल्लाह के बन्दों को दीन सिखाया, तौहीद की तालीम दी और इस्लाम को फैलाया। ये लोग भी अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करके दुनिया से रुख़सत हो गए। अल्लाह की रहमतें हों उनपर!

अब इस्लाम का नाम लेनेवाले सारे मुसलमानों को यही काम करना है। हमारे सोचने की बात यह है कि हम इस ज़िम्मेदारी को कहाँ तक पूरा कर रहे हैं। हमारा काम यह है कि हम इस्लाम को ठीक-ठीक समझें। खुद इस्लाम पर चलें और दूसरों को चलाएँ। बुराइयाँ मिटाएँ, नेकियाँ फैलाएँ और सब मिलकर अल्लाह के दीन को उसी तरह क़ायम करने की कोशिश करें, जिस तरह प्यारे रसूल (सल्ल.) और आप (सल्ल.) के अच्छे साथियों यानी सहाबा किराम (रज़ि.) ने क़ायम किया और उनके बाद हमेशा अल्लाह के अच्छे बन्दे क़ायम करते रहे हैं।

अगर हमने अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा न किया तो हम कामचोर ठहरेंगे। अल्लाह तआला हमसे रहमत की नज़र फेर लेगा। हम दुनिया में भी बेइज़्ज़त होंगे और आख़िरत में भी रुसवाई होगी।

ऐ अल्लाह! हमको अपने सच्चे दीन पर चला। हमें इस लायक़ बना कि हम इस्लाम की ख़िदमत कर सकें। खुद नेक बनें और दूसरों को नेक बनाएँ। दुनिया में भी कामयाब हों और आख़िरत में भी इनाम पाएँ।

अभ्यास

(क) **उत्तर दीजिए :**

1. किसकी नुबूवत रहती दुनिया तक के लिए है?
2. किस दीन में कुछ घटाने और बढ़ाने की गुंजाइश नहीं है?
3. किसको अपनाने में दीन-दुनिया की भलाई है?
4. किस जमाअ़त का नाम उम्मते-मुस्लिमा है?
5. उम्मते-मुस्लिमा की क्या ज़िम्मेदारी है?
6. सहाबा किराम (रज़ि॰) ने दीन को फैलाने में क्या किरदार रहा है?
7. अगर हमने अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा नहीं किया तो क्या होगा?

हदीस शरीफ़

अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन मजीद में फ़रमाया है कि प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम्हारे लिए हर मामले में 'उसवा' हैं। उसवा नमूने को कहते हैं। इसका मतलब यह है कि मुसलमानों को हर बात और हर काम में प्यारे रसूल (सल्ल०) को नमूना बनाना चाहिए।

प्यारे रसूल (सल्ल०) नबी होने के बाद 23 साल तक इस दुनिया में रहे। जब तक रहे लोगों को दीन की बातें बताने, अच्छाई की तालीम देने और बुरे-भले का फ़र्क़ बताने में लगे रहे। आप (सल्ल०) के सगे-संबंधी, बीवियाँ, बच्चे और दूसरे सहाबी मर्द और औरतें सब आप (सल्ल०) की बातें ध्यान से सुनते। आप (सल्ल०) के हर-हर काम पर नज़र रखते। जो बात समझ में न आती उसमें इस्लाम का हुक्म मालूम करते। आप (सल्ल०) कभी बताते, कभी ख़ुद करके दिखाते। लोग उन बातों को याद रखते और दूसरों को बताते। कभी आप (सल्ल०) कोई काम किसी ख़ास तरीक़े पर करते। कभी किसी सहाबी (रज़ि०) को कोई काम करते देखते तो ख़ुश होकर सराहते या फिर मना फ़रमाते। कभी आप (सल्ल०) ख़ुद किसी काम के करने का हुक्म देते, कभी किसी काम से रोकते। कभी आप (सल्ल०) क़ुरआन मजीद के किसी हुक्म को खोलकर बयान फ़रमाते, कभी किसी हुक्म पर अमल करने का तरीक़ा बताते। आप (सल्ल०) के सहाबा (रज़ि०) इन सारी बातों को बड़े ध्यान से सुनते, देखते और याद कर लेते। कभी लिख लेते और यह भी लिखते कि यह बात हमें किससे मालूम हुई या किसने प्यारे रसूल (सल्ल०) को ऐसा करते देखा। धीरे-धीरे लोगों ने इन बातों को किताबों में लिख लिया। इन्हीं को 'हदीस' कहते हैं। अगर हदीस न होती तो हम इस्लाम पर नहीं चल सकते थे। अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया कि नमाज़ पढ़ो, लेकिन किस तरह पढ़ें, कितनी-कितनी रक्अतें पढ़ें, यह प्यारे रसूल (सल्ल०) ही ने बताया। अल्लाह तआ़ला ने हज का हुक्म दिया, लेकिन हज का तरीक़ा प्यारे रसूल (सल्ल०) ने बताया और करके दिखाया। ज़कात का हुक्म तो क़ुरआन में है, लेकिन कितने माल में कितनी ज़कात दें, यह

प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने बताया। ग़रज़ यह कि हदीस के बग़ैर हम इस्लाम के हुक्मों पर अमल कर ही नहीं सकते। इसी लिए हम हदीस को मानते हैं, पढ़ते और याद करते हैं। हदीस की बहुत-सी किताबें हैं। जिन लोगों ने हदीसें याद करके किताबों में लिखीं और हदीस की किताबें तैयार कीं, उन्हें 'मुहद्दिसीन' कहते हैं।

कुछ मशहूर मुहद्दिसीन ये हैं : इमाम बुख़ारी (रह॰), इमाम मुस्लिम (रह॰), इमाम मालिक (रह॰), इमाम तिर्मिज़ी (रह॰), इमाम अबू-दाऊद (रह॰), इमाम नसई (रह॰) और इमाम इब्ने-माजा (रह॰)। इनकी किताबें बहुत मशहूर और मानी हुई हैं।

मुहद्दिसीन ने बड़ी मेहनत से हदीसें जमा की हैं। एक-एक हदीस मालूम करने के लिए महीनों सफ़र किया है। और फिर यह जानने के लिए उन्होंने अपनी ज़िन्दगियाँ खपा दीं कि जिन-जिन लोगों ने इन हदीसों को बयान किया है वे कैसे थे, उनकी ज़िन्दगियाँ कैसी थीं, उनके अख़लाक़ कैसे थे, उनका हाफ़िज़ा और याद्दाश्त कैसी थी, उनकी समझ कैसी थी और अल्लाह की हज़ार-हज़ार रहमतें हों उनपर!

सच्ची बात यह है कि मुहद्दिसीन का हमपर बहुत बड़ा एहसान है कि आज हालाँकि प्यारे रसूल (सल्ल॰) इस दुनिया में नहीं हैं, मगर आप (सल्ल॰) की एक-एक बात, एक-एक काम, हदीस की किताबों में महफ़ूज़ हैं और हम हदीसें पढ़कर प्यारे रसूल (सल्ल॰) की पूरी ज़िन्दगी और आप (सल्ल॰) के दिन-रात के सारे काम मालूम कर सकते हैं। इसी लिए तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "मुसलमानो! रसूल (सल्ल॰) की ज़िन्दगी तुम्हारे लिए हर काम में नमूना है।" यह भी फ़रमाया, "जो कुछ तुम्हें रसूल दें, ले लो और जिससे रोकें उससे रुक जाओ।" मुहद्दिसीन ने लाखों हदीसें याद की थीं। हम भी प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की हदीसें पढ़ते हैं, याद करते हैं और उनपर अमल करने की कोशिश करते हैं।

सात अहम हदीसें

1. जिसमें अमानतदारी नहीं, उसमें ईमान नहीं और जिसकी तहारत (पाकी) नहीं, उसकी नमाज़ नहीं और जिसकी नमाज़ नहीं, उसका दीन भी नहीं। दीन में नमाज़ का वही दर्जा है जो जिस्म में सिर का है।
2. जिस माल में से ज़कात नहीं निकाली गई हो, वह माल तबाह-बर्बाद है।
3. क़ुरआन मजीद की तिलावत पाबन्दी से करो। यह ज़मीन में तुम्हारे लिए रौशनी है और आसमान में नेक चर्चे का सबब है।

❹ मोमिनों में सबसे ज़्यादा कामिल ईमानवाला वह है जिसके अख़लाक़ सबसे अच्छे हों।

❺ पहलवान वह नहीं है जो दूसरे को पछाड़ दे। पहलवान वह है जो ग़ुस्से के वक़्त अपने पर क़ाबू रखे।

❻ वह आदमी मोमिन नहीं है जो खुद तो पेट भर खाए और उसका पड़ोसी भूखा रहे।

❼ मोमिन मुहब्बत-ही-मुहब्बत है। उस आदमी में कोई भलाई नहीं जो न दूसरों से मुहब्बत करे और न दूसरे उससे मुहब्बत करें।

अभ्यास

(क) उत्तर दीजिए :

1. हदीस किसे कहते हैं?
2. दीनी लिहाज़ से हदीस की क्या अहमियत है?
3. मुहद्दिसीन किन हज़रात को कहते हैं और उनके कारनामे क्या-क्या हैं?
4. मशहूर मुहद्दिसीन के नाम बताइए?

(ख) ख़ाली जगहों को भरिए :

1. मुसलमानों को हर बात और हर काम में प्यारे रसूल (सल्ल॰) को....................बनाना चाहिए।
2. प्यारे रसूल (सल्ल॰), नबी होने के बाद..................साल तक दुनिया में रहे।
3. अगर............................न होती तो हम इस्लाम पर चल ही नहीं सकते थे।
4. दीन में.......................वही दर्जा है, जो जिस्म में सिर का है।
5. जिस माल में से......................न निकाली गई हो, वह माल तबाह-बर्बाद है।
6. मोमिनों में सबसे ज़्यादा कामिल ईमानवाला वह है, जिसके.....................सबसे अच्छे हों।

कुछ और काम

1. कुछ और हदीसें याद करके दर्जे में सुनाइए और अपनी डायरी में भी नोट कर लीजिए।

15

अगर हदीस न होती तो आज क्या करते?

कलामे-रब के मतालिब बयान क्या करते।
सहीह क्या है? इसी फ़िक्र में रहा करते।
जो दिल में आता वह तफ़सीर कर लिया करते।

खुदा के बन्दों को फ़ितनों में मुबतिला करते।
अगर हदीस न होती तो आज क्या करते?

रसूल, दीने-खुदा का, अगर नमूना थे।
सहाबा, देखने वाले थे इस नमूने के।
नबी का उसवा न पाते जो हम सहाबा से।

खुदा के हुक्म को फिर किस तरह अदा करते।
अगर हदीस न होती तो आज क्या करते?

खुदा का शुक्र कि उसने रसूल को भेजा।
रसूल ही से सहाबा ने दीन पाया था।
हो उनपे रहमते-परवरदिगार का साया।

नबी की बात जो महफ़ूज़ कर लिया करते।
अगर हदीस न होती तो आज क्या करते?

● माइल ख़ैराबादी

16

नबियों के हालात

नबियों के हालात पढ़ने से हमें बड़ा फ़ायदा होता है। दीन पर चलने का शौक़ उभरता है। दीन की ख़ातिर क़ुरबानियाँ देने और दुख सहने की हिम्मत पैदा होती है और ज़्यादा से ज़्यादा नेकियाँ करने को जी चाहता है। कुछ नबियों के हालात तो हम इससे पहली किताबों में पढ़ चुके हैं, कुछ के हालात हम इस किताब में पढ़ेंगे—

हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम)

हज़रत याक़ूब (अलैहिस्सलाम) की औलाद में हज़रत दाऊद (अलैहि०) बहुत मशहूर पैग़म्बर हुए हैं। हज़रत सुलैमान (अलैहि०) इन्हीं के साहबज़ादे हैं। हज़रत सुलैमान (अलैहि०) की माँ भी बड़ी नेक और दीनदार थीं। वह अपने प्यारे बेटे को अच्छी-अच्छी बातें बतातीं। एक बार हज़रत सुलैमान (अलैहि०) को नसीहत फ़रमाई—

> "बेटा! रात भर न सोते रहा करो। जो आदमी सारी-सारी रात सोता है, क़ियामत के दिन उसकी नेकियाँ कम हो जाने का डर है।"

बचपन

हज़रत सुलैमान (अलैहि०) बचपन ही से बहुत समझदार और ज़हीन थे। एक बार उनके बाप हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) के पास दो आदमी अपना मुक़द्दमा लेकर आए। एक आदमी की बकरियों ने दूसरे आदमी का सारा खेत चरकर और रौंदकर बरबाद कर दिया था। हज़रत दाऊद (अलैहि०) ने फ़ैसला दिया कि खेतवाला तमाम बकरियाँ ले ले। हज़रत सुलैमान (अलैहि०) सुन रहे थे। बोले, "फ़ैसला तो ठीक है, मगर मेरी समझ में यह बात आ रही है कि खेतवाला तमाम बकरियाँ ले ले, उनके दूध, ऊन से फ़ायदा उठाए और बकरियोंवाला फिर से खेत जोते और बोए। जब फ़सल फिर वैसी ही तैयार हो जाए तो खेतवाले को खेत वापस कर दे और अपनी बकरियाँ ले ले।" हज़रत दाऊद (अलैहि०) को अपने होनहार बेटे का फ़ैसला बहुत पसन्द आया और इसके बाद वह अक्सर मुक़द्दमों का फ़ैसला करते वक़्त उनको अपने साथ रखते।

हुकूमत

हज़रत दाऊद (अलैहि॰) के बाद अल्लाह तआला ने हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) को नबी बनाया और मुल्क शाम की हुकूमत भी दी। उनकी हुकूमत सिर्फ़ इनसानों पर ही नहीं थी, बल्कि जानवरों, परिन्दों और जिन्नों यहाँ तक कि हवा तक को अल्लाह तआला ने आपके हुक्म के ताबेअ बना दिया था। अल्लाह तआला ने उन्हें जानवरों की बोलियाँ समझने का इल्म भी दिया था। हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) हवा में अपना तख़्त उड़ा ले जाते, आन की आन में जहाँ चाहते चले जाते, जिन्नों से आप बड़े-बड़े क़िले बनवाते, गहरे समन्दरों में ग़ोता लगवाकर मोती निकलवाते, लड़ाइयों के लिए हथियार बनवाते, बड़ी-बड़ी देगें बनवाते और वे सारे काम कराते जो इनसानों के बस में नहीं।

चींटियों का मैदान

एब बार हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) अपने लशकर के साथ कहीं जा रहे थे। लशकर में इनसान, परिन्दे, जानवर और जिन्नात, सभी थे। चलते-चलते एक ऐसे मैदान में पहुँचे जहाँ अनगिनत चींटियाँ खाने की तलाश में इधर-उधर घूम रही थीं। हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) के लशकर को देखकर चींटियों की मलिका ने कहा—

"ऐ चींटियो! अपने बिलों में घुस जाओ, सुलैमान नबी का लशकर आ रहा है। ऐसा न हो कि सुलैमान (अलैहि॰) और उनका लशकर तुम्हें रौंद डाले और बेख़बरी में उन्हें ख़याल भी न हो कि उन्होंने कितनी जानों का ख़ून कर दिया।"

हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) चूँकि जानवरों की बोली समझते थे, चींटी की तक़रीर सुनकर मुसकुराए और फ़ौरन अल्लाह का शुक्र अदा किया और दुआ की, "ऐ अल्लाह, मेरे जईफ़ माँ-बाप पर रहमतें नाज़िल फ़रमा। ऐ अल्लाह, मुझपर भी अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे नेक बन्दों में शामिल फ़रमा कि मैं तेरा शुक्रगुज़ार बनूँ और ऐसे काम करूँ जिनसे तू ख़ुश हो!"

हुदहुद का क़िस्सा

एक बार आपने अपनी फ़ौज का मुआयना किया तो हुदहुद परिन्दा ग़ायब था। बोले : हुदहुद कहाँ है? आते ही फ़ौरन हाज़िर किया जाए। अगर ग़ैर हाज़िरी की कोई सही वजह न बताई तो उसे सख़्त सज़ा दूँगा। थोड़ी ही देर गुज़री थी कि हुदहुद आ पहुँचा। हज़रत

सुलैमान (अलैहि॰) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। बोला : ऐ अल्लाह के नबी! मैं एक ऐसी सच्ची ख़बर लाया हूँ जिसे आप इससे पहले न जानते थे।

सबा की मलिका

हुद्हुद ने कहा : मैं उड़ते-उड़ते 'सबा' पहुँचा। सबा देश में एक औरत हुकूमत करती है। अल्लाह ने उसे सब कुछ दे रखा है और उसका एक बहुत ख़ूबसूरत और शानदार तख़्त है। वह और वहाँ के लोग अल्लाह को भूले हुए हैं और अल्लाह को छोड़कर सूरज की पूजा करते हैं और तरह-तरह की बुराइयों में शैतान ने उन्हें फँसा रखा है।

सुलैमान (अलैहिस्सलाम) का ख़त

हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) ने हुद्हुद का बयान सुना तो उन्हें बहुत फ़िक्र हुई कि उनके क़रीब ही सबा देश में लोग अल्लाह को छोड़कर सूरज को पूजते हैं और अपने पैदा करनेवाले की नाफ़रमानी करते हैं। हुद्हुद से बोले : अच्छा मैं जाँचना चाहता हूँ कि यह ख़बर कहाँ तक सच्ची है? आप (अलैहि॰) ने सबा की मलिका के नाम एक ख़त लिखा—

"यह ख़त सुलैमान की तरफ़ से है। अल्लाह के नाम से जो बहुत रहम करनेवाला और बहुत ही मेहरबान है। मुक़ाबले में सरकशी न करो और अल्लाह की फ़रमाँबरदार बन्दी बनकर हमारे पास आओ।"

सबा की मलिका ने ख़त पढ़ा तो उसपर बड़ा असर हुआ। अपने वज़ीरों और सरदारों को मशविरे के लिए जमा किया। सुलैमान (अलैहि॰) का ख़त सुनाया और कहा : बताओ क्या किया जाए। वज़ीर ख़त सुनकर अकड़ गए और बोले : डरने और दबने की कोई बात नहीं। हमारे पास ताक़त है। आप इशारा फ़रमाएँ, हम लड़ाई से पीठ फेरनेवाले नहीं।

मलिका ने तोहफ़े भेजे

सबा की मलिका बहुत समझदार औरत थी। बोली : लड़ाई अच्छी नहीं। बादशाह लोग जब किसी देश पर चढ़ाई करते हैं तो देशवाले पिस जाते हैं। शरीफ़ लोगों की मिट्टी पलीद होती है और मुल्क तबाह हो जाता है। इसलिए मैं कुछ लोगों के हाथ कुछ तोहफ़े भेज कर यह अन्दाज़ा लगाऊँगी कि सुलैमान (अलैहि॰) वाक़ई अल्लाह के रसूल हैं या दुनिया के बादशाहों की तरह उन्हें दौलत और हुकूमत का लालच है। तोहफ़े लेकर कुछ लोग हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) के पास पहुँचे। हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) ने तोहफ़े देखे तो बोले :

मलिका ने मेरा मतलब ही नहीं समझा, मुझे दुनिया की दौलत नहीं चाहिए। अल्लाह ने मुझे जो कुछ दे रखा है वह इससे कहीं ज़्यादा है। ले जाओ, ये तोहफ़े तुम्हीं को मुबारक हों। मलिका से कहना कि मैं तो सिर्फ़ यह चाहता हूँ कि तुम लोग एक अल्लाह की बन्दगी करो और उसके फ़रमाँबरदार हो जाओ।

ये लोग वापस हुए। मलिका को पूरी बात बताई और सुलैमान (अलैहि॰) के अख़लाक़ और नेकी का हाल बताया।

एक मोजज़ा

हालात सुनकर मलिका खुद हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) से मिलने के लिए रवाना हुईं। अल्लाह तआला ने सुलैमान (अलैहि॰) को मलिका के चल पड़ने की ख़बर दी। इधर से यह रवाना हुई और हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) ने अपने वज़ीरों से कहा, "मैं चाहता हूँ कि मलिका के यहाँ आने से पहले ही उनका शानदार तख़्त यहाँ उठकर आ जाए। एक जिन्न बोला : आपके यहाँ से उठने से पहले मैं उसे हाज़िर कर दूँगा। दूसरा जिन्न बोला : हुज़ूर तख़्त लाने में क्या देर लगती है, पलक झपकते ही आता है। हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) ने जो मुड़कर देखा तो तख़्त रखा हुआ है। हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) बोले : यह सब अल्लाह का करम है। मेरी क्या ताक़त कि मैं इतनी-सी देर में तख़्त मँगवा सकूँ। यह सब अल्लाह ही की मेहरबानी है। वह आज़माना चाहता है कि मैं उसका शुक्रगुज़ार बनता हूँ या अपनी ताक़त पर घमंड करके नाशुक्रा बनता हूँ। सुलैमान (अलैहि॰) ने तख़्त में ज़रा-सी तब्दीली करा दी और जब मलिका पहुँची तो उससे हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) ने पूछा : कहो यह तुम्हारा तख़्त है? वह बोली : यह तो जैसे वही है। हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) ने क़िस्सा सुनाया। उसपर बड़ा असर हुआ और दिल ही दिल में सोचने लगी कि ये ज़रूर अल्लाह के नबी हैं।

शीश महल

हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) ने मलिका से कहा : शीश महल में चलकर आराम कीजिए! शीश महल में बिल्लौर का ख़ूबसूरत फ़र्श था और देखने से ऐसा मालूम होता था कि जैसे साफ़-शफ़्फ़ाफ़ पानी बह रहा हो। सबा की मलिका जब दाख़िल होने लगी तो अपने पायंचे ऊपर को उठा लिए। हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) ने बताया : नहीं, यह पानी नहीं है। यह तो फ़र्श है! मलिका हैरान रह गई और सोचने लगी कि वाक़ई हज़रत सुलैमान (अलैहि॰)

सब कुछ पाकर भी अल्लाह को नहीं भूले और न ही उन्हें अपनी ताक़त और दौलत पर घमंड है। यह तो ज़रूर अल्लाह के नबी हैं।

मलिका एक अल्लाह की फ़रमाँबरदार हो गई

मलिका फ़ौरन पुकार उठी : मेरे परवरदिगार, तुझे भुलाकर मैंने सूरज को पूजा। मैंने अपने ऊपर बड़ा ही जुल्म किया। परवरदिगार सब कुछ तेरे क़ब्ज़े में है। मैं भूल में थी। मुझे माफ़ फ़रमा दे। ऐ सारे जहानों के रब! मैंने हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) के साथ तेरी इताअत क़बूल कर ली और तेरी फ़रमाँबरदार हो गई।

हज़रत शुऐब (अलैहिस्सलाम)

कुल्ज़ुम समन्दर के पूर्वी किनारे पर मद्‌यन नामक एक क़बीला आबाद था। अब भी हिजाज़वाले जब शाम व फ़िलिस्तीन जाते हैं तो उनकी बस्ती के खंडहर रास्ते में मिलते हैं। वे तिजारत करते थे। अल्लाह तआ़ला ने उन्हें दुनिया की दौलत दे रखी थी। मेवों से लदे हुए बाग़, लहलहाती खेतियाँ, माल-दौलत, ग़रज़ ऐश व आराम की हर चीज़ अल्लाह तआ़ला ने उन्हें दे रखी थी। मगर वे बदबख़्त अपने माल व दौलत पर घमंड करने लगे। उनकी नीयतें ख़राब हो गईं और अल्लाह को भुला बैठे। उनमें तीन बड़ी-बड़ी ख़राबियाँ पैदा हो गईं :

① वे अल्लाह को छोड़कर बुतों को पूजने लगे।

② जब दूसरों से कुछ ख़रीदते तो पूरा-पूरा तौलकर लेते और जब दूसरों को कुछ देते तो कम तौलते। यानी नाप-तौल में कमी करते।

③ तमाम मामलों में बेईमानी और ख़यानत करते।

आख़िरकार अल्लाह तआ़ला को उनकी हालत पर रहम आया। उनको नेकी की राह दिखाने और बेईमानी से बचाने के लिए अल्लाह तआ़ला ने हज़रत शुऐब (अलैहि॰) को नबी बनाकर भेजा। हज़रत शुऐब (अलैहि॰) बेहतरीन मुक़र्रिर (तक़रीर करनेवाले) थे। इसी लिए इनको लोग 'ख़तीबुल-अंबिया' के लक़ब से याद करते थे। उन्होंने अपनी क़ौम को हर तरह समझाया। अल्लाह के एहसानात याद दिलाए और बुराइयों के ख़ौफ़नाक अंजाम और आख़िरत के अज़ाब से डराया।

हज़रत शुऐब (अलैहिस्सलाम) की तक़रीर

हज़रत शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने तक़रीर करते हुए फ़रमाया—

"भाइयो! एक अल्लाह की बन्दगी करो, उसके सिवा कोई बन्दगी के लायक़ नहीं है। नाप-तौल में कमी न करो। अल्लाह ने तुम्हें सब कुछ दे रखा है, उसकी नाशुक्री न करो। नाशुक्री का अज़ाब बहुत सख़्त है। लोगों के हक़ में कमी न करो। हर एक को इनसाफ़ के साथ उसका हक़ ठीक-ठीक पहुँचाओ और मुल्क में फ़ितने-फ़सादों का सबब न बनो। दुनिया के ज़लील फ़ायदे के मुक़ाबले में आख़िरत के हमेशा रहनेवाले फ़ायदे को पेशे-नज़र रखो और दुनिया के हराम माल के लिए अपनी नीयत न ख़राब करो। अल्लाह ने मुझे नबी बनाया है और तुम्हारी भलाई के लिए खुली-खुली निशानियाँ दी हैं। देखो, जो कुछ मैं तुमसे करने को कहता हूँ, ख़ुद भी उन्हीं बातों पर अमल करता हूँ। मैं तो अपने बस भर तुम्हारी इस्लाह और सुधार चाहता हूँ। मेरा भरोसा अल्लाह पर है। वही मेरे सारे काम बनाएगा। देखो, तुम ज़िद में आकर अल्लाह की नाफ़रमानी पर न अड़ जाना। कहीं ऐसा न हो कि वैसा ही अज़ाब तुमपर आ जाए जैसा कि नूह (अलैहि०), हूद (अलैहि०) और सालेह (अलैहि०) की क़ौमों पर आ चुका है और लूत (अलैहि०) की क़ौम का अंजाम और उनके खंडहर तो तुम्हारे सामने ही हैं।"

"भाइयो! तौबा क़रो, अल्लाह से डरो और अपने गुनाहों की माफ़ी चाहो। उसकी तरफ़ पलटो। वह बड़ा ही मेहरबान और बड़ी ही मुहब्बत करनेवाला है।"

क़ौम का जवाब

लोगों ने हज़रत शुऐब (अलैहि०) से कहा : हमें तो तुम्हारी यह 'एक अल्लाहवाली बात' समझ में नहीं आती और न ही 'यह आख़िरत' की बात हमारी समझ में आती है। हम कैसे मान लें कि तुम अल्लाह के नबी हो और जो कुछ तुम कहते हो उसी के मानने में भलाई है। हम तो यह देखते हैं कि तुम हमारे दरमियान कमज़ोर आदमी हो। अगर तुम्हारी बातें सच्ची होतीं तो तुम्हारी ज़िन्दगी हमसे अच्छी होती। वह तो यह कहो कि तुम्हारी बिरादरी का ख़याल है, वरना कब का हम तुम्हें पत्थरों से मार-मार कर हलाक कर देते। और फिर हमारी समझ में यह बात भी नहीं आती कि भला मेहनत-मशक़्क़त करके माल हम कमाएँ और उसको अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ ख़र्च भी न कर सकें। हमारा अपना माल है, जिस तरह हमारा जी चाहेगा, ख़र्च करेंगे और जिसको जितना चाहेंगे देंगे। लेन-देन में

इनसाफ़वाली बात भी ख़ूब कही। तिजारत का ईमानदारी से क्या वास्ता? क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें यही सब बताती है। भला नमाज़ से इन बातों का क्या ताल्लुक़? अगर हम कम तौलना छोड़ दें और कारोबार में खोट न करें तो कुछ दिन में ख़ाली हाथ होकर रह जाएँ। और फिर हम अपने देवताओं को कैसे छोड़ दें, जिनको हमारे बाप-दादा पूजते चले आए हैं। अब दो ही शक्लें हैं कि या तो हम तुम्हें और तुम्हारे साथियों को देश-निकाला दें या फिर यह कि तुम अपने बाप-दादा के दीन में लौट आओ।

हज़रत शुऐब (अलैहि॰) ने उनको हर तरह समझाया। अल्लाह के अज़ाब से डराया, नेकी का अंजाम बताया, नाप-तौल में कमी के बुरे अंजाम से डराया। अल्लाह की नेमतें याद दिलाईं और कहा : देखो, तुम कितने थोड़े थे। अल्लाह ने तुम्हें औलाद दी। तुम्हारी तादाद और ज़्यादा हो गई। मगर वे अपनी हठ पर अड़े रहे। माल-दौलत के नशे ने उन्हें ऐसा गुमराह कर दिया था कि वे शुऐब (अलैहि॰) से कहते कि हमें तुम्हारी यह ईमानदारीवाली बात समझ में नहीं आती। वे न सिर्फ़ खुद गुमराह हुए, बल्कि ईमान लानेवालों को भी रोकते, उन्हें भी हज़रत शुऐब (अलैहि॰) से न मिलने देते और हर तरह से सताते।

आग की बारिश

हज़रत शुऐब (अलैहि॰) ने कहा कि मैं क्या कर सकता हूँ, ज़बरदस्ती तो मैं तुम्हारे दिलों में ईमान ठूँस नहीं सकता। जहाँ तक समझाने का ताल्लुक़ था, मैंने तुम्हें हर तरह समझाया। अब तुम अज़ाब का इन्तिज़ार करो। मालूम हो जाएगा कि कौन झूठा है और कौन सच्चा। आख़िरकार अज़ाब की घड़ी आ पहुँची। अल्लाह तआला ने हज़रत शुऐब (अलैहि॰) और उनपर ईमान लानेवालों को बचा लिया और काफ़िरों को एक ज़बरदस्त ज़लज़ले के अज़ाब ने आ घेरा। वे लोग आराम से सो रहे थे कि ज़लज़ला आया और फिर आसमान से आग बरसने लगी। वे घमंडी औंधे मुँह पड़े हुए झुलस कर रह गए। ऐसे तबाह हुए कि जैसे वहाँ कभी वे बसते ही न थे। बेशक अल्लाह की नाफ़रमानी का यही अंजाम होता है। इस क़िस्से में हमारे लिए बहुत-सी नसीहतें हैं। जैसे—

❶ आम तौर पर लोग इबादत ही को दीन समझते हैं और लेन-देन में ईमानदारी बरतने में, बन्दों के हुक़ूक़ अदा करने और दुनिया के दूसरे मामलों में दीन से बेपरवाह होते हैं। इस क़िस्से से हमें मालूम होता है कि दीनदारी सिर्फ़ नमाज़ पढ़ना या दूसरी इबादतों का बजा लाना ही नहीं, बल्कि दुनिया के सारे मामलों में अल्लाह की मर्ज़ी पर चलना दीनदारी है।

❷ नाप-तौल में कमी करना, पूरा लेना और कम देना बहुत बड़ा गुनाह है। इससे लोगों में इन्तिहाई बुरे अख़लाक़ पैदा होते हैं। लालच, ख़ुदग़र्ज़ी और ज़िल्लत पैदा होती है। इसी लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया है, "नाप-तौल में कमी करनेवालों के लिए हलाकत है। जब दूसरों से लेते हैं तो पूरा-पूरा लेते हैं और जब देते हैं तो कम नापते और कम तौलते हैं।" इसी लिए तो अल्लाह तआला ने नाप-तौल की इस्लाह के लिए शुऐब (अलैहि॰) को नबी बनाकर भेजा था।

❸ सच्चा दीनदार वही है जिसको उसकी नमाज़ बुराई से बचाती है और ज़िन्दगी के हर मामले में अल्लाह का बन्दा बनाती है। नमाज़ उसे बाप-दादा की ग़लत रस्मों से भी रोकती है और लेन-देन में भी ईमानदार बनाती है। वह ख़ुद ही नेक नहीं होता, बल्कि दुनिया को भी नेक बनाने की फ़िक्र करता है। ख़ुद भी अल्लाह की मर्ज़ी पर चलता है और दूसरों को भी अल्लाह की मर्ज़ी पर चलाने की कोशिश करता है।

हज़रत यहूया (अलैहिस्सलाम)

हज़रत याक़ूब (अलैहिस्सलाम) की औलाद में ज़करीया (अलैहि॰) एक नबी गुज़रे हैं। वे जब बहुत बूढ़े हो गए तो उन्होंने दुआ की : ऐ मेरे परवरदिगार! मैं बहुत कमज़ोर हो गया हूँ। मेरे सिर के बाल सफ़ेद हो गए हैं। मेरे रब, कभी ऐसा नहीं हुआ कि तूने मेरी दुआ क़बूल न की हो। मुझे अपने बाद रह जानेवालों से बड़ा डर है, न मालूम मेरे बाद वे क्या-क्या ख़राबियाँ फैलाएँ। ऐ मेरे रब! मेरी बीवी बाँझ है। मुझपर फ़ज़्ल फ़रमा और मुझे एक ऐसा बेटा दे जो वही काम करे जिसके लिए तूने मुझे नबी बनाया।

अल्लाह तआला ने हज़रत ज़करीया (अलैहि॰) को पुकारा : ऐ ज़करीया! हम तुम्हें बेटे की ख़ुशख़बरी देते हैं, जिसका नाम यहूया होगा।

यहूया (अलैहि॰) बहुत ही नेक और अल्लाह तआला से डरने वाले थे। अल्लाह तआला के डर से अकसर रोते रहते थे जिसकी वजह से उनके गालों पर आँसुओं के निशान पड़ गए थे। एक बार जंगल में हज़रत ज़करीया (अलैहि॰) उनसे मिले। बोले, "बेटा! हम तो तुम्हें तलाश कर रहे हैं और तुम यहाँ रो रहे हो।" यहूया (अलैहि॰) ने कहा, "अब्बा जान, आप ही ने तो बताया है कि जन्नत और जहन्नम के बीच एक बहुत बड़ा मैदान है, जो अल्लाह के डर से रोए बग़ैर तय नहीं होगा।" यह सुनकर ज़करीया (अलैहि॰) भी रोने लगे।

हज़रत यह्या (अलैहि॰), नेकों के सरदार, बहुत ही शरीफ़ और परहेज़गार थे। अल्लाह तआला ने उन्हें बचपन ही में इल्म की दौलत से मालामाल कर दिया था और दानाई की बातें बता दी थीं। वे हर क़िस्म की बुराइयों से पाक थे, बड़े ही नर्म दिल, पाक-साफ़ और माँ-बाप की ख़िदमत करनेवाले थे। कभी कोई सख़्ती की बात न करते और न ही कभी माँ-बाप की नाफ़रमानी करते। वे बड़े ही फ़रमाँबरदार थे। अल्लाह तआला ने उन्हें दीन-दुनिया की भलाई बख़्शी थी।

नुबूवत

यह्या (अलैहि॰) को अल्लाह तआला ने जब नबी बनाया तो कोई नई किताब नहीं दी थी, बल्कि उन्हें हुक्म दिया कि 'तौरात' पर मज़बूती से अमल करो और दूसरों को भी इसी की हिदायत दो। चुनाँचे हज़रत यह्या (अलैहि॰) लोगों को तौरात पर अमल करने की हिदायत करते रहे और ईसा (अलैहि॰) के आने की ख़ुशख़बरी सुनाते रहे।

पाँच बातों का हुक्म

अल्लाह के आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने हज़रत यह्या (अलैहि॰) को पाँच बातों का ख़ासतौर पर हुक्म दिया था कि वे ख़ुद भी उनपर अमल करें और इसराईलियों को भी बताएँ। उन्होंने लोगों को बैतुल-मक़्दिस में जमा किया। जब मस्जिद भर गई तो आपने नसीहतें करनी शुरू कीं—

भाइयो! मुझे अल्लाह तआला ने पाँच बातों का हुक्म दिया है कि मैं ख़ुद भी उनपर अमल करूँ और तुम्हें भी बताऊँ। सुनो! वे पाँच बातें ये हैं—

❶ अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो। किसी को उसका शरीक न बनाओ। शरीक बनानेवाले की मिसाल ऐसी है जैसे कि एक आदमी अपने रुपयों से गुलाम ख़रीदे, मगर वह गुलाम जो कुछ कमाए मालिक को देने की बजाय, दूसरों को दे दे। कौन ऐसे गुलाम को पसन्द करेगा? देखो, अल्लाह ही ने तुमको पैदा किया, वही तुम्हें रोज़ी देता है, इसलिए तुम्हें उसी की इबादत करनी चाहिए।

❷ नमाज़ ठीक-ठीक अदा करो। नमाज़ में किसी और तरफ़ ध्यान न लगाओ। जब तुम अल्लाह तआला की तरफ़ ध्यान दोगे, तो वह भी तुमपर रहमत बरसाएगा।

❸ रोज़ा रखो। रोज़ा रखनेवाले की मिसाल ऐसी है, जैसे कोई आदमी अपने साथियों में

बैठा हो और उसके पास मुश्क की थैली हो। रोज़ेदार के मुँह की ख़ुशबू मुश्क से भी बेहतर है।

❹ माल में से सदक़ा दो। सदक़ा देनेवाले की मिसाल यूँ समझो जैसे किसी आदमी को दुशमन पकड़कर और उसके हाथ गर्दन से बाँधकर क़त्ल करने के लिए ले जा रहे हों और वह मायूसी से कहे : क्या मैं माल दे दूँ तो जान छूट जाएगी?

लोग कहें : हाँ। और वह अपनी जान छुड़ाने के लिए अपनी सारी धन-दौलत दे दे।

❺ दिन-रात अल्लाह का ज़िक्र किया करो। अल्लाह का ज़िक्र करनेवाले की मिसाल यूँ समझो, जैसे कोई दुशमनों से भाग रहा हो और वे उसका पीछा कर रहे हों और वह भागकर किसी महफ़ूज़ क़िले में छिप जाए। अल्लाह के ज़िक्र में मशग़ूल होना, शैतान के हमलों से क़िले में महफ़ूज़ होना है।

हज़रत यह्या के ख़ुतबात निहायत असरदार होते और सुननेवालों के दिलों में उतर जाते। आप हक़ बात कहने में निहायत बेबाक थे। चाहे अमीर हो या ग़रीब, हाकिम हो या ग़ुलाम किसी के सामने हक़ बात कहने में ज़रा भी नहीं झिझकते थे। यही बात बिल-आख़िर आप (अलैहिस्सलाम) के क़ैद व बन्द और शहादत का सबब बनी।

अभ्यास

(क) **उत्तर दीजिए :**

1. नबियों के हालात पढ़ने से हमें क्या-क्या फ़ायदे होते हैं?
2. हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) को उनकी माँ ने क्या नसीहत फ़रमाई थी?
3. हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) की हुकूमत इनसानों के अलावा और किन-किन पर थी?
4. सबा की मलिका ने हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) के पास तोहफ़े क्यों भेजे थे?
5. वे कौन-सी बातें थीं जिन्हें देख और समझकर सबा की मलिका ने इस्लाम क़बूल किया?

6. हज़रत शुऐब (अलैहि॰) की क़ौम में कौन-कौन-सी ख़राबियाँ पैदा हो गई थीं?
7. हज़रत शुऐब (अलैहि॰) की क़ौम पर किस क़िस्म का अज़ाब नाज़िल हुआ?
8. हज़रत यह्या (अलैहि॰) को किन पाँच बातों का हुक्म दिया गया था?
9. हज़रत ज़करीया (अलैहि॰) ने अल्लाह तआ़ला से क्या दुआ की थी?
10. हज़रत शुऐब (अलैहि॰) के क़िस्से से हमें क्या नसीहतें मिलती हैं?

(ख) नीचे लिखे वाक्यों में से सही वाक्य के सामने (√) और ग़लत के सामने (×) का निशान लगाइए :

1. हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) हज़रत दाऊद (अलैहि॰) के साहबज़ादे थे। ( )
2. हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) बादशाह थे। ( )
3. हज़रत शुऐब (अलैहि॰) बेहतरीन मुक़र्रिर थे। ( )
4. हज़रत शुऐब (अलैहि॰) की क़ौम बुतों की पूजा करती थी। ( )
5. हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) ने सबा की मलिका का तोहफ़ा क़बूल कर लिया था।( )

कुछ और काम

1. माइल ख़ैराबादी की किताब 'इबरतनाक क़ुरआनी क़िस्से' लाइब्रेरी से हासिल करके पढ़िए।

17

ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन

प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दस सहाबी (रज़ि॰) ऐसे थे, जिनको दुनिया ही में जन्नत की ख़ुशख़बरी मिल गई थी। उन्हें 'अशरा-ए-मुबश्शिरा' कहते हैं। इनमें से छह का हाल तो हम तफ़सील से पढ़ चुके हैं। चार के बारे में तफ़सील बाक़ी है। हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰), हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰), हज़रत उस्मान (रज़ि॰) और हज़रत अली (रज़ि॰)। ये चारों बड़े मर्तबेवाले सहाबी हैं। प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बाद यही लोग आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के जानशीन और ख़लीफ़ा बने। इन्होंने इस्लामी सल्तनत का इन्तिज़ाम सम्भाला और ऐसा इन्तिज़ाम किया कि आज सैकड़ों साल गुज़रने पर भी लोग उन्हें याद करते हैं और उस तरह के इन्तिज़ाम के लिए तरसते हैं। अल्लाह फिर वह दिन लाए कि हम दुनिया में वैसा ही इन्तिज़ाम देखें और अल्लाह की मख़लूक़ अमन, चैन, सुख और आराम से ज़िन्दगी गुज़ारे। इन चारों के मुख़्तसर हालात इस तरह हैं—

1 हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰)

इनका नाम 'अब्दुल्लाह' था। 'अबू-बक्र' कुन्नियत थी। प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उनको 'सिद्दीक़' लक़ब दिया था। आमतौर पर वे इसी कुन्नियत और लक़ब ही से मशहूर हैं। उनकी लाडली बेटी हज़रत आइशा (रज़ि॰) प्यारे रसूल (सल्ल॰) की सबसे चहेती बीवी थीं। हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) से भी प्यारे रसूल (सल्ल॰) को बहुत मुहब्बत थी। हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) थे भी बहुत नेक और बड़ी ख़ूबियोंवाले।

कौन-सी बुराई थी जो मक्का में न थी। लोग शराबें पीते, जुआ खेलते, बेशर्मी और बेहयाई की बातें करते थे, लेकिन हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) कभी किसी बुराई के पास भी न फटके। बचपन ही से नेक, नर्म मिज़ाज और सच्चे थे। ग़रीबों और बेवाओं का ख़याल रखते थे, बेकसों की मदद करते थे और हर एक के काम आते थे। बचपन ही से आप

(रज़ि॰) की बड़ी गहरी दोस्ती प्यारे रसूल (सल्ल॰) से थी। इस्लाम से पहले आप (रज़ि॰) ने प्यारे रसूल (सल्ल॰) के साथ तिजारती सफ़र भी किए। प्यारे रसूल (सल्ल॰) को जब अल्लाह तआला ने नबी बनाया तो मर्दों में सबसे पहले हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) ही आप (सल्ल॰) पर ईमान लाए।

हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) मक्के के एक खाते-पीते, शरीफ़ घराने के आदमी थे। अल्लाह तआला ने सब कुछ दे रखा था। बहुत बड़ा कारोबार था। मगर ईमान लाने के बाद उनका ज़्यादा वक़्त इस्लाम को फैलाने में गुज़रने लगा। जहाँ मौक़ा पाते अल्लाह का दीन पहुँचाने का काम करते। इस काम में आप (रज़ि॰) ने जान व माल की परवाह न की। काफ़िरों ने आप (रज़ि॰) को तरह-तरह के दुख दिए, मगर आप (रज़ि॰) ख़ुशी-ख़ुशी सब कुछ सहते रहे और अल्लाह का दीन पहुँचाते रहे।

रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से मुहब्बत

प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) को बहुत मुहब्बत थी। हुज़ूर (सल्ल॰) भी आप (रज़ि॰) को बहुत चाहते थे। शुरू ज़माने में एक बार ख़ाना-ए-काबा में खड़े होकर इस्लाम की तबलीग़ फ़रमा रहे थे कि काफ़िरों ने आकर घेर लिया और इतना मारा कि आप (रज़ि॰) बेहोश हो गए। घर के लोगों को ख़बर हुई तो आकर उठा ले गए। देर तक बेहोश रहे। माँ सरहाने बैठी रो रही थीं। होश आने पर माँ ने हाल पूछा, तो बोले : पहले यह बताओ कि प्यारे रसूल (सल्ल॰) का क्या हाल है? जब तक आप (सल्ल॰) को अपनी आँखों से न देख लूँगा, कुछ न खाऊँगा।

हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) की कोशिशों से बहुत-से लोग मुसलमान हुए जिनमें हज़रत उस्मान ग़नी (रज़ि॰), हज़रत अब्दुर्रहमान-बिन-औफ़ (रज़ि॰), हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰), हज़रत अबू-उबैदा (रज़ि॰), हज़रत सअद-बिन-अबी-वक़्क़ास (रज़ि॰) तो 'अशरा-ए-मुबश्शिरा' में से हैं। यानी इनको दुनिया ही में जन्नत की ख़ुशख़बरी मिल गई थी। मक्के में जो ग़ुलाम मुसलमान हो जाते थे, उनपर उनके आक़ा तरह-तरह से ज़ुल्म करते और बुरी तरह सताते थे। आप (रज़ि॰) ने भारी-भारी रक़में देकर बहुतों को इस ज़ुल्म से छुड़ाया।

हिजरत

हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) की इन कोशिशों को देखकर काफ़िर लोग सबसे ज़्यादा आप (रज़ि॰) को सताते थे। चुनाँचे आप (रज़ि॰) ने प्यारे रसूल (सल्ल॰) से मदीना

जाने की इजाज़त चाही, लेकिन हुज़ूर (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि जल्दी न करो। जब सारे जहाँ के सरदार हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को हिजरत का हुक्म मिला तो हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) को आप (सल्ल॰) ने साथ लिया। इस तरह हिजरत के मुबारक सफ़र में आप प्यारे रसूल (सल्ल॰) के साथ रहे। मदीना पहुँचकर भी आप (रज़ि॰) दीन के कामों में सबसे आगे-आगे रहे। जब काफ़िरों से जंग का सिलसिला छिड़ा तो आप (रज़ि॰) सब जंगों में बड़ी बहादुरी से शरीक हुए और डटकर काफ़िरों का मुक़ाबला किया।

ख़िलाफ़त

प्यारे नबी (सल्ल॰) ने अपनी बीमारी के ज़माने में हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ ही को अपनी जगह इमाम बनाया था। इसलिए मुसलमानों ने प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बाद हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) ही को अपना ख़लीफ़ा चुना। ख़लीफ़ा होने के बाद दिन-रात आप (रज़ि॰) रिआया (जनता) की ख़िदमत में लगे रहते, सादा ज़िन्दगी गुज़ारते, सबके आराम और चैन की सोचते और इस्लाम को फैलाने की हर वक़्त फ़िक्र में लगे रहते। आप (रज़ि॰) की ख़िलाफ़त दो साल तीन महीने और दस दिन तक रही। लेकिन इन थोड़े ही दिनों में आप (रज़ि॰) ने अल्लाह की मख़लूक़ को वह आराम और सुख पहुँचाया कि दुनिया आज तक उस आराम व सुख के लिए तरसती है।

हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) की ज़िन्दगी

हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) ख़लीफ़ा होने से पहले तिजारत किया करते थे, लेकिन जब ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारियाँ आप (रज़ि॰) पर आ पड़ीं तो कुछ बड़े-बड़े सहाबा (रज़ि॰) ने 'बैतुलमाल' से आप (रज़ि॰) के लिए वज़ीफ़ा मुक़र्रर फ़रमा दिया और आप (रज़ि॰) वज़ीफ़े की थोड़ी-सी रक़म में गुज़र-बसर फ़रमाते। निहायत सादी ज़िन्दगी गुज़ारते, मोटा-झोटा पहनते, सादा खाते, दिन-रात अल्लाह की इबादत में लगे रहते, अक्सर रोज़े से रहते, क़ुरआन मजीद पढ़ने का तो आप (रज़ि॰) को बहुत ही शौक़ था। मक्के में आप (रज़ि॰) से क़ुरआन सुन-सुनकर बहुत-से लोग मुसलमान हो गए थे। नमाज़ में क़ुरआन मजीद पढ़ते-पढ़ते रोने लगते और हिचकी बँध जाती।

वफ़ात

21 जुमादल-उख़रा, 13 हिजरी को हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) ने इन्तिक़ाल फ़रमाया। इन्तिक़ाल के वक़्त आपकी उम्र 63 साल थी। हज़रत आइशा (रज़ि॰) के हुजरे

और रसूल (सल्ल॰) के पहलू में आप (रज़ि॰) को दफ़्न किया गया।

अल्लाह हमें भी उन्हीं के रास्ते पर चलाए और जन्नत नसीब करे। आमीन!

❷ हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰)

हज़रत उमर (रज़ि॰) प्यारे रसूल (सल्ल॰) के बहुत क़रीबी रिश्तेदार थे। आप (रज़ि॰) की प्यारी बेटी हज़रत हफ़्सा (रज़ि॰) का विवाह प्यारे रसूल (सल्ल॰) से हुआ था। हज़रत उमर (रज़ि॰) के वालिद का नाम ख़त्ताब था। आप (रज़ि॰) का ख़ानदान अरब में बहुत ऊँचा और शरीफ़ समझा जाता था।

हज़रत उमर (रज़ि॰) बहुत बहादुर, दिलेर और निडर थे। मक्कावालों पर उनका बड़ा असर था। वे क़ुरैश के सरदारों में से थे। कसरत, कुश्ती, घोड़े की सवारी और तीर-तलवार चलाने में आप बहुत माहिर और मशहूर थे। अरब में उनकी बहादुरी की बहुत चर्चा थी।

मुसलमान होना

हज़रत उमर (रज़ि॰) इस्लाम में आने से पहले प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और मुसलमानों के कट्टर दुश्मन थे। प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने आपके लिए दुआ फ़रमाई और अल्लाह ने आप (रज़ि॰) को ईमान की दौलत से मालामाल कर दिया। एक बार हुआ यूँ कि दुशमनी के जोश में (तौबा! तौबा!) प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का क़त्ल करने के इरादे से निकले। उनकी बहन हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) मुसलमान हो चुकी थीं। पहले उनके यहाँ पहुँचे। इत्तिफ़ाक़ से क़ुरआन मजीद की कुछ आयतें सुनीं और अल्लाह तआला ने अपनी रहमत से ऐसा दिल फेर दिया कि फ़ौरन प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर होकर मुसलमान हो गए। हज़रत उमर (रज़ि॰) के ईमान लाने से प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और सहाबा (रज़ि॰) को बहुत ख़ुशी हुई। अब मुसलमान ख़ाना-ए-काबा में नमाज़ पढ़ने लगे और खुले तौर पर अल्लाह की इबादत होने लगी।

हिजरत

नुबूवत के तेरहवें साल जब मदीने की हिजरत का आम हुक्म हुआ तो मुसलमान छिप-छिपाकर डरते-डरते मदीने जाते थे, लेकिन जब हज़रत उमर (रज़ि॰) ने हिजरत की ठानी

तो आप (रज़ि॰) ने कुछ सामान लिया, कमर में तलवार लटकाई और तीर-कमान लेकर ललकारते हुए रवाना हुए। भला किसकी मजाल थी कि उनके मुक़ाबले पर आता।

बुराई से नफ़रत

हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) को बुराई से सख़्त नफ़रत थी। किसी को बुराई करते हुए देखकर आप (रज़ि॰) बरदाश्त न कर सकते थे, गुनाह के काम देखकर आप बेताब हो जाते थे। प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया : शैतान तो उमर (रज़ि॰) के साये से भी भागता है। इसी लिए प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने आपको 'फ़ारूक़' का लक़ब दिया था। 'फ़ारूक़' के मानी हैं नेकी और बदी को बिलकुल अलग-अलग कर देनेवाला। नेकियाँ फैलाना और बुराइयों को मिटाना आप (रज़ि॰) का पसन्दीदा काम था।

ख़िलाफ़त

हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) के बाद हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) मुसलमानों की राय से ख़लीफ़ा बनाए गए। उनकी ख़िलाफ़त का ज़माना रहती दुनिया तक के लिए 'नमूने' का ज़माना है। ख़लीफ़ा होने के बाद उन्होंने खुतबा दिया और दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! मैं सख़्त मिज़ाज हूँ, मुझे नर्म मिज़ाज बना दे और मुझे अपनी प्यारी किताब क़ुरआन मजीद की समझ दे। अल्लाह तआला ने उनकी सुन ली और वे बड़े ही नर्म मिज़ाज और रहम दिल हो गए। हर एक की ख़िदमत के लिए हर वक़्त तैयार रहते। किसी को तकलीफ़ में देखते तो बेचैन हो जाते। रात भर भेस बदलकर गश्त लगाते और लोगों के हालात मालूम करके उन्हें आराम पहुँचाते। वे फ़रमाते थे, "क़ौम का सरदार उनका ख़ादिम है।" हज़रत उमर (रज़ि॰) के ज़माने में हर तरफ़ अम्नो-अमान और ऐशो-आराम था। अमीर-ग़रीब सब सुखी थे। इनसाफ़ का यह आलम था कि अपना-पराया, अमीर-ग़रीब, छोटा-बड़ा हर एक आपकी नज़र में बराबर था। इसी के साथ-साथ आप (रज़ि॰) के रोब-दाब का यह हाल था कि बड़ी-बड़ी हुकूमतें आप (रज़ि॰) का नाम सुनकर काँपती थीं, बड़े-बड़े बहादुर सरदार आपके सामने बोलते हुए थर्राते थे। क्या मजाल कि कोई दम मार सके।

इन्तिज़ाम

हज़रत उमर (रज़ि॰) के दौरे-ख़िलाफ़त में इस्लामी सल्तनत फैलती चली गई और थोड़े ही दिनों में बहुत-से मुल्क इस्लामी सल्तनत में शामिल हो गए। शाम, इराक़, मिस्र, फ़ारस, ख़ुरासान, हर जगह इस्लामी हुकूमत क़ायम हो गई। मुल्क का इन्तिज़ाम बड़े सलीक़े

से किया। मुल्क की तरक़्क़ी और ख़ुशहाली के लिए आप (रज़ि॰) ने बहुत-से बड़े-बड़े काम किए—अदालतें क़ायम कीं, फ़ैसले के लिए क़ाज़ी मुक़र्रर किए, फ़ौज और पुलिस के ज़बरदस्त महकमे क़ायम किए, क़िले बनवाए, यतीमों, बेवाओं और लावारिसों की परवरिश का इन्तिज़ाम किया। जगह-जगह छोटे-बड़े मदरसे क़ायम किए, उस्तादों की तनख़्वाहें मुक़र्रर कीं, कमज़ोर ग़ैर-मुस्लिमों के लिए बैतुलमाल से वज़ीफ़े मुक़र्रर किए, सिंचाई के लिए नहरें खुदवाईं और जगह-जगह तालाब बनवाए।

हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) ही के ज़माने में तरावीह की नमाज़ जमाअत से क़ायम हुई और इस्लामी ख़लीफ़ा के लिए 'अमीरुल-मोमिनीन' का लक़ब पसन्द किया गया। पाँच नए शहर बसरा, कूफ़ा, फ़िस्तात, मूसल और जीज़ह बहुत ही ख़ूबसूरती और सलीक़े से आबाद किए गए। बैतुलमाल का बाक़ायदा इन्तिज़ाम हुआ। मुख़्तलिफ़ रास्तों और शहरों में आप (रज़ि॰) ने मुसाफ़िरख़ाने बनवाए और कुँए खुदवाए। ग़रज़ ऐसा बेहतरीन इन्तिज़ाम किया कि सल्तनत जन्नत का नमूना बन गई। आज तक लोग उस मुबारक ज़माने को याद करते हैं।

पाकीज़ा ज़िन्दगी

हज़रत उमर (रज़ि॰) की ज़िन्दगी बहुत ही पाकीज़ा थी। आप (रज़ि॰) हमेशा सादा रहते, पैवन्द लगे कपड़े पहनते, मामूली खाना खाते, सबके साथ मिल-जुलकर रहते, साथियों के दुख-दर्द का ख़याल रखते, कसरत से नमाज़ें पढ़ते, हर दम अल्लाह से डरते रहते। कभी-कभी क़ुरआन मजीद पढ़ते-पढ़ते इतना रोते कि आँखें सूज जातीं।

क़ुरआन मजीद की मजलिस

हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) ने क़ुरआन मजीद समझने और समझाने के लिए एक मजलिस क़ायम की थी। इस मजलिस में बड़े-बड़े समझदार सहाबा (रज़ि॰) शरीक होते थे, जो क़ुरआन मजीद समझने और समझाने की कोशिश करते थे। सोच-विचार करते थे और इस तरह आपस की कोशिशों से लोगों में क़ुरआन समझने का शौक़ उभारते थे।

शहादत

मदीने में फ़ीरोज़ नाम का एक बदबख़्त पारसी ग़ुलाम रहता था। उसको अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ (रजि॰) से एक मामूली शिकायत हो गई थी। वह ज़ालिम आप (रज़ि॰) की घात में लग गया। एक दिन जब आप (रज़ि॰) फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाने के

लिए मुसल्ले पर खड़े हुए तो बदबख़्त फ़ीरोज़ ने ज़हर से बुझे हुए ख़ंजर से आप (रज़ि॰) पर छह वार किए। आपने अब्दुर्रहमान-बिन-औफ़ (रज़ि॰) को अपनी जगह नमाज़ पढ़ाने के लिए खड़ा किया और खुद ज़ख़्मों के सदमे से गिर पड़े। फ़ीरोज़ भाग गया और उसने खुदकुशी कर ली। ज़ख़्मी होने के बाद तीसरे दिन, यकुम मुहर्रमुल हराम, 24 हिजरी को हज़रत उमर (रज़ि॰) ने इन्तिक़ाल फ़रमाया। "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।" हज़रत सुहैब रूमी (रज़ि॰) ने जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई और प्यारे नबी (सल्ल॰) के पहलू में दफ़न किए गए। इन्तिक़ाल के वक़्त हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) की उम्र 63 साल थी। आप (रज़ि॰) की ख़िलाफ़त साढ़े दस साल तक रही। अल्लाह उनसे राज़ी हो!

❸ हज़रत उस्मान ग़नी (रज़ि॰)

आपका नाम उस्मान और आपके वालिद का नाम अफ़्फ़ान था। अरब के शरीफ़ और इज़्ज़तवाले ख़ानदान से थे। अल्लाह तआला ने आप (रज़ि॰) को बहुत दौलत दे रखी थी। इस्लाम लाने के बाद आप (रज़ि॰) ने सब कुछ इस्लाम की राह में लुटा दिया।

लक़ब

हज़रत उस्मान (रज़ि॰) का लक़ब 'ज़ुन्नूरैन' था, यानी दो नूरवाला। मुसलमान होने के बाद प्यारे नबी (सल्ल॰) ने अपनी प्यारी बेटी रुक़ैया (रज़ि॰) से आप (रज़ि॰) का निकाह कर दिया था। लेकिन अल्लाह का करना कि थोड़े ही दिनों के बाद मदीना जाकर हज़रत रुक़ैया (रज़ि॰) का इन्तिक़ाल हो गया। हज़रत उस्मान (रज़ि॰) को बहुत सदमा हुआ। बीवी की जुदाई का ग़म तो आप (रज़ि॰) को था ही, साथ ही प्यारे नबी (सल्ल॰) से इस रिश्ते के टूट जाने का सख़्त अफ़सोस भी था। प्यारे नबी (सल्ल॰) ने आप (रज़ि॰) को तसल्ली दी और अपनी दूसरी बेटी हज़रत उम्मे-कुलसूम (रज़ि॰) का आप (रज़ि॰) से निकाह कर दिया। इसी लिए आप (रज़ि॰) का लक़ब 'ज़ुन्नूरैन' है।

हज़रत उस्मान बचपन ही से बहुत नेक, सच्चे और पाक-साफ़ आदमी थे। आप बहुत ही शर्मीले और हयादार थे। बेहयाई की बातों के क़रीब भी नहीं फटकते थे। नेक लोगों से मेल-जोल रखते थे। हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) से आप (रज़ि॰) की ख़ूब बनती थी। इन्हीं के समझाने-बुझाने से इस्लाम आप (रज़ि॰) की समझ में आया और आप (रज़ि॰) सच्चे दिल से मुसलमान हो गए।

हिजरत

हज़रत उस्मान (रज़ि॰) ने दो हिजरतें कीं। पहले हब्शा गए, लेकिन कुछ ही दिन बाद वापस आ गए और फिर मदीने को हिजरत करके वहीं रहने लगे। मदीने में जब इस्लामी लड़ाइयों का सिलसिला छिड़ा तो आप (रज़ि॰) तमाम लड़ाइयों में शरीक हुए, सिर्फ़ बद्र की लड़ाई में हज़रत रुक़ैया (रज़ि॰) की बीमारी की वजह से शरीक न हो सके, जिसका आप (रज़ि॰) को अफ़सोस रहा।

ख़िलाफ़त

हज़रत उमर (रज़ि॰) के बाद हज़रत अब्दुर्रहमान-बिन-औफ़ (रज़ि॰) ने, मुसलमानों की राय से हज़रत उस्मान (रज़ि॰) को ख़लीफ़ा मुंतख़ब फ़रमाया। हज़रत उस्मान (रज़ि॰) के ज़माने में मुसलमानों की तादाद बहुत बढ़ गई थी और हर तरफ़ नेकी और भलाई की चर्चा थी। बैतुलमाल में बहुत तरक़्क़ी हुई और उन दिनों मुसलमान ख़ूब ख़ुशहाल थे।

मस्जिदे-नबवी का विस्तार

मुसलमानों की तादाद जब ज़्यादा हो गई और मस्जिदे-नबवी में एक साथ नमाज़ पढ़ना मुमकिन न रहा तो हज़रत उस्मान (रज़ि॰) ने आसपास की ज़मीनें ख़रीदकर मस्जिदे-नबवी का निर्माण और विस्तार कराया। निहायत शानदार, पुख़्ता और कुशादा इमारत बनवाई, जगह-जगह आप (रज़ि॰) ने मुसाफ़िरख़ाने बनवाए, मस्जिदें बनवाईं, सरकारी दफ़्तर और सरकारी इमारतें बनवाईं, पुल और सड़कें बनवाईं। ख़ैबर की तरफ़ से हमेशा सैलाब का ख़तरा रहता था। उसे रोकने के लिए आप (रज़ि॰) ने मज़बूत बाँध बँधवाया।

क़ुरआन की इशाअत

सबसे ज़्यादा ख़याल हज़रत उस्मान (रज़ि॰) को इस्लाम फैलाने का था। आप (रज़ि॰) खुद लोगों के पास पहुँचते और उन्हें इस्लाम की ख़ूबियाँ बताते। इस तरह मुसलमानों की तादाद बढ़ती रही। आप (रज़ि॰) के ज़माने में इस्लामी सल्तनत दूर-दूर तक फैल गई और बहुत-से ऐसे लोग मुसलमान हुए, जो अरब न थे। क़ुरआन मजीद यूँ तो हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) के ज़माने ही में एक जिल्द में जमा कर लिया गया था, लेकिन पढ़ने का कोई तरीक़ा न था, बल्कि हर-हर क़बीले के लोग अपने लह्जे के मुताबिक़ पढ़ते थे। हज़रत उस्मान (रज़ि॰) ने बड़े-बड़े सहाबा (रज़ि॰) के मशविरे से क़ुरआन मजीद पढ़ने का एक तरीक़ा मुक़र्रर

किया और उसे क़ुरैश की क़िरअत में लिखवाकर मुल्क भर में फैलाया, ताकि सारे ही लोग एक क़िरअत में एक ही तरीक़े से क़ुरआन मजीद पढ़ें।

सादा ज़िन्दगी

ईमान लाने से पहले हज़रत उस्मान ग़नी (रज़ि॰) बड़ी शान-शौकत और ठाठ से रहते थे। मगर प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर ईमान लाते ही आप (रज़ि॰) ने हर तरह का ऐशो-आराम छोड़ दिया और ग़रीबों की-सी ज़िन्दगी गुज़ारने लगे। आप अरब के सबसे बड़े ताजिर थे। अल्लाह ने सब कुछ दे रखा था, सैकड़ों नौकर-चाकर थे, लेकिन हमेशा अपना काम अपने हाथ से करते थे। अपने ख़ानदानवालों के साथ अच्छा बर्ताव करते। ग़रीबों और मोहताजों की हर तरह मदद करते। सख़ावत और ख़ैरात से आप (रज़ि॰) की ख़ास दिलचस्पी थी। एक बार अरब में बड़ा ज़बरदस्त क़हत (सूखा) पड़ा, लोग भूखों मरने लगे। उन्हीं दिनों दो सौ ऊँटों का ग़ल्ले से लदा हुआ हज़रत उस्मान ग़नी (रज़ि॰) का एक तिजारती क़ाफ़िला बाहर से आया। सौदागर दौड़े हुए आए और ज़्यादा-से-ज़्यादा क़ीमत देनी चाही। मगर आपने फ़रमाया कि मैं तो उसके हाथ बेचूँगा, जो सबसे ज़्यादा नफ़ा देने का वादा फ़रमाता है और जिसका वादा कभी झूठा नहीं होता। चुनाँचे आप (रज़ि॰) ने सारा ग़ल्ला ग़रीबों और मोहताजों को बाँट दिया। आप (रज़ि॰) बड़े ही हयादार और शर्मीले थे, बन्द कमरे में भी तहबन्द बाँध कर नहाते थे। प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते, "उस्मान (रज़ि॰) से तो फ़रिश्ते भी शर्माते हैं।"

शहादत

ख़िलाफ़त के बाद छह साल तक मुल्क में बड़ा अंम्न व अमान रहा। लेकिन उसके बाद मुल्क में हर तरफ़ बग़ावतें और साज़िशें फैलनी शुरू हो गईं। कुछ लोग हज़रत उस्मान (रज़ि॰) जैसे नेक दिल बुज़ुर्ग के दुशमन हो गए। अगर आप चाहते तो एक इशारे पर बाग़ियों का सिर कुचलवा देते। लेकिन आप (रज़ि॰) ने जनता का ख़ून बहाना पसन्द नहीं किया। आख़िरकार एक दिन बाग़ियों ने घर को घेर लिया और दीवार फाँदकर घर में घुस गए। जुमे का दिन और अस्र का वक़्त था। हज़रत उस्मान (रज़ि॰) बैठे क़ुरआन मजीद की तिलावत फ़रमा रहे थे कि बाग़ियों ने आप (रज़ि॰) पर कई वार किए। उस वक़्त आप (रज़ि॰) यह आयत पढ़ रहे थे, "तुम्हारी मदद के लिए अल्लाह काफ़ी है, वह सुननेवाला है" कि ख़ून के छींटे क़ुरआन मजीद पर गिरे और आप (रज़ि॰) शहीद हो गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि

राजिऊन! हज़रत उसमान ग़नी (रज़ि॰) 12 साल तक मुसलमानों के ख़लीफ़ा रहे। अल्लाह उनसे राज़ी हो। आमीन!

❹ हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ि॰)

अली (रज़ि॰) नाम, अबू-तुराब कुन्नियत और हैदर लक़ब है। आप (रज़ि॰) की वालिदा मुहतरमा का नाम फ़ातिमा और वालिद का नाम अबू-तालिब है। अबू-तालिब प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सगे चचा थे। अब्दुल मुत्तलिब के इन्तिक़ाल के बाद अबू-तालिब ही ने प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की परवरिश फ़रमाई और सख़्त-से-सख़्त हालात में भी आपका साथ नहीं छोड़ा। अबू-तालिब की ज़िन्दगी में काफ़िर आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सताते हुए झिझकते थे। हज़रत अली (रज़ि॰) की वालिदा हज़रत फ़ातिमा मुसलमान हो गई थीं और मदीने को हिजरत भी फ़रमा गई थीं। वहीं उनका इन्तिक़ाल हुआ। कफ़न में प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने आप (रज़ि॰) को अपनी कमीज़ भी पहनाई थी।

हज़रत अली (रज़ि॰) बचपन ही से प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की परवरिश में रहे। प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आपसे इन्तिहाई मुहब्बत थी और हज़रत अली (रज़ि॰) भी दिलो-जान से हुज़ूर की ख़िदमत करते थे। अल्लाह तआला ने शुरू ही में ईमान की दौलत बख़्श दी थी। बच्चों में सबसे पहले ईमान लानेवाले हज़रत अली (रज़ि॰) ही थे।

हिजरत

मुसलमानों को जब मदीने की तरफ़ हिजरत करने का हुक्म मिला तो सभी ख़ास-ख़ास लोग हिजरत कर गए। सिर्फ़ प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) और हज़रत अली (रज़ि॰) रह गए थे। प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को जब हिजरत का हुक्म मिला तो काफ़िरों ने उस रात क़त्ल करने के इरादे से आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मकान को घेर लिया। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपनी जगह हज़रत अली (रज़ि॰) को लिटाया और खुद हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) को लेकर मदीने की तरफ़ रवाना हो गए।

मक्के के काफ़िर प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के जानी दुश्मन होते हुए

भी अपनी अमानतें आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ही के पास रखते थे, क्योंकि उन्हें आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की अमानतदारी पर पूरा यक़ीन था। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हज़रत अली (रज़ि०) को अपनी जगह इसलिए छोड़ा था कि वे सबकी अमानतें देकर मदीने पहुँचें। हज़रत अली (रज़ि०) अपनी जान की परवाह न करते हुए प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की जगह चादर तानकर लेट गए और फिर सबकी अमानतें देकर दो-तीन दिन के बाद मदीने को रवाना हुए।

बहादुरी

मदीने पहुँचकर इस्लामी लड़ाइयों का जो सिलसिला शुरू हुआ, उन सब में आप (रज़ि०) बराबर शरीक रहे। बद्र की लड़ाई के मौक़े पर जब काफ़िरों की तरफ़ से वलीद और शैबा मुसलमानों को ललकारते हुए निकले तो हज़रत अली (रज़ि०) ने आगे बढ़कर दोनों को ढेर कर दिया। ख़ैबर के क़िले की फ़त्ह आप (रज़ि०) का मशहूर कारनामा है। दूसरी लड़ाइयों में भी आप (रज़ि०) ने अपनी तलवार के जौहर दिखाए।

निकाह

बद्र की लड़ाई के बाद प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपनी साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) का निकाह हज़रत अली (रज़ि०) से कर दिया। प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने खुद ही निकाह पढ़ाया।

तबूक की लड़ाई

सन् 9 हिजरी में जब प्यारे नबी (सल्ल०) ग़ज़वए-तबूक के लिए रवाना हुए तो आप (सल्ल०) ने घरवालों की हिफ़ाज़त के लिए हज़रत अली (रज़ि०) को मदीना में छोड़ा और फ़रमाया, “अली (रज़ि०), तुम मेरे लिए ऐसे हो जैसे मूसा (अलैहि०) के लिए हारून (अलैहि०)।”

ख़िलाफ़त

हज़रत उस्मान (रज़ि०) की शहादत के बाद मुहाजिरीन और अनसार ने हज़रत अली (रज़ि०) की ख़िलाफ़त क़बूल करने के लिए इसरार किया। आप (रज़ि०) ने इसको क़बूल कर लिया और 21 ज़िलहिज्जा 35 हिजरी को पीर के दिन मस्जिदे-नबवी में आप (रज़ि०) के हाथ पर बैत हुई। हज़रत अली (रज़ि०) की ख़िलाफ़त का ज़माना लगभग पाँच साल तक रहा। लेकिन ख़िलाफ़त का पूरा ज़माना फ़ितनों, ख़ानाजंगियों और अन्दरूनी झगड़ों में गुज़रा।

सादा ज़िन्दगी

हज़रत अली (रज़ि॰) ने शुरू ही से ग़रीबी की ज़िन्दगी गुज़ारी थी। दुनिया की दौलत की तरफ़ आप (रज़ि॰) ने कभी ध्यान न दिया। आप हमेशा मेहनत-मज़दूरी करते, घर के छोटे-से-छोटे काम भी आप ख़ुद ही कर लिया क़रते। घर में पानी ख़ुद ही भरते, सौदा-सुल्फ़ ख़ुद ही लाते और आप (रज़ि॰) की बीवी हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) अपने हाथ से चक्की पीसतीं, घर का काम-काज करतीं, सादा रहतीं और मोटा-झोटा पहनतीं, कभी-कभी तो कई-कई वक़्त का फ़ाक़ा होता। दोनों ख़ुद भूखे रहते मगर माँगनेवाले को कभी ख़ाली हाथ न लौटाते।

शहादत

मगर दुनिया ने इस नेकी के पुतले को भी आराम से न रहने दिया और बदबख़्तों ने आप (रज़ि॰) की जान ही लेने की ठान ली। फ़ज्र की नमाज़ में आप (रज़ि॰) सजदे में रब के हुज़ूर सिर रखे हुए थे कि बदबख़्त इब्ने-मल्जम ने तलवार का एक भारी ज़ख़्म लगाया। इब्ने-मल्जम को लोगों ने गिरफ़्तार कर लिया। चूँकि तलवार ज़हर में बुझी हुई थी, इसलिए पूरे जिस्म में ज़हर फैल गया और 20 रमज़ान 40 हिजरी को जुमे की रात में आप (रज़ि॰) हमेशा के लिए दुनिया से जन्नत को रुख़सत हो गए। 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' (हम सब अल्लाह ही के हैं और अल्लाह ही की तरफ़ लौटकर जाएँगे)।

हज़रत अली (रज़ि॰) की कुछ ख़ूबियाँ

① प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया : अली, तुम मेरे लिए ऐसे हो जैसे हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के लिए हारून (अलैहिस्सलाम)।

② ख़ैबर की फ़त्ह का झण्डा आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हज़रत अली (रज़ि॰) के हाथ में दिया और अल्लाह ने फ़त्ह नसीब फ़रमाई।

③ जब मदीने में अनसार और मुहाजिरीन में भाईचारा हुआ तो हज़रत अली (रज़ि॰) ने प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से कहा कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने किसी को मेरा भाई नहीं बनाया, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "तुम दुनिया और आख़िरत दोनों में मेरे भाई हो।"

④ हिजरत के वक़्त प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हज़रत अली (रज़ि॰)-को अपने बिस्तर पर लिटाया और लोगों की अमानतें आप (रज़ि॰) के हवाले कीं।

⑤ बद्र की लड़ाई में हज़रत अली (रज़ि॰) के हाथ से बहुत-से दुश्मन मारे गए और अल्लाह ने इस्लाम को इज़्ज़त दी।

⑥ मक्के के काफ़िरों को सूरा बराअत सुनाने के लिए प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हज़रत अली (रज़ि॰) को मुक़र्रर फ़रमाया।

⑦ इन्तिक़ाल के बाद प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ि॰) ही ने ग़ुस्ल दिया था।

अभ्यास

(क) उत्तर दीजिए :

1. ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के नाम बताइए।
2. हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) इस्लाम लाने से पहले कैसे थे?
3. हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) की कोशिशों से किस-किस ने इस्लाम क़बूल किया?
4. हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) की ज़िन्दगी कैसी थी?
5. हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) के इस्लाम क़बूल करने का वाक़िआ बयान कीजिए।
6. प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने हज़रत उमर (रज़ि॰) को 'फ़ारूक़' का लक़ब क्यों दिया?
7. हज़रत उमर (रज़ि॰) ने अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में क्या-क्या इन्तिज़ामात किए?
8. क़ुरआन की इशाअ़त किसके अह्दे-ख़िलाफ़त में हुई?
9. हज़रत अली (रज़ि॰) की शहादत कैसे हुई?
10. हज़रत अली (रज़ि॰) की ज़िन्दगी कैसी थी?

(ख) **ख़ाली जगहों को भरिए :**

1. हज़रत अबू-बक्र (रज़ि॰) का नाम 'अब्दुल्लाह' और कुन्नियत 'अबू-बक्र' थी। प्यारे रसूल ने आप (रज़ि॰) को............................का लक़ब दिया था।
2. प्यारे नबी (सल्ल॰) को जब अल्लाह की तरफ़ से हिजरत का हुक्म मिला तो हज़रत.......... ....को आप (सल्ल॰) ने साथ लिया।
3. 21 जुमादल-उख़रा 13 हिजरी को हज़रत.......................ने इन्तिक़ाल फ़रमाया।
4. हज़रत उमर (रज़ि॰) के ज़माने में......................की नमाज़ जमाअत से क़ायम हुई।
5. यकुम मुहर्रमुल-हराम 24 हिजरी को हज़रत.....................ने इन्तिक़ाल फ़रमाया।
6. अली, तुम मेरे लिए ऐसे हो जैसे मूसा (अलैहि॰) के लिए........................।
7. हज़रत अली (रज़ि॰) की ख़िलाफ़त का ज़माना तक़रीबन................तक रहा।
8. इन्तिक़ाल के बाद प्यारे नबी (सल्ल॰) को हज़रत................(रज़ि॰) ने गुस्ल दिलाया था।

(ग) **किसने कहा, लिखिए :**

1. शैतान तो उमर (रज़ि॰) के साए से भी भागता है। [ ]
2. ऐ अल्लाह, मैं सख़्त मिज़ाज हूँ, मुझे नर्म मिज़ाज बना दे और मुझे अपनी प्यारी किताब क़ुरआन मजीद की समझ दे। [ ]
3. उस्मान (रज़ि॰) से तो फ़रिश्ते भी शर्माते हैं। [ ]
4. तुम दुनिया और आख़िरत दोनों में मेरे भाई हो। [ ]

(घ) **उचित जोड़े लगाइए :**

1. हज़रत उसमान (रज़ि॰)	फ़ीरोज़ नामक पारसी ग़ुलाम ने शहीद किया।
2. हज़रत उमर (रज़ि॰)	क़ुरआन मजीद एक जिल्द में जमा करवाया था।
3. हज़रत अली (रज़ि॰)	क़ुरआन मजीद के पढ़ने का तरीक़ा मुक़र्रर करवाया था।
4. हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰)	इब्ने-मुल्जम ने शहीद किया।

कुछ और काम

1. माइल ख़ैराबादी की किताब 'प्यारे ख़लीफ़ा' लाइब्रेरी से हासिल करके पढ़िए।

18

चार इमाम

हर आदमी के पास इतनी समझ-बूझ तो होती नहीं कि खुद क़ुरआन मजीद और हदीस शरीफ़ से हर बात का हुक्म मालूम कर ले, इसलिए दीन का गहरा इल्म रखनेवाले कुछ आलिमों ने बड़ी मेहनत से क़ुरआन और हदीस से समझ-समझकर बहुत-से हुक्म एक जगह जमा कर दिए। हलाल-हराम के इन मसाइल और हुक्मों के इन मजमुओं को 'फ़िक़ह' कहते हैं और उन आलिमों को 'फ़ुक़हा' या 'अइम्मा' कहते हैं। शुरू-शुरू में तो बहुत-सी फ़िक़हें थीं, लेकिन अब सिर्फ़ चार इमामों की फ़िक़हें पाई जाती हैं। इन इमामों का हम पर बड़ा एहसान है। इन्हीं की मेहनत का नतीजा है कि आज हम आसानी से इस्लाम का हुक्म मालूम कर लेते हैं। इन इमामों के नाम ये हैं : इमाम अबू-हनीफ़ा (रह॰), इमाम मालिक (रह॰), इमाम शाफ़ई (रह॰) और इमाम अहमद-बिन-हम्बल (रह॰)। अब हम इनके कुछ हालात पढ़ेंगे–

❶ इमाम अबू-हनीफ़ा (रह॰)

उनका नाम नोमान-बिन-साबित (रह॰) है। 'अबू-हनीफ़ा' कुन्नियत है और 'इमामे-आज़म' लक़ब है। वे सन्-180 हिजरी में पैदा हुए। कूफ़ा उनका वतन है। कूफ़ा उस ज़माने में इल्मे-दीन का बहुत बड़ा मर्कज़ था। प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बाद इल्मे-दीन के तीन मशहूर मर्कज़ थे : मक्का, मदीना और कूफ़ा। मक्के में दीन के आलिमों के सरदार हज़रत अब्दुल्लाह बिन-अब्बास (रज़ि॰) माने जाते थे। मदीने में हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने-उमर (रज़ि॰) और कूफ़ा में हज़रत अब्दुल्लाह-बिन-मसऊद दीन के सरदार थे। इमाम अहमद (रह॰) ने इमाम सुफ़यान (रह॰) का क़ौल नक़ल किया है, "हज के अहकाम के लिए मक्का, क़िरअत के लिए मदीना और हलाल-हराम के मसाइल के लिए कूफ़ा मर्कज़ हैं।" कूफ़े में सैकड़ों सहाबा (रज़ि॰) अपने वक़्त में मौजूद रहे और उनके बाद भी बड़े-बड़े आलिमों और फ़ुक़हा का यह मर्कज़ रहा है।

इमाम अबू-हनीफ़ा (रह॰) बड़े ही समझदार, निहायत ज़हीन और इल्मदोस्त आदमी थे। बहुत ही नेक, ख़ुदा-तरस और परहेज़गार थे। हमेशा काम की बात करते, कभी बेकार कामों में वक़्त बरबाद न करते। उस्तादों का बड़ा अदब करते, दोस्तों के साथ अच्छा सुलूक करते, अकसर इबादत और अल्लाह की याद में लगे रहते। नमाज़ में पहरों तक यकसूई के साथ क़ुरआन मजीद की तिलावत फ़रमाते और रोते थे। बड़े ही दयानतदार और सच्चे आदमी थे। वक़्त के अमीरों और हाकिमों के पास कभी न जाते। अल्लाह ने दौलत ख़ूब दे रखी थी। मगर आपने कभी दौलत से मुहब्बत न की। अपनी दौलत इल्म फैलाने और विद्यार्थियों की ज़रूरतें पूरी करने पर ख़ूब ख़र्च करते। अल्लाह ने आपको दीन का बड़ा गहरा और वसीअ इल्म बख़्शा था। दूर-दराज़ मुल्कों से लोग आपकी ख़िदमत में हाज़िर होते, इल्म सीखते और दीन के अहकाम मालूम करते थे। इमाम अबू-हनीफ़ा के शागिर्द तो सैकड़ों हैं लेकिन उनमें से कुछ बहुत मशहूर हैं—

इमाम अबू-यूसुफ़ (रह॰), इमाम मुहम्मद (रह॰), इमाम ज़ुफ़र (रह॰), अब्दुल्लाह-बिन-मुबारक (रह॰), लैस-बिन-साद (रह॰), फ़ुज़ैल-बिन-अयाज़ (रह॰) और दाऊद ताई (रह॰)।

हज़रत इमाम शाफ़ई (रह॰) फ़रमाया करते थे : फ़िक़ह के इल्म में तो सब लोग इमाम अबू-हनीफ़ा (रह॰) के बच्चे हैं और उन्हीं का यह भी कहना है कि जो आदमी फ़िक़ह समझना चाहे, उसके लिए ज़रूरी है कि वह इमाम अबू-हनीफ़ा (रह॰) और उनके साथियों से ताल्लुक़ पैदा करे।

इमाम वक़ीअ (रह॰) फ़रमाते हैं कि मैं किसी आलिम से नहीं मिला जो इमाम अबू-हनीफ़ा से ज़्यादा इल्म रखता हो और उनसे बेहतर नमाज़ पढ़ता हो।

एक बार ख़लीफ़ा मंसूर ने इमाम अबू-हनीफ़ा को क़ाज़ी (जज) बनाना चाहा, उन्होंने फ़रमाया, "मैं इस लायक़ नहीं हूँ।" ख़लीफ़ा ने कहा कि आप झूठ बोलते हैं। इमाम साहब ने फ़रमाया, "अगर मैं झूठ बोलता हूँ तो झूठा आदमी कैसे क़ाज़ी बन सकता है और अगर सच कहता हूँ तब भी नहीं बन सकता।" मंसूर चुप हो गया। लेकिन उनको जेलख़ाने में बन्द करा दिया। जेलख़ाने में भी आप (रह॰) दीन का इल्म फैलाते रहे। आख़िरकार क़ैदख़ाने ही में आपको ज़हर दिया गया और उन्होंने इसी ज़हर के असर से सन् 150 हिजरी में सत्तर साल की उम्र में शहादत पाई। 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'। इमाम अबू-हनीफ़ा (रह॰) के जनाज़े में पचास हज़ार लोग शरीक थे। उनकी क़ब्र बग़दाद में है।

इमामे-आज़म अबू-हनीफ़ा (रह॰) को अल्लाह तआला ने बड़ी समझ दी थी। बड़े-बड़े मसलों को आसानी से हल कर लेते थे और बहुत ही समझदारी से जवाब देते थे। एक बार कुछ लोग एक जगह बैठे हुए थे कि इत्तिफ़ाक़ से एक साँप निकला और एक आदमी के ऊपर चढ़ गया। उसने घबराकर देखा तो वह दूसरे पर जा गिरा। उसने घबरा कर फेंका, वह तीसरे पर जा गिरा। तीसरे ने जो घबराकर फेंका तो चौथे पर गिरा। चौथे को साँप ने काट लिया और वह मर गया। लोग हैरान थे कि इस आदमी की मौत का इल्ज़ाम किस पर आएगा। इमाम अबू-हनीफ़ा (रह॰) ने फ़रमाया, पहले आदमी ने जब दूसरे पर साँप को फेंका और वह बच गया, तो पहले पर कोई इल्ज़ाम नहीं, इसी तरह दूसरे पर कोई इल्ज़ाम नहीं। तीसरे आदमी ने जब फेंका और चौथे पर गिरा। अब यह देखा जाए कि गिरते ही साँप ने डस लिया या कुछ देर के बाद। अगर गिरते ही डसा है तब तो यह तीसरा आदमी मुजरिम है और अगर कुछ देर के बाद डसा है तो चौथे आदमी की ख़ुद अपनी ग़फ़लत है, और किसी पर कोई इल्ज़ाम नहीं है। सबने इमाम साहब की बात बहुत पसन्द की और बहुत ख़ुश हुए।

❷ इमाम मालिक (रह॰)

हज़रत इमाम मालिक (रह॰) मदीना तैयिबा में रहते थे। इसलिए 'इमामे-दारुल-हिजरत' के लक़ब से मशहूर हैं। वे सन् 93 हिजरी में पैदा हुए थे। सुन्नते-रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इल्म और उसकी पैरवी में उनका बड़ा दर्जा था। 17 साल की उम्र में पढ़कर फ़ारिग़ हो गए थे। वे बड़ी शान-शौकतवाले थे। पढ़ने के ज़माने में तो बहुत ग़रीब थे। छत की कड़ियाँ बेच-बेचकर किताबें ख़रीदते थे, लेकिन बाद में अल्लाह तआला ने उनको ख़ुशहाल कर दिया। आप (रह॰) बड़े वक़ार और शान-शौकत के साथ दर्स देते थे। उनके बहुत-से शागिर्द हुए। शागिर्दों की तादाद 1300 से अधिक बताई गई है। इमाम शाफ़ई (रह॰) भी उन (रह॰) के शागिर्द हैं। ख़लीफ़ा हारून रशीद के दोनों बेटे भी उनके पास पढ़ने आते थे। इमाम मालिक तक़रीबन 62 साल तक लगातार पढ़ने-पढ़ाने और फ़तवे देने में मशग़ूल रहे। उनकी किताब 'मुवत्ता' बहुत मशहूर है। हदीस की किताबों में इसका दर्जा बहुत ऊँचा है। हज़रत शाह वली उल्लाह (रह॰) उसको हदीस की तमाम किताबों से अफ़ज़ल क़रार देते हैं। इमाम मालिक (रह॰) बड़े सख़ी थे। एक बार इमाम शाफ़ई (रह॰) के साथ वे अस्तबल में घोड़े देख रहे थे, हज़रत इमाम शाफ़ई (रह॰) ने कुछ घोड़ों की तारीफ़ की। उन्होंने अस्तबल के सारे घोड़े इमाम शाफ़ई (रह॰) को दे दिए। वे लिबास बहुत अच्छा

पहनते, क़ीमती कपड़े पहनते, इत्र इस्तेमाल फ़रमाते। अकसर सफ़ेद कपड़े पहनते। फ़रमाते थे, "जब अल्लाह ने मुझे दिया है तो मैं उसकी नेमत का इज़हार क्यों न करूँ।" हदीस बयान फ़रमाते तो पहले गुस्ल करते, पाक-साफ़ कपड़े पहनते, इत्र लगाते और वक़ार व जलाल के साथ मसनद पर बैठकर हदीस बयान फ़रमाते थे। उनके पास क़ीमती-से क़ीमती घोड़े थे। लेकिन कभी मदीने की गलियों में घोड़े पर सवार होकर नहीं निकले। फ़रमाते थे, जिस शहर में रसूले-करीम (सल्ल॰) का जिस्मे-ख़ाकी मदफ़ून हो, मुझे शर्म आती है कि मैं वहाँ की ज़मीन घोड़ों की टापों से रौंदूँ।

इमाम मालिक (रह॰) के किसी फ़तवे से नाराज़ होकर मदीने के हाकिम ने उनको क़ैद कर दिया और 70 कोड़े लगवाए, जिससे उनके दोनो हाथ मोढ़ों से ऐसे उतर गए कि फिर आप (रह॰) नमाज़ में हाथ नहीं बाँध सकते थे। 179 हिजरी में 86 साल की उम्र में इस दुनिया से रुख़सत हो गए। 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'।

❸ इमाम शाफ़ई (रह॰) (150 हिजरी-204 हिजरी)

इमाम शाफ़ई (रह॰) का नाम मुहम्मद-बिन-इदरीस और कुन्नियत 'अबू-अब्दुल्लाह' है। इमाम अबू-हनीफ़ा (रह॰) का जिस साल इन्तिक़ाल हुआ, उसी साल यानी 150 हिजरी में पैदा हुए। अभी छोटे ही थे कि बाप का साया सिर से उठ गया। बचपन ही से आलिमों की सोहबत में बैठते थे। सात साल की उम्र में क़ुरआन मजीद हिफ़्ज़ कर लिया था। बारह साल की उम्र में हदीस का इल्म हासिल किया और इमाम मालिक की किताब 'मुवत्ता' पूरी हिफ़्ज़ कर ली। तेरह साल की उम्र में इमाम मालिक की ख़िदमत में हाज़िर हुए और पूरी 'मुवत्ता' सुना दी। अरबी ज़बान में उनको बड़ी महारत थी। अल्लाह तआला ने उनको बहुत अच्छा हाफ़ज़ा दिया था।

इमाम मुहम्मद से इमाम अबू-हनीफ़ा (रह॰) की किताब 'औसत' पढ़ने के लिए ली और रात भर में पूरी किताब हिफ़्ज़ करके सुबह को वापस कर दी। वे (रह॰) पन्द्रह साल के थे कि फ़तवे देने लगे। इमाम अहमद-बिन-हम्बल (रह॰) फ़रमाते हैं, "जिसने भी क़लम और दवात को हाथ लगाया है, वह इमाम शाफ़ई (रह॰) का एहसानमन्द ज़रूर है।" उन (रह॰) की किताब 'किताबुल-उम्म' बहुत मशहूर है।

इल्मे-हदीस और फ़िक़्ह के साथ-साथ घुड़सवारी और नेज़ाबाज़ी में भी इमाम शाफ़ई

(रह॰) बड़ी महारत रखते थे। उनका निशाना कभी नहीं चूकता था। अकसर बीमार रहते, लेकिन तरह-तरह की बीमारियों के बावजूद तसनीफ़ पढ़ने-पढ़ाने, दर्सो-तदरीस में कभी फ़र्क़ न आने दिया।

ख़लीफ़ा मामून रशीद के ज़माने में सन् 204 हिजरी में जुमे के दिन 54 साल की उम्र में इन्तिक़ाल फ़रमाया। 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'। अल्लाह तआ़ला उनको करवट-करवट जन्नत नसीब करे। आमीन!

❹ इमाम अहमद-बिन-हम्बल (रह॰) (164 हिजरी-241 हिजरी)

नाम अहमद है। सन् 164 हिजरी में बग़दाद में पैदा हुए और सन् 241 हिजरी में बग़दाद ही में इन्तिक़ाल हुआ। बचपन ही में उन्होंने क़ुरआन मजीद हिफ़्ज़ कर लिया था। हदीस में बड़ा कमाल हासिल किया और 'इमामुल-मुहद्दिसीन' (मुहद्दिसों के इमाम) का लक़ब पाया। क़ुरआन और हदीस का गहरा इल्म रखते थे।

हदीस शरीफ़ को ख़ूब समझते थे। सोलह साल की उम्र में अपनी मशहूर किताब 'मुसनद अहमद' की तालीफ़ का काम शुरू कर दिया था और आख़िरी ज़िन्दगी तक इसी काम में मशग़ूल रहे। उन्होंने अपनी 'मुसनद' में इतनी हदीसें जमा कर दी हैं कि उस वक़्त तक किसी ने इतनी हदीसें जमा नहीं की थीं। खुद फ़रमाया था कि मैंने साढ़े सात लाख हदीसों में से मुन्तख़ब करके ये हदीसें जमा की हैं। अबू-ज़रआ (रह॰) फ़रमाते हैं कि इमाम अहमद (रह॰) को 10 लाख से ज़्यादा हदीसें ज़बानी याद थीं।

इमाम अहमद (रह॰) एक गोशानशीन बुजुर्ग थे। बड़े ही नेक और मुत्तक़ी थे। अकसर रोज़े से रहते थे। सादा ज़िन्दगी गुज़ारते थे, जो कुछ आता उसे ख़ैरात कर देते थे। एक मर्तबा हसन-बिन-अब्दुल अज़ीज़ ने तीस हज़ार रुपये भेजे और लिखा कि यह हलाल माल है। मगर उन्होंने बे-नियाज़ी से वे रुपये वापस कर दिए। सूखे टुकड़े भिगोकर सिरके या नमक से खाते और दीन का इल्म हासिल करते।

दीन की राह में इमाम अहमद (रह॰) को बहुत दुख झेलने पड़े। ख़लीफ़ा मामून के ज़माने में मोतज़िला ने 'ख़लके-क़ुरआन' की बहस छेड़ी। मामून भी क़ुरआन को मख़लूक़ समझता था और उसी की तबलीग़ करता था। मगर इमाम अहमद-बिन-हम्बल (रह॰) इस अक़ीदे का सख़्ती से इनकार फ़रमाते थे। गवर्नर ने उन (रह॰) को क़ैद करा दिया। मामून

के बाद मोअतसिम भी इसी अक़ीदे का क़ायल था। इमाम साहब को क़ैदख़ाने में इतने कोड़े मारे जाते कि वे (रह॰) बेहोश हो जाते। ख़लीफ़ा मोअतसिम ने जल्लादों से इतना पिटवाया कि उनकी पीठ और कंधों से ख़ून बहने लगा। वे हर कोड़े पर अल्लाह को याद करते और कलिमा पढ़ते रहे।

मोअतसिम के बाद 'मुतवक्किल' ख़लीफ़ा हुए तो वे इमाम अहमद (रह॰) के अक़ीदे के क़ायल हुए और इमाम साहब के साथ बड़ी इज़्ज़त और एहतिराम से पेश आए।

इमाम अहमद-बिन-हम्बल (रह॰) इमाम शाफ़ई (रह॰) के शागिर्द हैं और हदीस के सबसे मशहूर इमाम बुख़ारी (रह॰) इमाम अहमद-बिन-हम्बल (रह॰) के शागिर्द हैं।

इमाम अहमद (रह॰) 77 साल की उम्र में इस दुनिया से हमेशा के लिए रुख़सत हो गए। अल्लाह की रहमतें हों उन (रह॰) पर! उनके जनाज़े में लगभग दो लाख पचास हज़ार लोगों ने शिरकत की। अल्लाह तआला हमें भी उनके पीछे चलाए और दीन का ऐसा ही दर्द अता करे। आमीन!

शब्दार्थ और टिप्पणी

आलिम	=	विद्वान, जाननेवाला
फ़िक़्ह	=	धर्मशास्त्र
फ़ुक़हा	=	धर्मशास्त्री, फ़क़ीह का बहुवचन
अइम्मा	=	इमाम का बहुवचन, इमामों
इमामे-आज़म	=	सबसे बड़ा इमाम
लक़ब	=	उपाधि
इल्मे-दीन	=	धर्म का ज्ञान
हाकिम	=	अधिकारी
तसनीफ़	=	रचना
तबलीग़	=	बात पहुँचाना, धर्म-प्रचार

अभ्यास

(क) उत्तर दीजिए :

1. फ़िक़्ह से क्या मुराद है?
2. फ़ुक़हा किन हज़रात को कहते हैं?
3. मशहूर फ़ुक़हा कितने हैं और उनके क्या नाम हैं?
4. प्यारे नबी (सल्ल॰) के बाद इल्मे-दीन के मशहूर मराकिज़ कितने थे? उनमें किन सहाबा (रज़ि॰) को 'उलमा-ए-दीन का सरदार' माना जाता था?
5. इमाम अबू-हनीफ़ा (रह॰) के मशहूर शागिर्दों के नाम लिखिए।
6. इमाम मालिक (रह॰) हदीस का दर्स देते वक़्त क्या एहतिमाम फ़रमाते थे?
7. इमाम अहमद-बिन-हम्बल (रह॰) को गवर्नर ने क्यों गिरफ़्तार किया था?
8. इमाम शाफ़ई (रह॰) के हाफ़ज़े के बारे में आप क्या जानते हैं?

(ख) ख़ाली जगहों को भरिए :

1. कूफ़े में.............................की पैदाइश हुई।
2. हज़रत इमाम मालिक (रह॰) का इन्तिक़ाल..................................हिजरी में हुआ। इन्तिक़ाल के वक़्त उनकी उम्र 86 साल थी।
3. हज़रत शाफ़ई (रह॰) हदीस व फ़िक़्ह के साथ-साथ.....................और ....में भी बड़ी महारत रखते थे।
4. इमामे-आज़म अबू-हनीफ़ा (रह॰) के जनाज़े में..लोग शरीक थे।
5. ....इमाम शाफ़ई के उस्ताद थे।
6. इमाम मालिक (रह॰) के शागिर्दों की तादाद.................................से अधिक बताई गई है।
7. हदीस के सबसे मशहूर इमाम ' इमाम बुख़ारी' इमाम....................................के शागिर्द हैं।
8. इमाम मालिक की किताब...बहुत मशहूर है।
9. इमामुल-मुहद्दिसीन, इमाम...का लक़ब है।

(ग) उचित जोड़े लगाओ :

1.	इमाम अबू-हनीफ़ा (रह॰)	इमामे-दारुल हिजरत
2.	इमाम मालिक (रह॰)	नोमान-बिन-साबित
3.	इमाम शाफ़ई (रह॰)	इमामुल-मुहद्दिसीन
4.	इमाम अहमद-बिन-हम्बल (रह॰)	मुहम्मद-बिन-इदरीस

(घ) किसने कहा? लिखिए :

1. इल्मे-फ़िक़ह में सब लोग इमाम अबू-हनीफ़ा (रह॰) के बच्चे हैं।
2. अगर मैं झूठ बोलता हूँ तो झूठा आदमी कैसे क़ाज़ी बन सकता है? और सच कहता हूँ तो तब भी नहीं बन सकता।
3. जिस शहर में रसूले-करीम (सल्ल॰) का जिस्मे-ख़ाकी मदफ़ून हो, मुझे शर्म आती है कि मैं वहाँ की ज़मीन घोड़ों की टापों से रौंदूँ।
4. जिसने भी क़लम और दवात को हाथ लगाया है, वह इमाम शाफ़ई का एहसानमन्द ज़रूर है।

कुछ और काम

1. हज़रत इमाम अबू-हनीफ़ा के बारे में अपने उस्ताद से और ज़्यादा मालूमात हासिल कीजिए।

19

अह्ले-हदीस

चार इमामों की पैरवी करनेवालों के अलावा एक गरोह और है, इसको अह्ले-हदीस कहते हैं। अह्ले-हदीस किसी एक इमाम की पैरवी को सही नहीं समझते। इनका मसलक यह है कि जो लोग ख़ुद दीन का पूरा-पूरा इल्म रखते हों उनके लिए यह बात सही नहीं है कि वे किसी इमाम की तक़लीद करें, बल्कि वे ज़िन्दगी के हर मामले में क़ुरआन मजीद, हदीस और सहाबा (रज़ि॰) के अमल से हुक्म मालूम करें। और जो लोग क़ुरआन और सुन्नत का पूरा-पूरा इल्म नहीं रखते उनको आज़ादी है कि दीन के जिस आलिम की बात उनके दिल को लगे और जिसकी बात पर उनको इत्मीनान हो, उससे दीन की बात मालूम करें।

अह्ले-हदीस चूँकि हर हुक्म और हर मसला हदीस से मालूम करते हैं और किसी इमाम की तक़लीद नहीं करते, इसी लिए उनको 'अह्ले-हदीस' कहते हैं। हमारे नज़दीक ये सारे ही गरोह मुख़लिस हैं और सभी हक़ पर हैं। सब सच्चाई और ख़ुलूस के साथ यह चाहते हैं कि हर मामले में प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की ठीक-ठीक पैरवी करें और जहाँ तक हो सके दिलो-जान से सुन्नते-रसूल (सल्ल॰) पर चलें। उनके बीच ये छोटे-छोटे इख़्तिलाफ़ात सिर्फ़ इसलिए हैं कि ये सब दीन से मुहब्बत और प्यारे रसूल (सल्ल॰) से इन्तिहाई अक़ीदत की बिना पर समझ और ज़ेहन के मुताबिक़ ज़्यादा-से-ज़्यादा सुन्नत की पैरवी करना चाहते हैं और हर बात में आपके नक़्शे-क़दम पर चलना चाहते हैं और ज़ाहिर है कि सबकी समझ और सबका ज़ेहन बराबर नहीं हो सकता।

हम इन तमाम गरोहों से मुहब्बत करते हैं, न किसी को बुरा-भला कहते हैं, न किसी पर कोई तंज़ और एतिराज़ करते हैं और न ही किसी के मसलक की तहक़ीर करते हैं।

हक़ीक़त में ये तमाम गरोह इस्लाम से मुहब्बत रखते हैं और सब-के-सब पूरी ज़िन्दगी को इस्लामी तालीमात का सच्चा नमूना बनाना चाहते हैं। हमारे लिए सही तरीक़ा यही है

कि हम आपस के इन छोटे-छोटे इख़्तिलाफ़ात को बरदाश्त करें, एक-दूसरे के ख़िलाफ़ बहस और मुनाज़रा न करें। एक-दूसरे के ऐबों को कुरेदने के बजाय हर एक की ख़ूबियों पर निगाह रखें। सब मिल-जुलकर अल्लाह की बन्दगी करें, और 'हिज़्बुल्लाह' यानी अल्लाह की पार्टी बनकर बातिल को मिटाने और दीने-हक़ को क़ायम करने की कोशिश करें, ताकि दुनिया इस्लाम की बरकतों से मालामाल हो। हम अल्लाह के वफ़ादार बंदों में शामिल होकर दुनिया और आख़िरत में इनाम और इज़्ज़त पाएँ।

शब्दार्थ और टिप्पणी

तक़लीद	=	पैरवी करना, पीछे चलना, अनुकरण
मुख़लिस	=	निश्छल, विशुद्ध
अक़ीदत	=	भरोसा, श्रद्धा, आस्था
बातिल	=	झूठ, असत्य
दीने-हक़	=	सत्य-धर्म अर्थात् इस्लाम

अभ्यास

(क) उत्तर दीजिए :

1. अह्ले-हदीस का मसलक क्या है?
2. अह्ले-हदीस को 'अह्ले-हदीस' क्यों कहते हैं?
3. चारों फ़िक़्ही गरोहों और अह्ले-हदीस के दरमियान इख़्तिलाफ़ की वजह क्या है?
4. इन सब गरोहों के बारे में हमें क्या रवैया अपनाना चाहिए?

20

कुछ मशहूर मुहद्दिसीन

जिन बुज़ुर्गों ने इन्तिहाई मेहनत और कोशिश से प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की प्यारी-प्यारी हदीसें मालूम करके याद कीं, हदीसों को जमा करने, सही और ग़लत की तहक़ीक़ करने के लिए दूर-दराज़ के सफ़र किए, हदीसों के पढ़ने-पढ़ाने और हदीसों की किताबें तैयार करने में अपनी उम्रें गुज़ार दीं उन्हें मुहद्दिसीन कहते हैं। उन मुहद्दिसीन का हमपर बहुत बड़ा एहसान है। उन्हीं बुज़ुर्गों की सच्ची कोशिशों की बदौलत हदीसें हम तक पहुँची और आज पूरे इत्मीनान के साथ उनपर अमल करने की सहूलत हमें हासिल है। अल्लाह उन मुहद्दिसीन के दर्जे बुलन्द फ़रमाए और हमें भी हदीसों को समझने की और उनपर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन!

यूँ तो मुहद्दिसीन बहुत-से हैं और जिन मुहद्दिसीन ने अपने-अपने तरीक़े पर हदीस की किताबें तैयार की हैं उनकी तादाद भी बहुत ज़्यादा है। हम यहाँ सिर्फ़ उन छह मशहूर मुहद्दिसीन के मुख़्तसर हालात पढ़ेंगे, जिनकी छह किताबें बहुत मशहूर हैं : सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम, सुनने-अबू दाऊद, जामे-तिर्मिज़ी, सुनने-नसई, इब्ने-माजा। इन किताबों को 'सिहाह-सित्ता' यानी 'छह सही किताबें' कहते हैं।

❶ इमाम बुख़ारी (रह॰) (194 हि॰-256 हि॰)

इमाम बुख़ारी का नाम मुहम्मद-बिन-इसमाईल है। तेरह शव्वाल सन् 194 हिजरी में जुमे की नमाज़ के बाद बुख़ारा में आपका जन्म हुआ। बचपन ही में बाप का साया सिर से उठ गया। माँ ने बड़ी तवज्जोह और प्यार से उनकी तरबियत फ़रमाई। अभी बच्चे ही थे कि आँखें जाती रहीं। बहुत इलाज हुआ लेकिन कोई फ़ायदा न हुआ। उनकी माँ हर वक़्त उनके लिए दुआएँ करतीं और दुखी रहती थीं। एक रात को माँ ने ख़्वाब में हज़रत इबराहीम (अलैहिस्सलाम) को देखा। हज़रत इबराहीम (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया तुम्हारी दुआओं की बरकत से अल्लाह तआला ने तुम्हारे बेटे की आँखें रौशन कर दी हैं। सुबह को उठकर देखा

तो सचमुच इमाम बुख़ारी (रह०) की आँखें ठीक हो गई थीं।

ग्यारह साल की उम्र में तालीम से फ़ारिग़ हो गए थे। 16 साल की उम्र में हज़रत अब्दुल्लाह-बिन-मुबारक (रह०) और हज़रत वक़ीअ (रह०) की किताबें हिफ़्ज़ कर चुके थे। 18 साल की उम्र में उन्होंने मदीना मुनव्वरा का रुख़ किया और वहाँ चाँदनी रातों में रौज़ा-ए-नब्वी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास बैठकर अपनी पहली दो किताबें 'क़ज़ाया अस्सहाबा वत्ताबिईन' और 'अत्तारीखुल कुबरा' मुरत्तब फ़रमाईं।

अल्लाह तआला ने इमाम बुख़ारी (रह०) को ज़बरदस्त हाफ़िज़ा अता फ़रमाया था। उस्तादों से जो सुनते थे याद हो जाता था। बचपन ही में सत्तर हज़ार हदीसें याद थीं। उनकी सबसे ज़्यादा मशहूर किताब 'सहीह बुख़ारी' है, जो क़ुरआन मजीद के बाद सबसे ज़्यादा सही किताब मानी गई है। इमाम बुख़ारी (रह०) ख़ुद फ़रमाते थे कि, "मुझे एक लाख सहीह और दो लाख ग़ैर-सहीह हदीसें याद हैं। और मैंने अपनी किताब 'अलजामिउस्सहीह' को छह लाख हदीसों में से मुन्तख़ब किया है।"

अल्लाह तआला ने इमाम बुख़ारी (रह०) को दीन के साथ दुनिया की दौलत भी अता फ़रमाई थी। लेकिन उन्होंने कभी ऐशो-इशरत की ज़िन्दगी नहीं गुज़ारी। अपनी सारी दौलत अल्लाह की राह में ख़र्च की और दिल खोलकर ख़र्च की। रईसों और मालदारों से हमेशा बे-नियाज़ रहे।

एक बार इमाम बुख़ारी (रह०) बीमार पड़े तो हकीमों ने कहा : मालूम ऐसा होता है कि आप (रह०) सालन इस्तेमाल नहीं करते। इमाम साहब ने फ़रमाया : बेशक 40 साल हो गए हैं कि मुझे सालन खाने का इत्तिफ़ाक़ नहीं हुआ। उन्होंने ज़िन्दगी भर किसी की ग़ीबत नहीं की। उनकी बेहतरीन मसरूफ़ियत हदीसे-रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की ख़िदमत थी। इसी में उन्होंने अपनी उम्र गुज़ारी और 'अमीरुल-मोमिनीन-फ़िल-हदीस' यानी इल्मे-हदीस में तमाम मुसलमानों के सरदार का लक़ब पाया। आप (रह०) ने सन् 256 हिजरी में इन्तिक़ाल फ़रमाया। अल्लाह आप (रह०) पर रहम फ़रमाए और जन्नत में ऊँचे दर्जों से मालामाल करे और हमें भी इल्मे-हदीस (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का ऐसा ही शौक़ बख़्शे! आमीन!

❷ इमाम मुस्लिम (रह॰) (204 हि॰-261 हि॰)

इमाम मुस्लिम (रह॰) का नाम मुस्लिम-बिन-हज्जाज है और नीशापुर वतन है। सन् 204 हिजरी में नीशापुर ही में पैदा हुए। नीशापुर उस ज़माने में दीन के इल्म का मर्कज़ बना हुआ था। बड़े-बड़े इल्मवाले वहाँ मौजूद थे। इमाम मुस्लिम (रह॰) ने हदीस का इल्म हासिल करने के लिए दूर-दूर के सफ़र किए और हदीस में बड़ा नुमायाँ मक़ाम हासिल किया। वे बड़े ही नेक और ख़ुदा-तरस इनसान थे। ज़िन्दगी भर न कभी किसी को बुरा-भला कहा और न कभी किसी की ग़ीबत की। अपने उस्तादों का बेहद एहतिराम करते थे। बहुत ही बाअख़लाक़, इनसाफ़-पसन्द, ख़ाकसार और मुख़लिस थे। उन्होंने हदीस की बहुत-सी किताबें तैयार कीं। लेकिन उनकी सबसे मशहूर किताब 'अल-जामिउस्सहीउल-मुस्लिम' है, जिसमें उन्होंने वे हदीसें जमा की हैं जिनके सही होने पर उनके ज़माने के मुहद्दिसीन का इत्तिफ़ाक़ था। हदीस की किताबों में 'सहीह बुख़ारी' के बाद 'सहीह मुस्लिम' ही का दर्जा है। एक बार किसी ने एक हदीस मालूम की, इत्तिफ़ाक़ की बात वह हदीस आपको याद न आई। घर आए और हदीस की तलाश में लग गए। उनके पास छुहारों की टोकरी रखी हुई थी। हदीस तलाश करते रहे और छुहारे मुँह में डालते रहे। हदीस तलाश करने की धुन में उन्हें महसूस न हुआ और बहुत ज़्यादा छुहारे खा गए, इसी वजह से सन् 261 हिजरी में वफ़ात हुई। इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। नीशापुर के बाहर नसीराबाद में आपकी क़ब्र है।

❸ अबू-दाऊद (रह॰) (202 हि॰-275 हि॰)

अबू-दाऊद (रह॰) का नाम सुलैमान-बिन-अशअस है, लेकिन अपनी कुन्नियत 'अबू-दाऊद' ही से मशहूर हुए। सन् 202 हिजरी में अपने वतन सजिस्तान में पैदा हुए। इल्म हासिल करने के लिए दूर-दूर के सफ़र किए। ज़िन्दगी का बड़ा हिस्सा बग़दाद में गुज़ारा और वहीं रहकर, अपनी मशहूर किताब 'सुनने-अबी-दाऊद' तरतीब दी। बड़े ही नेक, इबादत गुज़ार और परहेज़गार इनसान थे। हज़रत मूसा-बिन-इबराहीम, जो आपके ही ज़माने के थे, फ़रमाया करते, "अबू-दाऊद दुनिया में हदीस के लिए और आख़िरत में जन्नत के लिए पैदा किए गए हैं।" अबू-दाऊद अपने दौर में हदीस के इमाम माने जाते थे। उन्होंने बहुत-सी किताबें तसनीफ़ कीं, जिनमें सबसे ज़्यादा मशहूर 'सुनने-अबी-दाऊद' है। पाँच लाख हदीसों

में से इन्तिख़ाब करके उन्होंने यह किताब तैयार की। इसमें चार हज़ार आठ सौ हदीसें हैं आलिमों ने इस किताब को 'सहीह बुख़ारी' और 'सहीह मुस्लिम' के बाद सबसे अफ़ज़ल क़रार दिया है। सन् 275 हिजरी में जुमे के दिन इस दुनिया से रुख़सत हुए। 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'।

❹ इमाम तिरमिज़ी (रह॰) (209 हि॰-279 हि॰)

इमाम तिरमिज़ी (रह॰) का नाम मुहम्मद-बिन-ईसा और वतन तिरमिज़ है और वही 209 हिजरी में पैदा हुए थे। इराक़ और हिजाज़ वग़ैरह दूर-दराज़ मुल्कों में इल्म हासिल करने के लिए घूमते रहे। इमाम बुख़ारी (रह॰) के होनहार शागिर्द थे और इमाम बुख़ारी (रह॰) उनकी क़ाबिलियत व फ़रमाँबरदारी पर फ़ख़्र करते थे। बड़े ही परहेज़गार और आबिद-ज़ाहिद थे। अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से अकसर रोते रहते थे। यहाँ तक की आँखें जाती रहीं। अल्लाह तआ़ला ने ग़ैर मामूली हाफ़िज़ा अता फ़रमाया था। जो कुछ एक बार सुन लेते याद हो जाता। हदीस के साथ-साथ फ़िक़ह और तफ़सीर में भी बड़ा मर्तबा है। बहुत-सी किताबें लिखीं। सबसे ज़्यादा मक़बूल और मशहूर किताब 'अलजामिउस्सहीह लित्तिरमिज़ी' है। मशहूर है कि जिस घर में 'अलजामिउस्सहीह लित्तिरमिज़ी' हो, मानो उस घर में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बोल रहे हैं। आपने सत्तर साल की उम्र पाई और उम्र का बेहतरीन हिस्सा हदीस की ख़िदमत में लगा दिया। सन् 279 हिजरी में आपने तिरमिज़ ही में इन्तिक़ाल फ़रमाया। 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'। अल्लाह तआ़ला उनके दर्जे बुलन्द फ़रमाए और हमें भी उनके नक़्शे-क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन!

❺ इमाम नसई (रह॰) (215 हि॰-303 हि॰)

इमाम नसई (रह॰) का नाम अहमद-बिन-शुऐब है और ख़ुरासान का मशहूर शहर 'नसा' वतन है। सन् 215 हिजरी में वहीं पैदाइश हुई और दिन-रात का बड़ा हिस्सा इबादत में गुज़ारते थे। अकसर रोज़े से रहते। कई हज किए। जिहाद का भी बड़ा शौक़ था। एक बार अमीरे-मिस्र के साथ जिहाद में शरीक होकर बड़ी बहादुरी और जुरअत दिखाई। बड़े ही सच बोलने वाले, निडर और बहादुर थे। इसी का नतीजा था कि एक बार फ़रमाया : मुझको अमीर मुआविया (रज़ि॰) की तारीफ़ में एक हदीस के सिवा कुछ नहीं मिला। यह सुनकर

अवाम भड़क उठे और आपको इतना मारा-पीटा कि हालत नाज़ुक हो गई। इसी हाल में घरवालों से फ़रमाया : मुझे मक्का ले चलो कि मेरा इन्तिक़ाल मक्का मुअज़्ज़मा में हो। आख़िरकार मक्का पहुँचाए गए और सन् 303 हिजरी में पीर के दिन वहीं इन्तिक़ाल फ़रमाया। सफ़ा-मरवा के बीच उनकी क़ब्र है। हदीस में पहले 'सुनन-कुबरा' मुरत्तब फ़रमाई, फिर अमीरे-वक़्त की फ़रमाइश पर उसमें से इन्तिख़ाब फ़रमा कर 'अस्सुनन लिलमुज्तबा' मुरत्तब फ़रमाई। यही किताब 'सुनने-नसई' के नाम से मशहूर है और 'सिहाहे-सित्ता' में शामिल है।

❻ इमाम इब्ने-माजा (रह०) (209 हि०-273 हि०)

इमाम इब्ने-माजा (रह०) का नाम मुहम्मद-बिन-यज़ीद है। माजा उनके वालिद का लक़ब था, इसी लिए इब्ने-माजा के नाम से मशहूर हुए। सन् 209 हिजरी में क़ज़वीन में पैदा हुए जो ईरान का मशहूर शहर है। उन्होंने हदीस का इल्म हासिल करने के लिए इराक़, बसरा, कूफ़ा, बग़दाद, मक्का, शाम और मिस्र वग़ैरह के सफ़र किए और बड़ी लगन से हदीस का इल्म हासिल किया और अल्लाह ने उनको इस मैदान में बड़ा कमाल बख़्शा। बड़े ही ज़हीन, दीनदार और साहिबे-फ़ज़्ल व कमाल थे। हाफ़िज़ा भी ग़ैर-मामूली पाया था। तफ़सीर और तारीख़ में भी किताबें तसनीफ़ कीं। लेकिन उनकी सबसे अहम और मशहूर किताब 'सुनने-इब्ने-माजा' है, जिसको मुहद्दिसीन ने 'सिहाहे-सित्ता' में शुमार फ़रमाया है।

रमज़ानुल मुबारक 273 हिजरी में पीर के दिन दुनिया से रुख़सत हुए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। इन्तिक़ाल के वक़्त उम्र 64 साल थी।

शब्दार्थ और टिप्पणी

तौफ़ीक़	=	अल्लाह की मेहरबानी, सुयोग
रौज़ा-ए-नबवी	=	नबी की क़ब्रगाह
हाफ़िज़ा	=	स्मरण-शक्ति, याददाश्त
बाअख़लाक़	=	सदाचारी, अच्छे अख़लाक़वाला

अभ्यास

(क) उत्तर दीजिए :

1. मुहद्दिसीन किन हज़रात को कहते हैं?
2. 'सिहाहे-सित्ता' कौन-सी किताबें हैं? उनके नाम बताइए।
3. इमाम बुख़ारी की पहली दो किताबें कौन-सी हैं? उन्होंने उन्हें कब और कहाँ मुरत्तब किया था
4. इमाम बुख़ारी (रह॰) का कोई वाक़िआ सुनाइए।
5. इमाम तिरमिज़ी (रह॰) किसके शागिर्द थे?
6. इमाम नसई (रह॰) कैसे थे?
7. इमाम इब्ने-माजा (रह॰) कब और कहाँ पैदा हुए?

(ख) ख़ाली जगहों को भरिए :

1. क़ुरआन-मजीद के बाद सहीह बुख़ारी सबसे ज़्यादा....................किताब मानी गई है।
2. अल्लाह तआ़ला ने इमाम तिरमिज़ी (रह॰) को ग़ैर मामूली.................अता फ़रमाया था।
3. इमाम.........................का हदीस के साथ फ़िक़्ह और तफ़सीर में भी बड़ा मर्तबा था।
4. इमाम बुख़ारी (रह॰) को बचपन ही में..................हदीसें याद थीं।
5. ....अपने दौर में हदीस के इमाम माने जाते थे।
6. इमाम.......................ने हदीस का इल्म हासिल करने के लिए इराक़, बसरा, कूफ़ा, बग़दाद मक्का, शाम और मिस्र वग़ैरह के सफ़र किए।

(ग) कॉलम 'अ' में मुहद्दिसीन के नाम और 'ब' में उनके अस्ल नाम और 'स' में उनका मक़ामे-पैदाइश और तारीख़े-वफ़ात दर्ज की गई है। कॉलम अ, ब और स के उचित जोड़े लगाइए :

(अ)	(ब)	(स)
1. इमाम बुख़ारी (रह॰)	मुहम्मद बिन-यज़ीद	ख़ुरासान का मशहूर शहर नसा पैदाइश 215 हिजरी वफ़ात 303 हिजरी
2. इमाम मुस्लिम (रह॰)	मुहम्मद-बिन-ईसा	बुख़ारा, पैदाइश 13 शव्वाल, 194 हिजरी, वफ़ात 256 हिजरी।

3. इमाम अबू-दाऊद (रह.)	मुहम्मद-बिन-इसमाईल	नीशापुर, पैदाइश 204 हिजरी, वफ़ात 261 हिजरी।
4. इमाम तिरमिज़ी (रह.)	मुस्लिम-बिन-हज्जाज	सजिस्तान, पैदाइश 202 हिजरी, वफ़ात 275 हिजरी।
5. इमाम नसई (रह.)	सुलैमान-बिन-अशअस	तिरमिज़, पैदाइश सन् 209 हिजरी, वफ़ात 279 हिजरी।
6. इमाम इब्ने-माजा (रह.)	अहमद-बिन-शुऐब	क़ज़वीन, पैदाइश 209 हिजरी, वफ़ात 273 हिजरी।

(घ) कॉलम 'अ' में अइम्मा-ए-हदीस के नाम कॉलम 'ब' में उनके अहम काम और कॉलम 'स' में उनकी मुरत्तब की हुई हदीसों की किताबों के नाम दिए गए हैं। उचित जोड़े लगाइए :

(अ)	(ब)	(स)
1. इमाम बुख़ारी (रह.)	चार हज़ार आठ सौ हदीसें	अल-जामिउस्सहीउल-मुस्लिम
2. इमाम मुस्लिम (रह.)	अमीरुल-मोमिनीन फ़िल-हदीस	सुनने-अबी दाऊद
3. इमाम अबू-दाऊद (रह.)	हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) के होनहार शागिर्द	अल जामिउस्सही लित्तिरमिज़ी
4. इमाम तिरमिज़ी (रह.)	सफ़ा-मरवा के दरमियान आप (रह.) की क़ब्र	सुनने-नसई
5. इमाम नसई (रह.)	तफ़सीर और तारीख़ में भी आप (रह.) ने किताबें तसनीफ़ कीं।	सुनने-इब्ने-माजा
6. इमाम इब्ने-माजा (रह.)	आप (रह.) ने अपनी किताब में वे हदीसें जमा कीं, जिनकी सेहत पर उनके ज़माने के मुहद्दिसीन का इत्तिफ़ाक़ था।	अल-जामिउस्सहीह

अल्लाह के प्यारे बन्दे

अल्लाह तआ़ला ने अपनी सच्ची किताब क़ुरआन मजीद में जगह-जगह अपने प्यारे बन्दों की तारीफ़ की है और एक-एक ख़ूबी खोल-खोलकर बयान की है। हदीस में भी प्यारे बन्दों की बहुत-सी ख़ूबियाँ बयान की गई हैं। सब तो नहीं, कुछ यहाँ हम बयान करते हैं—

1. अल्लाह के प्यारे बन्दे ज़मीन पर आजिज़ी के साथ दबे पाँव चलते हैं और जब बेसमझ लोग उनसे उलझना चाहते हैं तो कह देते हैं कि भाई हमारा सलाम है, हमसे न उलझो।
2. अल्लाह के प्यारे बन्दे रातों में अल्लाह के आगे सजदे करते हैं। नमाज़ों में खड़े रहते हैं और दुआएँ माँगते रहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! जहन्नम का अज़ाब हमसे दूर रखना, बेशक जहन्नम का अज़ाब बड़ा ही सख़्त है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।
3. अल्लाह के प्यारे बन्दे अल्लाह ही को अपना माबूद मानते हैं। अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को माबूद नहीं पुकारते। वे नाहक़ किसी की जान नहीं लेते और बेशर्मी की बातों से दूर रहते हैं।
4. अल्लाह के प्यारे बन्दे झूठी गवाहियाँ नहीं देते। वे झूठ के पास भी नहीं फटकते और जब कहीं बुरे काम देखते हैं तो शरीफ़ आदमियों की तरह गुज़र जाते हैं।
5. जब उन्हें अल्लाह की आयतें सुनाई जाती हैं तो दिल लगाकर सुनते हैं, असर लेते हैं और उनपर अमल करने की कोशिश करते हैं।
6. अल्लाह के प्यारे बन्दे दुआएँ माँगते रहते हैं कि ऐ अल्लाह! हमारी औरतों और बच्चों को हमारी आँखों की ठंडक बना दे और हमें नेक लोगों के लिए नमूना बना दे।
7. अल्लाह के प्यारे बन्दे पाबन्दी से नमाज़ अदा करते हैं। अपने माल में से माँगनेवाले फ़क़ीरों को भी और न माँगनेवाले ग़रीबों को भी देते हैं।
8. वे आख़िरत पर पक्का यक़ीन रखते हैं। अपने परवरदिगार के अज़ाब से डरते हैं।

9. वे अमानतदार होते हैं। अपने अहद के पाबन्द होते हैं। सच्ची गवाहियों पर जमे रहते हैं और अपनी नमाज़ों का पूरा-पूरा ख़याल रखते हैं।

10. वे अल्लाह की मुहब्बत में मुहताजों, यतीमों और क़ैदियों को खाना खिलाते हैं और उनसे बदले में कुछ नहीं चाहते।

11. वे एक-दूसरे के मददगार और ख़ैरख़्वाह होते हैं। वे अच्छे काम करने को कहते हैं और बुरे कामों से मना करते हैं। ठीक-ठीक नमाज़ पढ़ते हैं, ज़कात देते हैं और रसूल (सल्ल॰) के हुक्मों पर चलते हैं।

12. अल्लाह के प्यारे बन्दे बस वही हैं कि जब उनके सामने अल्लाह का ज़िक्र होता है तो उनके दिल दहल जाते हैं और जब उन्हें अल्लाह की आयतें सुनाई जाती हैं तो उनका ईमान और बढ़ जाता है। वे अपने परवरदिगार पर भरोसा करते हैं। नमाज़ क़ायम करते हैं और नेक कामों में ख़र्च करते हैं।

13. वे बिना देखे अपने परवरदिगार से डरते हैं और आख़िरत की घड़ी से लरज़ते रहते हैं।

14. अल्लाह के प्यारे बन्दे अल्लाह की राह में मिल-जुलकर और जमकर लड़ते हैं।

15. अल्लाह के प्यारे बन्दे पाक-साफ़ रहते हैं।

16. अल्लाह के प्यारे बन्दे इनसाफ़ क़ायम करते हैं।

17. अल्लाह के प्यारे बन्दे अल्लाह से मुहब्बत करते हैं। आपस में बड़े नर्म और कुफ़्र के मुक़ाबले में बड़े सख़्त होते हैं।

18. वे अपने रब से गुनाहों की माफ़ी माँगते रहते हैं। वे अल्लाह की इबादत में लगे रहते हैं। उसके गुण गाते हैं, रोज़े रखते हैं और नमाज़ें पढ़ते हैं। लोगों को नेकियों पर उभारते हैं। बुराइयों से रोकते हैं। अल्लाह की क़ायम की हुई हदों का पूरा-पूरा ख़याल रखते हैं।

ये तो अल्लाह के प्यारे बन्दों की वे ख़ूबियाँ हैं जो अल्लाह तआला ने क़ुरआन में बयान फ़रमाई हैं। अब हम अल्लाह के प्यारे बन्दों की वे ख़ूबियाँ पढ़ेंगे जो प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने बयान फ़रमाई हैं—

❶ अल्लाह का सबसे प्यारा बन्दा वह है जो अल्लाह की मख़लूक़ के साथ अच्छा सुलूक करे।

❷ अल्लाह का प्यारा बन्दा वह है जो दुनिया की मुहब्बत में गिरफ़्तार न हो, जिसका दिल ग़नी हो और जो छिप-छिपकर अपने रब की इबादत करता हो।

❸ मोमिन हर एक का प्यारा होता है। उस आदमी में कोई अच्छाई नहीं जो न दूसरों से मुहब्बत करता हो और न दूसरे उसे चाहते हों।

❹ एक आदमी प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आया और कहने लगा कि मुझे कोई ऐसा काम बता दीजिए कि मैं अल्लाह का प्यारा बन जाऊँ और लोगों का भी प्यारा बन जाऊँ। प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया "दुनिया की मुहब्बत से बचो, अल्लाह के प्यारे बन जाओगे। लोगों के माल और दौलत पर मत ललचाओ, लोगों के प्यारे बन जाओगे।"

❺ प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "क़ियामत के दिन वह आदमी सबसे ज़्यादा मुझसे नज़दीक होगा जो मुझपर सबसे ज़्यादा दुरूद पढ़ता हो।"

हर मुसलमान दिल से चाहता है कि वह अल्लाह का प्यारा बन्दा बन जाए।

हमें सोचते रहना चाहिए कि प्यारे बन्दों की कौन-कौन-सी ख़ूबियाँ हमारे अन्दर हैं और कौन-कौन-सी नहीं हैं। जो ख़ूबियाँ नहीं हैं, हमें चाहिए कि उन्हें पैदा करने की कोशिश करें।

शब्दार्थ और टिप्पणी

आजिज़ी	=	विनम्रता
ग़नी	=	सम्पन्न, संतुष्ट

अभ्यास

(क) उत्तर दीजिए :

1. अल्लाह के प्यारे बन्दों की जो ख़ूबियाँ क़ुरआन-मजीद में बयान हुई हैं, उनमें से पाँच ख़ूबियाँ लिखिए।
2. ज़मीन पर 'दबे पाँव' चलने का क्या मतलब है?

3. औरतों और बच्चों को आँखों की ठंडक बना देने का क्या मतलब है?

4. नमाज़ों का पूरा-पूरा ख़याल रखने का क्या मतलब है?

5. कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने का क्या बदला प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने बताया है?

6. अल्लाह के प्यारे बन्दे उससे क्या दुआएँ माँगते हैं?

7. बुरे काम देखकर अल्लाह के प्यारे बन्दे क्या रवैया इख़्तियार करते हैं?

8. अल्लाह के प्यारे बन्दे अपने माल को किस तरह ख़र्च करते हैं?

9. प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने उस शख़्स को क्या जवाब दिया, जिसने अल्लाह का प्यारा और बन्दों का प्यारा बन जाने के बारे में सवाल किया था?

(ख) ख़ाली जगहों को भरिए :

1. अल्लाह के प्यारे बन्दे अल्लाह ही को अपना..................................मानते हैं।

2. अल्लाह तआला का सबसे प्यारा बन्दा, वह है जो अल्लाह की मख़लूक़ के साथ अच्छा..... ....करे।

3. उस शख़्स में कोई...............................नहीं जो न दूसरों से मुहब्बत करता हो और न दूसरे उसे चाहते हों।

4. अल्लाह के प्यारे बन्दे तो बस वही हैं कि जब उनके सामने अल्लाह का ज़िक्र होता है तो उनके दिल.............................जाते हैं।

अच्छे अख़लाक़

प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "मैं इसलिए भेजा गया हूँ कि अच्छे अख़लाक़ की तकमील करूँ।" अच्छे अख़लाक़ ये हैं कि हम झूठ, ज़ुल्म, घमंड और हसद वग़ैरह जैसी बुराइयों से अपने दिल को पाक कर लें और सच्चाई, पाकदामनी, शर्म व हया, हमदर्दी, सब्र और एहसान जैसी ख़ूबियाँ अपने अन्दर पैदा करें।

हर काम का सलीक़ा सीखें। हर एक का हक़ अदा करें और हर एक के साथ नेक सुलूक करें। प्यारे रसूल तमाम दुनिया के इनसानों से ज़्यादा अच्छे अख़लाक़वाले थे। लोगों को अच्छे अख़लाक़ की तालीम देते थे। हमेशा सच बोलते थे। लोग आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को 'सादिक़' (सच्चा) कहते थे। आप (सल्ल॰) अमानत की हिफ़ाज़त फ़रमाते थे। लोग आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को 'अमीन' कहते थे। बेशर्मी और बेहयाई की बातों से दूर रहते थे।

फ़रमाते थे, "हया ईमान की शाख़ है।" यतीमों और बेवाओं के साथ नेक सुलूक करते थे। मेहमानों की ख़ातिर-तवाज़ो करते थे। हर एक का हक़ अदा करते थे। दुआ फ़रमाते रहते थे कि ऐ अल्लाह! मुझे अच्छे-से-अच्छे अख़लाक़ दे और बुरे अख़लाक़ से बचा ले।

अल्लाह तआला तमाम बुराइयों से पाक है। सारी अख़लाक़ी ख़ूबियाँ और भलाइयाँ उसी में हैं। हमको अल्लाह ने अपनी ज़मीन पर अपना ख़लीफ़ा बनाया। यहाँ की बहुत-सी चीज़ें हमारे क़ब्ज़े में दे दी हैं। इसलिए हमें भी चाहिए कि अपने अन्दर सारी अख़लाक़ी ख़ूबियाँ पैदा करें। अख़लाक़ी ख़ूबियाँ और हुक़ूक़ तो बहुत-से हैं। कुछ हम पढ़ भी चुके हैं, कुछ अब पढ़ेंगे—

❶ सच्चाई

सच्चाई तमाम अख़लाक़ी ख़ूबियों की जड़ है। अल्लाह के प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कभी झूठ के क़रीब भी नहीं फटकते थे। सच में दोनों जहान की कामयाबी है, दुनिया में भी लोग सच्चे आदमी का एतिबार करते हैं। इज़्ज़त की नज़र से देखते हैं और आख़िरत में भी सच्चे लोग नजात पाएँगे। सच बोलनेवाला तमाम बुराइयों से बच जाता है।

हम मुसलमान हैं, अल्लाह और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर सच्चे दिल से ईमान लाए हैं। इस्लाम सच्चा दीन है। हमारे रसूल सच्चे थे। हमारा रब सच्चा है। उसके वादे सच्चे हैं। हम हमेशा सच बोलते हैं। जो दिल में होता है वही ज़बान पर होता है। जो कहते हैं वही करते हैं। कभी किसी के डर से सच्ची बात नहीं छिपाते। कभी सच्ची बात कहने से नहीं झिझकते। कभी झूठी गवाही नहीं देते। चाहे जान ही क्यों न चली जाए, कभी झूठ नहीं बोलते। सच्चे आदमी का दोनों जहान में एतिबार है।

❷ शर्म व हया

प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "हया पूरी की पूरी भलाई है।" हयादार आदमी बुरी बातों से इस तरह घबराता है जैसे मछली खुश्की से घबराती है। बेहया आदमी किसी बुराई से नहीं शर्माता। प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सबसे ज़्यादा हयादार और शर्मीले थे। बचपन में भी आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बहुत ही शर्मीले थे और नबी होने के बाद भी आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का यही हाल था।

प्यारे रसूल (सल्ल०) पर्दे में रहनेवाली लड़कियों से भी ज़्यादा शर्मीले थे।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "ईमान की सत्तर से भी ज़्यादा शाख़ें हैं और हया भी ईमान की शाख़ है।" आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह भी फ़रमाया, "नंगे न हुआ करो, क्योंकि तुम्हारे साथ हर वक़्त फ़रिश्ते रहते हैं। बस वे पेशाब-पाख़ाना वग़ैरह के वक़्त अलग हो जाते हैं, उनसे शर्म करो।" प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "शर्म व हया से इनसान को भलाई ही पहुँचती है।" क़ुरआन मजीद में है, "...अल्लाह तआला बेहयाई और गुनाहों के कामों से मना फ़रमाता है।" अगर

आदमी में हया न हो तो फिर वह जो चाहे कर सकता है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "अगर तुममें शर्म व हया नहीं तो जो चाहो करो।"

हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआला सबसे ज़्यादा ग़ैरतमन्द और हयावाला है। अल्लाह ने तमाम बेशर्मी की बातों को हराम किया है। हम तमाम बेशर्मी की बातों से दूर रहते हैं।

बेशर्मी की बातें करनेवालों से मेल-जोल नहीं रखते। नंगे नहीं होते। अगर कभी इत्तिफ़ाक़ से बुरी जगह से गुज़र हो जाए तो आँखें नीची किए हुए शर्म और वक़ार के साथ गुज़र जाते हैं।

❸ मुहब्बत और हमदर्दी

मुसलमान मुहब्बत का पुतला होता है। हर एक के साथ मुहब्बत और हमदर्दी करता है। प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, ''दीन बस मुहब्बत, ख़ैरख़्वाही और हमदर्दी का नाम है।''

मुसलमान हर एक का ख़ैरख़्वाह होता है। हर एक के साथ हमदर्दी करता है। उसको अल्लाह और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से मुहब्बत होती है। नेकी और भलाई से मुहब्बत होती है। नेक और भले लोगों से हमदर्दी और मुहब्बत होती है। हर एक के दुख-दर्द में शरीक होता है। सारे इनसान एक माँ-बाप की औलाद हैं। आपस में भाई-भाई हैं।

मुसलमान हर एक के साथ भाइयों जैसा सुलूक करता है। प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "जो लोगों पर रहम नहीं करता, अल्लाह उसपर रहम नहीं करता।"

बेवाओं, मुहताजों, यतीमों, माज़ूरों और पड़ोसियों के साथ अच्छा बरताव, मेहमानों, रिश्तेदारों और औलाद के साथ अच्छा सुलूक और हमदर्दी ग़रज़ प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने दुनिया भर का हमदर्द बनने की तालीम दी है। सबके साथ अच्छा सुलूक करना सिखाया है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पाकीज़ा तालीम ही का असर था कि सहाबा (रज़ि॰) हर एक से मुहब्बत करते और हर एक के साथ हमदर्दी और नेक सुलूक से पेश आते थे। खुद भूखे रहकर दूसरों को खिलाते, खुद तकलीफ़ उठाकर दूसरों को आराम पहुँचाते थे।

इसी लिए हर एक उनको चाहता था। मुसलमान तो मुसलमान ग़ैर-मुस्लिम भी अपनों से ज़्यादा उन लोगों को चाहते थे। सच फ़रमाया अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने—"दीन बस मुहब्बत, ख़ैरख़्वाही और हमदर्दी ही का नाम है।"

शब्दार्थ और टिप्पणी

अख़लाक़	=	शिष्टाचार, नैतिकता
तकमील	=	पूर्ति, पूर्णता
ख़लीफ़ा	=	प्रतिनिधि
एतिबार	=	विश्वास, यक़ीन, भरोसा
नजात	=	मुक्ति, मोक्ष
हया	=	शर्म

अभ्यास

(क) उत्तर दीजिए :

1. अच्छे अख़लाक़ क्या हैं?
2. "सच में दोनों जहान की कामयाबी है।" कैसे?
3. प्यारे रसूल (सल्ल.) ने शर्म व हया के बारे में क्या बातें फ़रमाई हैं?
4. "मुसलमान हर एक का ख़ैरख़्वाह होता है।" स्पष्ट कीजिए।

(ख) ख़ाली जगहों को भरिए :

1. मैं इसलिए भेजा गया हूँ कि अच्छे अख़लाक़ की..................कर दूँ।
2. हया ईमान की......................है।
3. सच्चाई तमाम अख़लाक़ी ख़ूबियों की..................है।
4. सच्चे आदमी का दोनों जहान में......................है।
5. अगर कभी इत्तिफ़ाक़ से बुरी जगह से गुज़र हो जाए तो आँखें नीची किए हुए शर्म और.... ....के साथ गुज़र जाते हैं।

दुआ

करम है तेरा, ज़िन्दगी देनेवाले!
मुझे ख़ल्क पर बरतरी देनेवाले!

मेरे फ़िक्रो-एहसास को जगमगा दे
सितारों को ताबिन्दगी देनेवाले!

मिरे दिल को भी नूरे-ईमाँ से भर दे
महो-मेहर को रौशनी देनेवाले!

मेरा मक़्सदे-ज़िन्दगी भी हसीं हो
गुलो-गुंचे को ताज़गी देनेवाले!

गुलामी से बातिल की मुझको बचाना
पहाड़ों को शाने-ख़ुदी देनेवाले!

मुहम्मद का सच्चा फ़िदाई बना दे
मुझे सबसे अच्छा नबी देनेवाले!

तलबगार हूँ मैं तेरी ही रज़ा का
अलम देनेवाले, ख़ुशी देनेवाले!

● अबुल-मुजाहिद ज़ाहि